धनकुबेर कारनेगी

लेखक :—

श्री अशर्फी मिश्र बी० ए०

हिन्दी-पुस्तक एजेन्सीमाला —४१

धनकुवेर कारनेगी

लेखक—

श्री अशर्फी मिश्र

प्रकाशक—

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
१२६, हरिसन रोड, कलकत्ता

प्रथमबार २०००] १९२४ [मूल्य १।) रु०

प्रकाशक—
बैजनाथ केडिया
प्रोप्राइटर :—
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
१२६ हरिसन रोड,
कलकत्ता।

मुद्रक—
किशोरीलाल केडिया,
वणिक् प्रेस,
१, सरकार लेन, कलकत्ता।

निवेदन

संसारमें उन्नति करनेका मूलमंत्र है 'महत्त्वाकांक्षा'। महत्त्वाकांक्षी होना ही सफलताकी तरफ बढ़ना है। संसारमें जितने महापुरुष हुए हैं, सबकी सफलताका यही मूलमंत्र रहा है।

धनकुबेर कारनेगीके जीवन और उनके प्रत्येक कार्यसे यही शिक्षा मिलती है कि एक ग़रीब मजदूरके घरमें पैदा होकर भी जिस आश्चर्यजनक ढंगसे वीर परिश्रमीने सफलता प्राप्त की वह प्रत्येक नवयुवकके लिये अनुकरणीय है।

जहां यह चरित्रनायक अपने परिश्रम अध्यवसाय और महत्त्वाकांक्षासे दरिद्रसे धनी हुआ और नवयुवकोंके लिये एक आदर्श छोड़ गया वहां धनी मानी सज्जनोंके लिये भी "धन" और "दान" के सदुपयोगका आदर्श छोड़ गया। धन कमाना तो मुश्किल काम है ही परन्तु धनवान होकर धनका सदुपयोग करना बहुत ही मुश्किल है।

इस चरित्रसे जहां नवयुवकोंको शिक्षा मिलती है वहां हमारे भारतके धनी मानी सज्जनोंको भी शिक्षा मिलती है। कारनेगीके जीवनसे धनके उपयोगका जो उदाहरण मिलता है, वह अनुकरणीय है।

इन्हीं गुणोंपर मुग्ध होकर हम अपने प्रेमी पाठकोंके सामने इस आदर्श जीवनीको रखनेके लिये बाध्य हुए हैं। और आशा करते हैं कि इस जीवनीसे प्रत्येक मनुष्य शिक्षा ग्रहण करेगा।

भवदीय—

प्रकाशक

हिन्दी पुस्तक एजेन्सीमाला—४२

चरित्र चिन्तन

इस पुस्तकमें नवयुवकोंको अपना चरित्र आदर्श बनानेकी सुगम रीति बतायी गयी है।

हिन्दी साहित्यमें 'जीवनियों' की बड़ी कमी है। और खासकर वैसे जीवनचरित्रोंका तो एक प्रकारसे टोटा ही है जिनमें उन वीर पुरुषोंकी आत्मकहानी कही गई हो जिन्होंने गरीबोंके यहां जन्म लेकर अपने पराक्रम, अपनी बुद्धि, अपनी ईमानदारी और दयानतदारीसे ऊंचेसे भी ऊंचा दरजा पाया हो। धनकुवेर कारनेगी एक वैसे ही महापुरुष थे, उन्होंने एक गरीब जुलाहेके यहां जन्म लेकर अपने हाथों इतना धन कमाया कि नई पुरानी दोनों दुनियांमें एक बड़ेसे भी बड़ा अमीर कहलाने लगे। यों तो सभी कमाते हैं और अपना तथा अपने बालबच्चोंका पेट पालनेकी कोशिश करते हैं। पर ऐसे कितने हैं जो अपने कमाये धनका सद्व्यवहार करते हैं, दीन दुखियोंकी मदद करते हैं और संसारसे अज्ञान-अन्धकारको दूर करने और सत्यका प्रकाश फैलानेका यत्न करते हैं? कारनेगी उन्हीं महानुभावोंमेंसे एक हैं।

यह अत्यन्त आवश्यक है कि ऐसे लोगोंकी जीवनी हमारे बच्चों तथा नवयुवकोंके सामने रखी जाय। आजकल चारों ओरसे आवाज आ रही है कि हिन्दुस्तानमें नये नये रोजगार-धन्धे खड़े किये जायं, देशमें धनागम हो और यहांसे दरिद्रता दूर भगाई जाय। हमलोग सब कोई यही चाहते हैं कि हमारे बच्चे कुछ ऐसा रोजगार करें कि जिससे उनके लिये रोटीका सवाल हल हो जाय। शिक्षा ऐसी दी जाय कि पेट पोसनेके

लिये दफ्तरों और आफिसोंकी खाक न छाननी पड़े, अखबारोंके विज्ञापनों-की ओर चातककी तरह टकटकी न लगानी पड़े। इसी उद्देश्यसे लोग रंजमें आकर कहने लगे हैं कि वकालत न करो, सरकारी स्कूल कालिजोंमें न पढ़ो, 'गुलामखानों' में डिग्री हासिल करने मत जाओ। बात तो ठीक है, पर मर्जकी सच्ची दवा कौन देता है? वैसे हकीम तो नजर नहीं आते। रोगका निदान वैद्यराज भले ही कर दें, पर नुस्खा कहां है? हमारे घरोंमें रोजगार-धन्धोंकी कहां चर्चा होती है? मा,बाप कब लड़कोंके सामने वैसा आदर्श रखते हैं। वहां तो यही कहा जाता है कि डिप्टी बनो और न हो सको तो शरिश्तेदार तो भी बन जाओ। आपके पास वह साहित्य कहां है कि जिसको पढ़कर बालकों वा नवयुवकोंके दिलमें रोजगार खड़ा करने और खम ठोंककर नाकामयाबीके साथ लड़ जानेका मनसूबा बंधे। यहां तो 'घरकी आधी भली पर परदेशकी समूची न भली' का पाठ पढ़ाया जाता है। मेरा तो विचार है कि हिन्दी क्या, देशके सभी लेखक इस ओर ध्यान दें। देशी भाषाओंमें वैसी किताबोंका ढेर लगा दें जिनको पढ़कर नवयुवकोंके दिलोंमें उत्साह आवे, मुसीबतोंसे लड़नेकी ताकत पैदा हो; हमारे नवयुवक आलसी बनकर सुखकी सेज खोजनेकी लालसा मिटाकर, मुश्किलोंका सामना करने—उनसे लड़भिड़कर कामयाबी हासिल करनेसे जो अपूर्व अलौकिक आनन्द मिलता है, उसकी खोजमें निकल पड़ें। जरू-रत तो इस बातकी है कि देशमें एक नई धारा बहा दी जाय, एक नई हवा चला दी जाय, लोगोंके मनसे सहज-सन्तोषकी बात हटाकर विकट-लालसाका बीज बो दिया जाय। इसके लिये एक नया साहित्य खड़ा करना पड़ेगा; उपन्यासों तथा श्रृंगाररस प्रधान काव्योंके श्रोतको कुछ

दिनोंतक थांभ रखना होगा। इस साहित्यको देश-विदेशके महानुभावोंकी शूरता-वीरता भरी कहानियोंसे सजाना होगा; इस साहित्यको देश देशके वाणिज्य-व्यापारके वर्णनसे सुशोभित करना होगा, इस साहित्यका खजाना उद्योगधन्धोंकी किताबोंसे भर देना होगा। तब कहीं देशके नवयुवकोंके मनमें वे विचार, वे लालसायें उत्पन्न होंगी जिनको पूरा करनेके लिये कठिनसे भी कठिन श्रमसाध्य उद्योगपर तुल जानेको वे हमेशा तैयार रहेंगे।

पं० अशर्फी मिश्रके इस उद्योगको—इस कारनेगी-चारित्रचित्रणको—मैं इसी नजरसे देखता हूं। आशा करता हूं यह एक नया जमाना खड़ा करेगा। आशा करता हूं हिन्दीके नवयुवक लेखक किस्से कहानियोंसे मुंह मोड़ेंगे और ऐसी ऐसी किताबें लिखेंगे जिससे लोगोंमें उद्योगधन्धोंकी बान लग जायगी, जिससे कि लोग मेहनत करनेवालोंको नफरतकी निगाहसे देखना भूल जायंगे और परिश्रम करना तथा अपने हाथों अपनी रोटी कमाना ही जीवनका मुख्य उद्देश्य समझेंगे। क्या वे दिन देखनेको मिलेंगे? देखूं, साहित्यिक क्या जवाब देते हैं?

राधाकृष्ण झा

एन्ड्रू कारनेगी

Engraved & Printed at the Banik Press, Cal.

धनकुवेर कारनेगी

प्रथम परिच्छेद
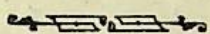
वंशपरिचय

अमेरिकाके प्रसिद्ध धनकुवेर एन्ड्रू कारनेगीका जन्म स्काटलैण्डके डनफरलिन नामक नगरमें २५ वीं नवम्बर सन् १८३५ ई० को हुआ था। इनके पिता विलियम कारनेगी जुलाहेका काम करते थे। यद्यपि विलियमकी आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं थी, पर चरित्र-बलके कारण अपने अड़ोस-पड़ोसके लोगोंपर उनकी वड़ी धाक थी। कारनेगीके पितामहका नाम भी एन्ड्रू कारनेगी था और चरित्रनायकका नामकरण पितामहके नामके सदृश ही किया गया।

कारनेगीके पितामह अपने मृदुल स्वभाव और अदम्य उत्साहके कारण अपने जिलेमें खूब प्रसिद्ध थे। वे अपने समयमें हंसोड़ोंके सरदार गिने जाते थे। आप दिल्लगीबाज भी खूब थे। एकवार ७५ वर्षकी उम्रमें उन्होंने जाड़ेके दिनोंमें भूतका स्वांग बनाकर अपने पड़ोसकी एक बुढ़ियाको डराया था।

बुढ़िया पहले तो डरी, पर थोड़ी देर सोचनेपर उसने कहा—"अरे! यह तो एन्ड्रू कारनेगी है।"

कारनेगीमें अपने पितामहके बहुतसे गुण पाये जाते थे। इन्होंने अपने आत्मचरितमें इस बातको स्वीकार किया है कि उनमें जो कुछ आशावादिता और विपत्तिमें भी हंसमुख बने रहनेकी शक्ति थी, वह उन्हें अपने पितामहसे ही प्राप्त हुई थी। सर्वदा हंसमुख बना रहना एक दुर्लभ गुण है। नवयुवकोंको इस गुणको प्राप्त करनेकी निरन्तर चेष्टा करनी चाहिये। कारनेगीके शब्दोंमें यदि सम्भव हो तो चिन्ताको हंसी-खेलमें ही उड़ा डालना चाहिये। हां, कोई ऐसा कार्य्य नहीं करना चाहिये, जिससे आत्म-भर्त्सना सहनी पड़े। हमलोगोंके हृदयमें जिस अन्तरात्माका निवास है, उसे कभी धोखा नहीं दिया जा सकता। अतएव कविवर बर्नके शब्दोंमें हमें अपने जीवनमें इस अमूल्य नियमको सर्वदा स्मरण रखना चाहिये कि "हमें और किसीसे डरनेकी कोई आवश्यकता नहीं है, केवल आत्म-भर्त्सनासे बचे रहनेका उद्योग करते रहना चाहिये।" बालक कारनेगीने इसी आदर्शको अपने जीवनके उषाकालमें ग्रहण किया था।

कारनेगीके नाना टामस मारिसन भी एक प्रसिद्ध व्यक्ति थे। वे 'रजिस्टर' नामक पत्रके सम्पादक विलियम कोबेटके मित्र थे और उनके पत्रमें बराबर लेख लिखा करते थे। वे अपने समयके प्रसिद्ध वक्ता भी थे। उन्होंने प्रीकर्सर (Precursor) नामक एक स्वतन्त्र विचारका अपना पत्र भी निकाला था और

औद्योगिक शिक्षापर एक पुस्तिका प्रकाशित की थी, जिसमें उन्होंने लिखा था—"ईश्वरको धन्यवाद है कि मैंने अपनी युवावस्थामें जूता बनाने और मरम्मत करनेका काम सीखा था।" कोवेटने सन् १८३३ ई०में अपने 'रजिस्टर' में उस पुस्तिकाको प्रकाशित करते हुए बड़ी तारीफ की थी। इस प्रकार कारनेगी मातृपक्ष और पितृपक्ष दोनों ही पक्षोंके लेखक, वक्ता और विचारशील थे।

टामस मारिसन प्रसिद्ध वक्ता, राजनीतिज्ञ और अपने जिलेके उग्र राजनीतिक दलके नेता थे। इनकी प्रसिद्धि दूर दूरतक थी। अमेरिकामें कारनेगीके ऐश्वर्य्यपूर्ण दिनोंमें बहुतसे सज्जन टामस मारिसनके नातीके नाते इनसे मिलने आया करते थे। क्लीवलैंड और पिट्सवर्ग रेलरोड कम्पनीके प्रेसिडेंट मि० फारमरने एक दिन कारनेगीसे कहा था—"हमने जो कुछ सीखा है, सब आपके नाना टामस मारिसनकी कृपाका फल है।" डनफरलिनके प्रसिद्ध इतिहासकार इबेनजर हैन्डरसनने भी स्वीकार किया है कि टामस मारिसनके अधीन नौकरी करनेके कारण ही वह अपनी उन्नति करनेमें समर्थ हुआ था।

एकबार कारनेगीने अमेरिकाके सेन्ट एन्ड्रूज हालमें 'होमरूल' पर व्याख्यान दिया था। एक दर्शकने उस व्याख्यानकी चर्चा करते हुए ग्लासगो समाचारपत्रमें लिखा था कि कारनेगीकी आकृति, स्वभाव, चलना-फिरना, सब टामस मारिसनसे मिलता-जुलता था। २७ वर्षकी अवस्थामें जब कारनेगी अमेरिकासे

डनफरलिन लौटे थे तो उनके मामा वेली मारिसनने उन्हें देख-कर आंखोंमें आंसू भरकर कहा था—"तुम्हें देखकर मुझे अपने पिताका स्मरण हो आता है।" यथार्थमें कारनेगीकी आकृति बहुत कुछ अपने नानासे मिलती-जुलती थी। कारनेगीकी मां भी यह बात उनसे कहा करती थीं। इस बातको तो लोग कबूल करते हैं कि अपने पूर्व पुरुषोंका स्वभाव उनकी सन्ततिमें पाया जा सकता है, पर आकृति, रहन-सहन, चाल-ढालमें भी वंशानुगत हो सकता है, यह कारनेगीके सम्बन्धमें एक विचित्र घटना है।

मारिसनने एडिनवर्गनिवासी मिस हौजसे विवाह किया था। मिस हौज सुशिक्षिता और अच्छे स्वभावकी स्त्री थी। उस समय मारिसन चमड़ेका कारबार करते थे। प्रसिद्ध वाटरलूके युद्धके बाद उनकी स्थिति बिगड़ गयी थी और कार-नेगीके मामा वेली मारिसनको भी विपत्तिपूर्ण दिनोंका सामना करना पड़ा।

कारनेगीकी माता वेली मारिसनसे छोटी थीं। अपनी माताके सभी गुण उनमें विद्यमान थे। अपनी माताके सम्बन्धमें कारनेगीने अपने आत्मचरितमें लिखा है—"उन्हें यथार्थमें कोई नहीं जान सका। मैं उनके चरित्रको अत्यन्त पवित्र समझकर उनका ज्ञान केवल स्वयं रखना चाहता हूं, दूसरोंको नहीं जानने देने चाहता। मेरे पिताकी मृत्युके बाद वही मेरा सर्वस्व थीं।" कारनेगीने अपनी प्रथम पुस्तक "An American four-in Hand in Great Britain" अपनी माताको समर्पित

करते हुए लिखा है—"मेरी प्यारी वीर माताको समर्पित"। उपरोक्त घटनासे चरित्रनायककी अपूर्व मातृभक्ति सूचित होती है।

कारनेगीके जन्मस्थानका भी उनके जीवनपर बड़ा प्रभाव पड़ा था। किसी प्रसिद्ध स्थानमें जन्म ग्रहण करनेसे ही उस स्थानका महत्व बालकके चित्तपर अंकित होजाता है और उसके भविष्य-जीवनका निर्माण बहुत कुछ उस परिस्थितिपर निर्भर करता है। रस्किनने ठीक ही कहा है कि एडिनवर्गमें उत्पन्न होनेवाले प्रत्येक मेधावी बालकपर वहांके प्रसिद्ध किलेका प्रभाव पड़ता है। डनफरलिनमें भी वहांके प्रसिद्ध गिरजेका—स्काटलैण्डके वेस्टमिनिस्टरका महत्व वहांके बालकोंके चित्तपर अंकित हुआ करता है। इस प्रसिद्ध गिरजे-को सन् १०७० ई० में मालकिम कैनमोर और कीन मार-गैरेटने स्थापित किया था। अबतक उस गिरजेका ध्वंसावशेष मौजूद है। स्काटलैण्डके प्रसिद्ध नरवीर राबर्ट ब्रूसकी समाधि गिरजेके मध्यभागमें स्थित है। सेंट मारगैरेट तथा अन्य राजाओंकी कबरें भी आस-पासमें स्थित हैं। ये वैभव डनफरलिनके उन ऐश्वर्यमय दिनोंके सूचक हैं, जब वह स्काट-लैण्डकी राजनीतिक और धार्मिक राजधानी था।

द्वितीय परिच्छेद

जीवनका उषाकाल

डनफरलिनकी प्राकृतिक और ऐतिहासिक गरिमाने बालक कारनेगीके जीवनपर गहरा प्रभाव डाला। इस प्रकारकी परिस्थिति में लालित-पालित होनेसे ही बालक प्रत्येक श्वास-प्रश्वासके साथ कविता और Romance को ग्रहण करता है और अपने चतुर्दिक परिदर्शनसे ही उसके मनमें ऐतिहासिक घटनाओंका जीता-जागता चित्र अंकित हो जाता है। बालकपनमें कारनेगीके सामने इस प्रकार प्राकृतिक शोभापूर्ण ऐतिहासिक चिह्न मौजूद था। इसकी मधुर स्मृति कारनेगीको सर्वदा बनी रही। डनफरलिनके किसी बालकके मनसे गिरजा, राजप्रासाद और तराइयोंका मनोहर दृश्य मिट नहीं सकता।

कारनेगीके पिताकी आर्थिक अवस्था कुछ सुधरनेपर वे तंग मकानको छोड़कर रीडपार्कके एक बड़े मकानमें चले आये। नीचेके तल्लेमें करघे गाड़ दिये गये और ऊपरके कमरोंमें कारनेगीका परिवार रहने लगा। कारनेगीने सबसे पहले इसी मकानमें अमेरिकाका एक मानचित्र देखा था। कौन जानता था कि स्काटलैण्डके एक जुलाहेका यही लड़का अमेरिकामें जाकर प्रसिद्ध धनकुबेर बन जायगा! इस मानचित्रमें चरित्र-

नायकके माता-पिता, चचा विलियम और चाची एटकिन, सभी मिलकर पिट्सवर्ग ढूंढ़ रहे थे और नियेग्रा जलप्रपातको दिखला रहे थे। कुछ दिनोंके बाद ही कारनेगीके चाची और चचाने अमेरिकाके लिये प्रस्थान किया।

लड़कपनमें ही पिताके निर्भीक आचरणका बालक कारनेगी-पर बड़ा प्रभाव पड़ा था। 'कार्नला' (Corn Law)के आन्दो-लनमें कारनेगीके माता और पिताने बड़ा भाग लिया था। एक दिन एक बहुत बड़ा गैर कानूनी झंडा कारनेगीके घरमें छिपाकर रखा गया था। पीछे उस झंडेको जुलूसके साथ बड़े धूमधामसे नगरमें निकाला गया। कार्नलाके विरुद्ध कारनेगीके पिता, मामा वगैरहने जोरदार वक्तृताएं दीं। शहरभरमें खलबली मच गयी। खून-खराबी भी हुई। शहरके गिल्डहालमें घुड़सवार फौज तैनात की गयी। कारनेगी-परिवारकी क्षुब्धताका क्या कहना है। आधी रातके समय नगरके लोगोंने किवाड़ोंपर धक्के देकर कारनेगी-परिवारको जगाया और कहा कि व्याख्यान देनेके कारण वेली मारिसन पकड़कर जेलमें ठूंस दिया गया है। शेरीफने कुछ सैनिकोंकी सहायतासे उसे नगरके कुछ मील दूर ही गिरफ्तार कर लिया था। लोग उत्तेजित होकर जबर्दस्ती मारिसनको छुड़ाना चाहते थे। अन्तमें अधिकारियोंकी प्रार्थना-पर चरित्रनायकके पिताने खिड़कीमें खड़े होकर कहा—"यदि यहां कोई शान्तिका प्रेमी है, तो वह अपनी बांह मोड़ ले।" लोगोंके ऐसा करनेपर उन्होंने कहा—"अब कृपाकर शान्तिपूर्वक

घर चले जाइये।" लोग चुपचाप घर चले गये और पीछे मारिसन भी छोड़ दिया गया। इस घटनाके कोई ५०वर्षके बाद सन् १८८०ई०के अक्टूबर मासमें लौडर टेकनिकल स्कूलका उद्घाटन करते हुए कारनेगीने अपने व्याख्यानमें कहा था—"लड़कपनकी एक बात मुझे याद आती है—एक दिन अन्धकारपूर्ण अर्द्ध रात्रिमें मैं शोरगुल सुनकर जाग पड़ा और मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे मामा मारिसन जेल भेजे गये हैं। यह कहते गर्व मालूम होता है कि मुझे भी एक मामा था, जो जेल भेजा गया था। पर सज्जनो और देवियो! मेरा मामा सार्वजनिक संस्थाओंकी हितरक्षाके लिये ही जेल गया था।"

जब प्रकटमें कारनेगी-परिवार इस प्रकार राजद्रोहमें भाग लेता था तो फिर घरमें बैठकर आपसमें वे लोग Monarchical, Aristrocratic Govt और धनियोंकी सुविधाओंकी किस प्रकार निन्दा किया करते थे, इसकी कल्पना पाठक सहजमें ही कर सकते हैं। साथ ही साथ प्रजातन्त्र शासनप्रणालीकी श्रेष्ठता, अमेरिकाकी महत्ता और स्वतन्त्रताकी आवासभूमि होनेकी चर्चा भी जोरोंसे हुआ करती थी। बालक कारनेगीका जीवन इन्हीं विचारोंको लेकर गठित हुआ था। चरित्रनायकने अपने आत्मचरितमें लिखा है—"लड़कपनमें मैं राजा, ड्यूक और लार्ड, सबको कतल कर सकता था और समझता था कि उन्हें मारनेसे मैं राज्यकी बड़ी सेवा कर सकूंगा तथा यह अत्यन्त वीरतापूर्ण कार्य्य होगा।"

स्काटलैंडमें डनफरलिन नगर अपनी उग्र राजनीतिके कारण सर्वत्र प्रसिद्ध हो रहा था। उन दिनों वहां अधिकांश ऐसे ही लोग रहते थे जो जुलाहेका स्वतन्त्र व्यवसाय करते थे। प्रत्येकके पास अपना अपना करघा था। वे रोजपर काम करनेवाले मजदूर नहीं थे ; बल्कि ठीकेपर काम करते थे। बड़े बड़े व्यापारी कपड़ोंकी तानी करके उन्हें दिया करते थे और वे लोग ठीकेपर उसे बीन दिया करते थे।

उन दिनों राजनीतिक आन्दोलन जोरोंपर था। दो पहरके भोजनके बाद लोग छोटे छोटे दल बांधकर निकलते थे और राज्यके प्रश्नोंपर वाद-विवाद किया करते थे। कारनेगी भी इस दलमें शरीक होकर वाद-विवादमें भाग लिया करता था। प्रायः एकतरफा बहस हुआ करती और सभी इस बातको मान लेते कि राज्य-प्रणालीमें परिवर्तन अवश्य होना चाहिये। नगरभरमें क्लब स्थापित हो गये। लण्डनके अखबार मंगाये जाते थे और प्रत्येक सन्ध्याको उन अखबारोंके अग्रलेख लोगोंको पढ़कर सुनाये जाते थे। कारनेगीका मामा बेली मारिसन ही प्रायः अग्रलेखोंको पढ़ा करता था। लेख पढ़नेके बाद बड़ी सरगर्मीसे बहस छिड़ा करती थी। ऐसी राजनीतिक सभाएं अकसर हुआ करती थीं और चरित्रनायक भी प्रायः उनमें भाग लिया करता था। सभाओंमें कारनेगीके पिता या मामाका व्याख्यान विशेषकर हुआ करता था।

वाष्प-शक्तिके आविष्कार होनेके बाद जब हाथके करघेके

स्थानमें वाष्पके करघे चलाये जाने लगे, तो कारनेगी-परिवारपर विपत्तिका पहाड़ टूट पड़ा। धीरे धीरे करघोंका मूल्य घटने लगा और परिवारके भरण-पोषणका प्रश्न कठिन हो चला। इस अवसरपर कारनेगीकी माताने यथार्थ गृहिणीका कार्य्यकर परिवारको भूखों मरनेसे बचा लिया। उन्होंने मूडी स्ट्रीटमें एक छोटीसी दूकान खोल दी और इस प्रकार दूकानसे जो आमदनी होने लगी उससे कारनेगी-परिवारका खर्च मजेमें चलने लगा।

इसके थोड़े दिनोंके बाद ही चरित्रनायकको पहले पहल मालूम हुआ कि दरिद्रता किसे कहते हैं। जिस दिन कारनेगी-के पिता आखिरी कपड़ा बीनकर व्यापारीके पास उसे देने और आगे बीननेके लिये कपड़ेकी ताली लाने गये, उस दिन कारनेगी-परिवार इस चिन्तासे व्यथित हो रहा था कि अब कोई नया कपड़ा बीननेको मिलेगा या बेकारीके मारे भूखों मरना पड़ेगा। कारनेगीने अपने आत्मचरितमें लिखा है—"यह देखकर मेरा हृदय जल उठा कि यद्यपि मेरे पिता बेकार, काहिल या दुष्ट नहीं थे, तो भी उन्हें संसारके एक मनुष्यसे प्रार्थना करनी पड़ती थी कि मुझे काम करनेकी आज्ञा दो। उसी समय मैंने संकल्प कर लिया कि बड़ा होनेपर मैं इस दोषको दूर करूंगा।" ऐसी अवस्थामें भी कारनेगी-परिवारकी आर्थिक दशा अड़ोस-पड़ोसके लोगोंसे अच्छी ही थी। अपने दोनों पुत्रोंको सुरुचिपूर्ण वस्त्रोंसे आच्छादित देखनेके लिये कारनेगीकी माता सब प्रकारके कष्टोंको झेलनेके लिये तैयार थीं।

किसी समय कारनेगीके पिताने जल्दबाजीमें आकर प्रतिज्ञा कर डाली थी कि जबतक कारनेगी मुंह खोलकर पढ़नेकी आज्ञा नहीं मांगेगा, तबतक उसे स्कूल नहीं भेजा जायगा। चरित्रनायककी उम्र बढ़ने लगी और उसके पिताकी चिन्ता यह सोचकर बढ़ने लगी कि किस प्रकार वह स्वयं स्कूल जाने-की प्रार्थना करेगा। स्कूलमास्टर मि० राबर्ट मार्टिनकी बड़ी खुशामद्कर कारनेगीके पिताने उनसे बालकपर दृष्टि रखनेके लिये निवेदन किया। एक दिन कारनेगी मार्टिनके साथ बाहर घूमने गया और वहांसे लौटकर उसने माता-पितासे पढ़नेकी आज्ञा मांगी। पिताके हर्षका क्या पूछना था! बड़ी खुशीसे पिताने अनुमति दे दी। उस समय कारनेगीकी अवस्था ८ वर्ष-की थी।

कारनेगीका स्कूलमें खूब मन लगता था। यदि किसी कारणवश स्कूल आनेमें बाधा हो जाती थी, तो उसे बड़ा दुःख होता था। चरित्रनायकको प्रातःकाल मकानसे दूर मूडी स्ट्रीट-के कुएंसे पानी भी लाना पड़ता था। पानी बड़ी कठिनतासे मिलता था। अड़ोस-पड़ोसकी बुड्ढी स्त्रियां और लड़के आकर कुएंपर जम जाते थे और अपने घड़ोंको नम्बर वार लगाकर रखते थे। बारी बारीसे सबको पानी मिलता था। ऐसे अवसरोंपर प्रायः लड़ाई-झगड़ा हुआ ही करता है। कारनेगी भी बुढ़ियोंसे झगड़ पड़ता था। बुड्ढी स्त्रियां भी उसे झगड़ालू कहा करती थीं। इस प्रकार कारनेगीने लड़कपन हीमें वाद-विवाद करनेकी

शक्ति प्राप्त की, जो जीवनपर्यन्त उसके जीवनकी संगिनी बनी रही।

उपरोक्त कारणोंसे कारनेगीको स्कूल जानेमें प्रायः देर हो जाया करती थी, पर स्कूलमास्टर मार्टिन इसके कारणको जानते थे, अतएव वे इसे क्षमा कर दिया करते थे। स्कूलके बाद भी कारनेगीको दूकानका काम करना पड़ता था। कुछ दिनोंके बाद दूकानका हिसाब-किताब और लेन-देनका लेखा चरित्र-नायकके जिम्मे कर दिया गया और इस प्रकार लड़कपन हीमें कारनेगी व्यवसायके रहस्योंसे परिचित हो गया था। बालक कारनेगी १० वर्षकी उम्र हीमें अपने परिवारका एक उपयोगी अंग बन गया था।

चरित्रनायकके ऊपर उसके चचा लौडरका भी बड़ा प्रभाव पड़ा था। उसके पिता तो प्रायः करघेमें लगे रहते थे—उन्हें अपने पुत्रके ऊपर ध्यान देनेकी बिलकुल फुरसत नहीं मिलती थी। पर लौडर दूकानदारी करता था और उसे प्रायः फुरसत मिल जाया करती थी। स्त्रीके मर जानेके बाद तो लौडर अपने इकलौते लड़के जार्ज और कारनेगीको शिक्षा देकर ही अपना दिल बहलाया करता था। कारनेगीने अपने चचासे बातचीतमें इंगलैंडका इतिहास सीख लिया था। स्काटलैण्डके इतिहासका ज्ञान भी उसने चचासे पाया। वालेस, ब्रूस और बर्न्सकी वीरता-पूर्ण कथाने बालक कारनेगीको स्काटलैंडका अभिभक्त बना दिया। कारनेगीकी दृष्टिमें वालेस आदर्श योद्धा था। स्काटलैंडके

प्रति कारनेगीके हृदयमें कैसी भक्ति थी, यह नीचेकी कथासे स्पष्ट हो जाती है—एक दिन किसी दुष्ट बालकने कारनेगीसे कहा कि इङ्गलैंड स्काटलैंडसे कहीं बड़ा है। कारनेगी दौड़ा दौड़ा चचाके यहां गया और उससे सब हाल कहा। चचाने कहा—

"नहीं नेग! यदि स्काटलैंडको इङ्गलैंडके समान चपटा बना दिया जाय तो स्काटलैंड इङ्गलैंडसे कहीं अधिक बढ़ जायगा। पर क्या तुम चाहते हो कि सभी उच्च भूमि (Highland) समतल बना दी जाय ?"

"नहीं, कभी नहीं।" इस प्रकार बालक कारनेगी सन्तुष्ट हुआ।

कारनेगी इस प्रकार अपने चचेरे भाई और चचाके साथ हाई स्ट्रीटमें शिक्षा प्राप्त किया करता था। जार्जके साथ उसकी घनिष्ठता उसी समयसे बढ़ी और जीवनपर्यन्त बनी रही।

हाई स्ट्रीटसे मूडी स्ट्रीट जानेके लिये दो रास्ते थे। एक गिरजेके पास होते हुए अन्धकारपूर्ण सड़क होकर और दूसरा मेनगेटके आलोकपूर्ण पथ होकर। जब कारनेगी घर जाने लगता तो कभी कभी उसका चचा पूछ बैठता—"कारनेगी, किस रास्तेसे घर जाओगे ? वालेसका आदर्श सामने रखकर कारनेगी कहा करता कि गिरजे होकर घर जाऊंगा। कारनेगी बराबर गिरजा होकर ही घर जाता रहा, कभी आलोकपूर्ण पथसे नहीं गया। अन्धकारमें जाते हुए यह सीटी बजाया करता और बराबर सोचा करता कि यदि इस समय भूत-प्रेतका

दर्शन हो जाय, तो मैं भी वालेसके समान हो वीरतापूर्ण कार्य करूंगा, कभी भी नहीं डरूंगा ।

कारनेगीने अपने चचाकी उत्तेजनासे वहुसंख्यक अङ्गरेजी पद्योंको कण्ठस्थ कर लिया था और इससे उसकी स्मरण-शक्ति बहुत तीव्र हो गयी थी। कारनेगीके विचारसे छोटे छोटे सुंदर पद्योंको मुखस्थ कर लेनेसे वालकोंकी शिक्षापर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है, इसलिये चरित्रनायकने अपने आत्मचरितमें अपने चचाकी इस सुन्दर शिक्षा-पद्धतिकी बड़ी प्रशंसा की है। डनफरलिनस्कूलमें पढ़ते समय कारनेगीको बाइबिलके पद्योंको कण्ठस्थकर सुनाना पड़ता था। चरित्रनायक घरसे स्कूल चलनेके समय उन पद्योंको देखना शुरू करता और स्कूल पहुंचते पहुंचते दो पद्योंको कण्ठस्थ कर सुना दिया करता था। इसीसे कारनेगीकी वुद्धिकी तीव्रताका पता लगता है। एक वार स्कूलके छात्रोंके सामने वर्नको प्रसिद्ध कविता "Man was made to mourn" को कण्ठस्थ सुनानेके उपलक्ष्यमें कारनेगीको पुरस्कार भी मिला था। पीछे चलकर एकवार कारनेगी भूतपूर्व भारतसचिव लार्ड मोर्लेसे मिला था। वर्ड्सवर्थकी जीवनीपर बातचीत करते हुए मोर्लेने कहा, "मैं वर्नकी 'Old age' नामक कविता ढूंढ़ रहा हूं, जिसमें वर्ड्स-वर्थके जीवनकी चर्चा है, पर मुझे नहीं मिलती।" कारनेगीने झटपट उस कविताको सुना दिया। मोर्लेने प्रसन्न होकर इसे एक पेनी इनाममें दी थी।

धार्मिक बातोंमें बालक कारनेगीपर किसी प्रकारका दबाव नहीं डाला जाता था। और बालकोंको स्कूलमें ईसाईधर्मकी प्रश्नोत्तरमाला सिखायी जाती थी, पर कारनेगी और जार्ज इस बन्धनसे मुक्त थे। मारिसन और लौडर ईसाईधर्मकी प्रश्नोत्तर-मालासे विलग रहते थे। कारनेगी-परिवारमें कोई ईसाईधर्मका अभिभक्त नहीं था। कारनेगीकी माता धार्मिक विषयोंमें सदा तटस्थ रहा करती थीं। वह गिरजा भी नहीं जाती थीं, क्योंकि घरके कामकाजसे उन्हें फुरसत ही नहीं मिलती थी।

लड़कपनमें कारनेगी खरहों और कबूतरोंको पाला करता था। इसके पिता बड़े यत्नसे इन जन्तुओंके निवासके लिये स्थान-का प्रबन्ध कर दिया करते थे। बहुतसे अड़ोस-पड़ोसके बालक कारनेगीके साथ खेलने आया करते थे और गृहणी तथा गृह-पति दोनों मिलकर उन्हें पूर्ण आराम देनेकी व्यवस्था किया करते थे। कारनेगी अपने साथियोंको लेकर खरहोंको पकड़वाने-को निकल पड़ता था और जिस साथीकी मददसे कोई खरहा पकड़ा जाता था, उसीके नामपर खरहेका नामकरण होता था। शनिवार की छुट्टीका दिन तो कारनेगीकी मित्रमंडली खरहों-के भोजनको संग्रह करनेमें ही बिताया करती थी। कारनेगीने अपने भविष्य-जीवनमें जिस संगठनके बलसे सफलता प्राप्त की थी, उसका सूत्रपात उसके बालकपनमें ही हो गया था। प्रत्येक मनुष्यके लिये यह सम्भव नहीं है कि वह सर्वज्ञ बन सके, पर अपनेसे श्रेष्ठ मनुष्योंको चुनकर उनकी शक्तियोंका सदुपयोग

करना एक भारी काम है और कारनेगीने इसमें पूर्ण सफलता प्राप्त की थी। कारनेगी वैज्ञानिक और वाणविद्याके गूढ़ रहस्योंको भले ही नहीं जानता हो, पर वह मनुष्य-चरित्रको जाननेमें सिद्धहस्त था। इसी श्रेष्ठ गुणके कारण कारनेगी दरिद्रगृहमें जन्म लेकर भी धनकुवेर होनेमें समर्थ हुआ था।
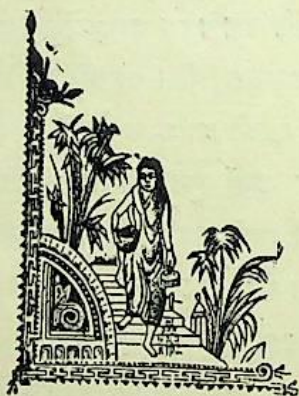
तृतीय परिच्छेद

अमेरिका-प्रस्थान

वाष्पशक्तिके आविष्कार होनेसे करघेके व्यवसायियोंकी दशा बिगड़ने लगी और कारनेगी-परिवार भी इस विपत्तिसे रक्षा नहीं पा सका। अन्तमें पितृसवर्गके सम्बन्धियोंके पास पत्र लिखा गया कि वे लोग भी अमेरिका जानेका विचार करते हैं। वहांसे संतोषजनक उत्तर पानेपर सभी करघों आदि सामान-को नीलाम करनेका विचार स्थिर हुआ। कारनेगीके पिता बार बार मधुर शब्दोंमें अमेरिकाके स्वतन्त्र जीवनकी प्रशंसा किया करते थे। अन्तमें सभी सामान नीलाम किया गया, पर उन्हें पूछता कौन था? बहुत कम रुपया मिला। सब जोड़ने-जाड़नेपर भी २०पौण्डकी कमी रही। कारनेगीकी माताकी सखी श्रीमती हैण्डरसनने इस अवसरपर सहायताकर कारनेगी-परिवारको सदैवके लिये कृतज्ञताके रूपमें आवद्ध कर लिया। लौडर और मारिसनकी जमानतपर २० पौंड उधार दिया गया। बस, अब अमेरिका-प्रस्थानका सब सामान ठीक हो गया। लौडरने इन लोगोंको सभी बातें अच्छी तरह समझा दीं। १७ वीं मई सन् १८४८ई० को कारनेगी-परिवार डनफरलिनको अन्तिम नमस्कार-

कर अमेरिकाके लिये चल पड़ा। कारनेगीकी अवस्था उस समय १३ वर्षकी थी और उसका भाई टाम ५ वर्षका था। कारनेगी डनफरलिनसे विदा होते समय 'बस' पर खड़ा होकर अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे अपने जन्मस्थानको देखता रहा। प्राचीन गिरजेकी स्मृति इसके बाद भी १४ वर्षतक कारनेगीके मनमें बनी रही। रह रहकर कारनेगी मनमें सोचा करता—"मैं तुम्हें कब देखूंगा।" राबर्ट ब्रूसको तो कारनेगी कभी नहीं भूला। फोर्थकी खाड़ी पहुंचनेपर एक छोटी नावमें सवार होकर वे लोग एडिनबर्ग पहुंचे। नावपरसे जहाजपर चढ़ते समय बालक कारनेगी अपने चचा लौडरके गलेमें लिपट गया और फूट फूटकर रोते हुए कहने लगा, "चचा! मैं तुमको नहीं छोड़ूंगा—मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ सकता।" एक दयार्द्र नाविकने कारनेगीको उठाकर जहाजपर चढ़ाया। कारनेगीके स्वदेशप्रेमका पता इस घटनासे भलीभांति लगता है।

'विसकासेट' नामक जहाजपर कारनेगी-परिवारने अमेरिकाके लिये प्रस्थान किया। उन्हें अमेरिका पहुंचनेमें ७ सप्ताह लगे। जहाजपर ही कारनेगीने बहुत कुछ सीख लिया। जहाजपर बहुत कम नाविक थे, अतएव यात्रियोंकी सहायताकी आवश्यकता प्रायः हुआ करती थी। कारनेगी बड़ी तत्परताके साथ स्वयं भी नाविकोंकी सहायता करता और अन्य यात्रियोंको भी सहायता देनेके लिये उत्साहित किया करता था। बहुत शीघ्र ही नाविकोंसे इसकी गहरी दोस्ती

हो गयी। रविवारके भोजमें नाविकगण कारनेगीको अवश्य शामिल कर लिया करते थे। कारनेगीको जहाज छोड़ते समय भी बड़ा दुःख हुआ था।

न्यूयार्क पहुंचकर तो सभी हक्के वक्के हो गये। कारनेगी इसके पूर्व इंगलेण्डकी रानीको देखने ऐडिनवर्ग गया था और आनेके समय ग्लासगो होता आया था, पर शहरको देखनेका मौका इन लोगोंको नहीं मिला था। पहलेपहल न्यूयार्कमें ही कारनेगीने विशाल जनसमूहको देखा। न्यूयार्कमें रहते समय एक दिन कारनेगी 'वाकलिंगग्रीन' नामक पार्क होकर जा रहा था कि 'विसकासेट' जहाजके एक नाविक रावर्ट वेरीमैनने अचानक इसका आलिंगन किया और इसे एक भोजनालयमें ले गया। वहां कारनेगीने एक ग्लास 'सरसापरिला' पिया। चरित्रनायकको उसका स्वाद अमृतसे अधिक जान पड़ा। अपने ऐश्वर्य्यमय दिनोंमें चरित्रनायक बहुत बार उस रास्ते होकर गया और बराबर उस बुढ़ियाकी दूकानको देखा करता, जहां उसने अमृतोपम 'सरसापरिला' का आस्वादन किया था, पर उस नाविक मित्रका पता फिर नहीं लगा।

न्यूयार्कमें मि० स्लोन और उनकी सहधर्मिणी ही कारनेगी-परिवारके एकमात्र परिचित थे। श्रीमती स्लोन कारनेगीकी माताकी सखी थीं। मि० स्लोन भी पहले जुलाहेका काम करते थे और कारनेगीके पिताके मित्र थे। हमारे चरित्र-

नायकका परिवार एकाएक स्लोन गृहमें जा पहुंचा। स्लोनने बड़ी ख़ातिर की। कुछ दिन ठहरकर वे लोग पिट्सबर्गके लिये रवाना हुए। एक नहर होकर इन लोगोंको नावमें यात्रा करनी पड़ी। पिट्सबर्ग पहुंचनेमें तीन सप्ताह लगे। आज-कल रेलसे न्यूयार्कसे पिट्सबर्ग जानेमें कुल दस घंटे ही लगते हैं, पर उनदिनों अमेरिकाके पश्चिमी नगरोंके साथ रेलका सम्बन्ध स्थापित नहीं हुआ था। 'एरी' रेलवे बन ही रही थी। राहमें एक रातमें इन लोगोंको मच्छड़ोंने खूब सताया था। कारनेगीकी माताको तो मच्छड़ोंने इतना काट खाया कि वह प्रातःकाल अच्छी तरह देख भी नहीं सकती थीं। सबके चेहरे बिगड़ गये थे, पर तोभी कारनेगीने खूब खर्राटे लिये थे।

पिट्सबर्गमें कारनेगी-परिवारके मित्र बड़ी उत्कंठापूर्वक इनकी राह देख रहे थे। पहुंचते ही बड़े प्रेमसे उन्होंने स्वागत किया और इनके रास्तेके सभी दुःख छूमन्तर होगये। स्थिर होनेपर इन लोगोंने अलगेनी नगरमें एक मकान कियायेपर लिया और उसीमें रहने लगे। कारनेगीके चचाके एक भाईने 'रेबेका स्ट्रीट' में एक छोटीसी दूकान खोल रखी थी। उसके तल्लेमें दो कमरे थे। उन्हींमें कारनेगीके पिताने अपना व्यवसाय शुरू किया। वे 'टेबलक्लाथ' बीनने लगे। उन्हें बीनना और बेचना दोनों काम स्वयं करने पड़ते थे, क्योंकि कोई ऐसा व्यापारी नहीं था जो इकट्ठा बहुतसा माल खरीद लेता। घर घर

जाकर तैयार मालको बेचना पड़ता था। इसमें बहुतसा समय नष्ट होनेके कारण पहलेपहल बहुत कम आमदनी हुई।

इस अवसरपर भी कारनेगीकी माताने आदर्श गृहिणीका कार्य्य किया। किसी भी विघ्नबाधासे वह नहीं घबड़ाती थीं। उन्होंने अपनी युवावस्थामें जूतोंकी मरम्मत करनेका काम सीखा था। उसी व्यवसायके द्वारा कारनेगीकी माताने परिवारकी सहायता आरम्भ कर दी। उन लोगोंके पड़ोसमें ही हेनरी फिप्स् नामक एक चतुर चर्म्मकार रहता था। उसीसे काम लेकर कारनेगीकी मां घरके काम-धन्धोंको करती हुई भी जूतोंकी मरम्मतसे सप्ताहमें चार डालर* पैदा कर लिया करती थीं। कभी कभी वह आधी राततक काम किया करती थीं। इस प्रकार कारनेगीकी माता आदर्श गृहिणीके रूपमें परिवारका पालन-पोषण करती थीं और कारनेगीके पिता भी अपने पुत्रोंके आदर्श पथप्रदर्शक और मित्र थे। दरिद्र, पर चरित्रवान् माता-पिताके इस आदर्श आचरणका कारनेगीपर बड़ा प्रभाव पड़ा। लखपतीके लड़कोंको ऐसी शिक्षा कहां नसीब हो सकती है?

शीघ्र ही अड़ोस-पड़ोसके लोगोंको कारनेगीकी माताकी उच्च हृदयताका पता लग गया और वे लोग वक्त पड़नेपर उप-देशके लिये उनके पास आने लगे। कारनेगीके धनकुबेर होनेपर भी दरिद्र लोगोंका नाता उसकी मांके पास लगा ही रहा।

---

* एक डालर तीन रुपयेसे कुछ ऊंचा होता है।

चतुर्थ परिच्छेद
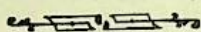
कार्य्यक्षेत्रमें प्रवेश

कारनेगीने अपने जीवनका १३ वां वर्ष समाप्त कर लिया था। अब वह क्या करे—किस प्रकार अपने परिवारकी आर्थिक स्थितिको सुधारनेमें सहायता पहुंचा सके, सबको इसकी चिन्ता लग रही थी। स्वयं कारनेगी भी अपने परिवारको सहायता पहुंचानेके लिये लालायित हो रहा था। परिवारकी दरिद्रता कारनेगीको कभी चैन नहीं लेने देती थी। वह उस समय मनमें सोचा करता कि ३०० डालर वार्षिक आय होनेसे ही परिवारका भरणपोषण भलीभांति हो सकता है। उस समय जीवनके व्यवहारकी सभी चीजें सस्ती थीं।

कारनेगीका चचा होगन बराबर पूछा करता कि 'नेग', कौनसा काम करेगा? एक दिन बड़ी हृदयविदारक घटना हुई। होगनने कारनेगीकी मातासे कहा कि यदि नेग फेरीवालेका काम किया करे तो अनायास ही बहुतसा द्रव्य उपार्जन कर सकता है। कारनेगीकी माता उस समय कपड़ा सी रही थीं। सुनते ही उनके बदनमें आग सी लग गयी। वह खड़ी होकर क्रोधसे कांपती हुई बोलीं—"ऐं! मेरा लड़का

फेरी लगाता फिरेगा? इससे अच्छा होगा कि मैं उसे अलगेनी नदीमें डुबाकर मार डालूं। अब मेरे सामने ऐसी बात मत कहो।" इसके बाद ही वह रोने लगीं और अपने दोनों बेटोंको गोदमें लेकर चूमते हुए कहा—"बेटा! मेरे मूर्खतापूर्ण कार्य्यको ध्यानमें न रखना। दुनियांमें बहुतसे काम हैं। यदि तुमलोग सत्पथपर रहोगे तो तुम्हारी सब तरहसे उन्नति होगी।" कारनेगीकी माता परिश्रमकी निन्दा नहीं करती थीं, पर उन्हें यह सह्य नहीं हुआ कि उनका प्यारा बेटा घर घर जाकर—हर तरहके लोगोंके पास जाकर, फेरी लगाया करे। नीच लोगोंकी संगतिसे अपने बच्चोंको बचाये रखनेकी उन्हें बड़ी फिक्र थी। दोनों पुत्रोंको जीते ही नदीमें डुबा दे सकती थीं, पर नीच लोगोंकी संगतिमें पड़ने देना नहीं चाहती थीं।

कारनेगी-परिवारसे बढ़कर आत्माभिमानी शायद ही कोई दूसरा परिवार था। घरके सभी लोगोंके विचार स्वतन्त्र और आत्मसम्मानपूर्ण थे। कारनेगीकी माताको सब प्रकारके नीच व्यवहारोंसे घृणा थी। ऐसी माताको संरक्षतामें रहकर यदि कारनेगी अपने भविष्य-जीवनमें उन्नति करनेमें समर्थ हुआ तो कोई आश्चर्य्यकी बात नहीं है। यथार्थमें माता हीके हाथोंमें पुत्रका भविष्य निर्भर करता है। फिर कारनेगीके पिता भी आदर्श प्रकृतिके थे। अड़ोस-पड़ोसके लोग उन्हें साधु कहा करते थे।

इस घटनाके थोड़े ही दिनोंके बाद कारनेगीके पिताने

करघेका काम छोड़कर कपड़ेके कारखानेमें कार्य्य करनेका निश्चय किया। यह कारखाना स्काटलैण्डनिवासी मि० ब्लैकस्टाकका था। इसी कारखानेमें भावी धनकुवेर—हमारे चरित्रनायकने नली भरनेका काम शुरू किया। इस कार्य्यके लिये कारनेगीको सप्ताहमें १ डालर बीस सेंट मिलता था। काम कड़ा था। बालक कारनेगीको जाड़ेके दिनोंमें सूर्य्योदय-के बहुत पूर्व उठना पड़ता था। अंधेरे ही जलपान आदिकर सूर्य्योदयके पूर्व कारखानेमें पहुंच जाना पड़ता था और शामतक कारखानेमें ही रहना पड़ता था। बीचमें केवल थोड़ी देरके लिये खानेकी छुट्टी मिलती थी। कारनेगीका मन इस काममें नहीं लगता था—दिन पर्वत हो जाता था, पर तोभी उसे यह सोचकर अपूर्व आनन्द मिलता था कि वह अपने परिवारको कुछ आर्थिक सहायता पहुंचानेमें समर्थ हो रहा है। श्रीकार-नेगीने भविष्यमें अरबों रुपया कमाया। प्रथम सप्ताहमें १ डालर २० सेंट पाकर उन्हें जैसी प्रसन्नता मिली थी वैसी कभी नहीं मिली। अब कारनेगीपर परिवारका बोझ नहीं था।

इसके थोड़े दिनोंके बाद ही नली (Bobbin) के अन्य व्यवसायी मि० जान हेको एक बालककी आवश्यकता हुई और कारनेगी २ डालर प्रति सप्ताहपर वहीं काम करने लगा। वहांका काम कारखानेसे भी बुरा था। कारनेगीको एक छोटा स्टीम इंजिन चलाना पड़ता था और नलीके कारखानेके बायलरमें आग जलानी पड़ती थी।

१३ वर्षके कारनेगीके लिये यह काम यथार्थमें कष्टसाध्य था। बायलरमें आग जलाते हुए उसे बराबर भय बना रहता था, कि कहीं गर्मी तेज न हो जाय और कम भी नहीं रहे। तेज होनेसे वायलर फटनेका डर था और कम गरमी होनेसे मज-दूर लोग शिकायत करने लगते थे।

कारनेगी इन सभी कठिनाइयोंको अपने मां-बापसे छिपाये रखता था। वे तो स्वयं चिन्ताग्रस्त थे, फिर कारनेगी अपनी कठिनाईका बोझ उनपर क्यों लादता? कारनेगी उच्चा-भिलाषी और आशावादी था—उसे विश्वास था कि शीघ्र ही कोई परिवर्त्तन हो जायगा। कौनसा दूसरा अच्छा कार्य्य उसे मिलेगा, इसका निश्चय उसे नहीं था, पर अन्तरात्मा कह रही थी—"काममें लगे रहो, शीघ्र ही तुम्हारा इससे उद्धार होगा।"

आखिर एक दिन अवसर आ ही गया। मि० हेको कुछ बिल बनाने थे। उसके पास कोई क्लर्क नहीं था—वह स्वयं भी इसमें अनाड़ी ही था। हेने कारनेगीको पूछा—"तुम कैसा अक्षर लिख सकते हो?" उसे कुछ लिखनेके लिये भी दिया। कारनेगीके लेखको देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। इसके बादसे तो कारनेगी ही उसके बिल बनाने लग गया। हिसाब-किताबमें कारनेगी पटु ही था। हे भी कारनेगीपर दया रखता था और उसे इंजिनसे छुड़ाकर किसी अच्छे काममें लगाना चाहता था।

अब हेने कारनेगीको एक दूसरे काममें लगाया। सूत

लपेटनेके लिये जो नये नये 'रील' आदि बनाये जाते थे। उन्हें तेलमें भिगोनेका काम कारनेगीको करना पड़ा। उसे एक कमरेमें अकेले ही इस कामको करना पड़ता था। तेलकी गंधसे कारनेगीका दिमाग घूमने लगता था। वह कभी कभी हिम्मत हार बैठता था—वालेस और ब्रूसके जीवन-चरित्रको स्मरण-कर भी उसके मनको प्रबोध नहीं होता था। दुर्गन्धके मारे कारनेगीको दिनमें भोजन भी अच्छा नहीं लगता था, पर इसकी कसर वह रातके भोजनमें पूरी कर लेता था। इतना होनेपर भी कारनेगी काममें लगा रहा। वालेस और ब्रूसका अनुयायी मर जायगा, पर कामसे हिम्मत नहीं हार सकता।

इसी बीचमें कारनेगीने पिट्सवर्गके मि० विलियमके यहां हिसाब-किताब रखनेकी विधिको अच्छी तरह सीख लिया।

सन् १८५० ई०में एक दिन सन्ध्याके समय जब कारनेगी कामपरसे घर लौटा तो उसे मालूम हुआ कि टेलिग्राफ आफिस-के मैनेजर मि० डेविस ब्रूसने होगनसे एक ऐसे लड़केको मांगा था, जो तार पहुंचानेका काम कर सके। मि० ब्रूस और कारनेगीके चचामें दोस्ती थी और एक दिन कथाप्रसंगमें ही ब्रूसने होगनसे यह बात कही थी। यह सामान्य बात ही कारनेगीके जीवनके लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना हुई। एक शब्द या दृष्टिसे ही मनुष्यके जीवनमें महान् परिवर्त्तन हो सकता है। जो मनुष्य किसी भी घटनाको सामान्य समझता है, वह मूर्ख है। सामान्य घटनाओंसे ही कभी कभी बड़े

बड़े कार्य्य संभव हो गये हैं। रावर्ट ब्रूस और मकड़ेकी कथा तो सभी जानते हैं। कारनेगीके जीवनमें भी ब्रूस और होगनके खेलमें ही एक लड़केकी आवश्यकतावाली बातने घोर परिवर्त्तन उपस्थित कर दिया। होगनने कारनेगीका नाम लेकर कहा कि वह इस कार्य्यको भलीभांति कर सकेगा। कारनेगी परिवारसे होगनने इस सम्बन्धमें कहा। कारनेगी तो हर्षके मारे विह्वल हो गया। जिस प्रकार पिंजड़ेमें बन्द पक्षी स्वतन्त्रताके लिये छटपटाता है, उसी प्रकार कारनेगी 'हे'के कारखानेसे मुक्त होनेके लिये छटपटा रहा था। कारनेगीकी माताने नवीन प्रस्तावका समर्थन किया, पर पिताकी इच्छा नहीं होती थी। उन्होंने कहा—"नेग अभी बच्चा है। इतना कड़ा काम वह नहीं कर सकेगा। ढाई डालर सप्ताहमें मिलेगा, इसीसे प्रत्यक्ष है कि उस कामके लिये किसी सयाने लड़केकी जरूरत है। रातमें तारकी खबरोंको लेकर देहातमें निकलना पड़ेगा—इसमें विपत्तिकी संभावना है। अतएव अच्छा है कि नेग अभी वहीं रहे, जहां काम कर रहा है।" पीछे 'हे'से बातचीतकर कारनेगीके पिता भी राजी हो गये। हेने भी पक्षमें ही सलाह दी और कहा कि यदि नेग वहां काम करनेमें समर्थ नहीं हो सकेगा तो उसे उसका पुराना काम फिर मिल जायगा।

निश्चय हो जानेपर कारनेगी मि० ब्रूसके पास गया। बाप-बेटा दोनों साथ साथ तारघरतक गये। प्रातःकालका सुहावना समय अत्यन्त शुभसूचक था। अलगेनीसे पिट्सवर्ग

दो मील था। पहुंचनेपर कारनेगीका पिता तो नीचे ही ठहरा रहा और चरित्रनायक अकेला ही ऊपर मि० ब्रूसके पास गया। अमेरिकन भाव कारनेगीमें आ गया था, इसीलिये वह निदकर अकेला ही मि० ब्रूससे मिलने गया—पिताको साथ नहीं ले गया। वह स्वच्छ कमीज पहने हुए था—रविवारके लिये रक्षित साफ-सुथरे वस्त्रोंको पहनकर ही वह अपने भागकी परीक्षा करने गया था। कारनेगीके पास उस समय केवल एक ही कमीज थी। उसकी वीर माता उसे शनिवार-की रातके समय धोकर और स्त्रीकर रख दिया करती थी, जिससे रविवारके प्रातःकाल स्वच्छ वस्त्र उसे पहननेको मिले। सब प्रकारके कष्टोंको उठाकर भी वह वीर माता परि-वारको सब प्रकार सुखी रखनेका यत्न किया करती थी।

कारनेगी अपने कार्य्यमें सफल हुआ। ब्रूसने पूछा कि कबसे आ सकोगे? चरित्रनायक उसी समयसे काम करनेके लिये तैयार हो गया, इसका ब्रूसपर बड़ा प्रभाव पड़ा। नवयुवकोंको कभी कोई मौका हाथसे नहीं जाने देना चाहिये। हो सकता है कि कुछ देर कर देनेसे ही कोई ऐसी घटना हो जाय, जो सब गुड़ गोबर कर डाले। ब्रूसने पहलेसे नियुक्त बालकको बुलाकर कारनेगीको उसके जिम्मे कर दिया और काम सिखानेके लिये कहा। कारनेगी झट दौड़कर पिताके पास जा पहुंचा और हर्ष-सम्वाद कह सुनाया।

इस प्रकार सन् १८५० ई० में कारनेगीने यथार्थमें सर्वप्रथम

कार्य्यक्षेत्रमें पदार्पण किया। एक अंधेरे तहखानेमें स्टीम इंजिन चलानेके काममे मुक्ति पाकर कारनेगी ऐसे स्थानमें पहुंचा, जहां सूर्य्यका सुहावना प्रकाश, कागज, कलम, अखबार सभी मनमोहक पदार्थ मौजूद थे। कारनेगी नरकसे निकलकर स्वर्गमें आ पहुंचा था। मिनट मिनटमें वह नयी नयी बातें सीखता था। चरित्रनायकको मालूम होता था कि उसका एक पांव उन्नतिकी सीढ़ीपर है और वह अवश्य ही ऊपर चढ़ सकनेमें समर्थ हो सकेगा।

कारनेगी धीरे धीरे व्यवसायियोंके नाम और पतोंको सीखने लगा। वह सड़ककी एक पटरी होकर जाता और दूसरी होकर लौटा करता था। रातमें वह व्यवसायियोंके नामोंको नम्बरवार दुहराकर देखा करता कि उसे पता याद है या नहीं। इसके बाद कारनेगी व्यवसायियोंसे परिचय प्राप्त करने लगा। तार पहुंचानेवालोंको इससे एक लाभ यह होता कि यदि किसी व्यवसायीके कर्मचारीसे कहीं सड़कपर ही भेंट हो जाय, तो उसके आफिसतक जानेके श्रमसे वह बच जाता। कर्मचारी भी इस प्रकारके आचरणसे बड़ा प्रसन्न होता था और लड़केकी तारीफ कर दिया करता था।

सन् १८५० ई० में पिट्सवर्गकी अवस्था वर्तमान अवस्थासे अनेक अंशोंमें भिन्न थी। सन् १८४५ ई० की १० वीं अप्रैलको वहां भयङ्कर अग्निकाण्ड हुआ था और उस समयतक सभी मकान ठीक तरहसे नहीं बन सके थे। बहुतसे मकान लकड़ीके

ही बना दिये गये थे—पक्के मकान बहुत कम थे। वहांको आवादी भी केवल ४० हजार ही थी।

कारनेगीने बहुत जल्दी नगरके कुछ प्रसिद्ध पुरुषोंका परिचय प्राप्त कर लिया। पिट्सवर्गके जज विलकिन्स, मैकन्डलस, मैकल्पोर, चार्ल्स सेलर, एडविनस्टेटन—जो पीछे चलकर युद्धसचिव हुए थे—ये सभी कारनेगीके परिचित हो गये थे। व्यवसायियोंमें टामस हो, जेम्सपार्क, वेनजामिन जौन्स, विलियम और कर्नल हेरोन थे। उनमें कर्नल हेरोनको कारनेगी आदर्श समझता था।

कारनेगीका नवीन जीवन उसके लिये अत्यन्त सुखप्रद था। इसी अवसरमें उसकी बहुतसे लोगोंसे गाढ़ी मित्रता हो गयी। कुछ दिनके बाद डेविड मैककारगो कारनेगीका सहकारी नियुक्त हुआ, जो पीछे चलकर अलगेनी रेलवेका सुपरिण्टेण्डेण्ट हुआ। डेविड और कारनेगी शीघ्र ही मित्र बन गये। इसके बाद एक लड़केकी और जरूरत होनेपर रावर्ट पिट कर्न इस बातके लिये नियुक्त हुआ—जो पीछे चलकर पेन्सिल वेनिया रेलरोडका सुपरिण्टेण्डेण्ट और जनरल एजेन्ट हुआ था। रावर्टका जन्म एण्टेण्डेमें ही हुआ था। इस प्रकार पिट्सवर्गके तारघरमें खबर पहुंचानेके लिये तीन नवयुवक नियुक्त हुए थे, जो डाकघरमें प्रति सप्ताह वेतनपर कार्य्य किया करते थे। इन लोगोंको बारी बारीसे प्रातः सायं आफिसमें झाड़ लगानी पड़ती थी। माननीय ओलीवह और सालिसिटर मोरलेण्डने

भी उसी समय कारनेगीके तारघर हीमें काम शुरू किया था। अमेरिका स्वतन्त्रताकी अवकाश-भूमि है। क्षुद्र मनुष्य भी परिश्रमके बलसे वहां ऊंचेसे ऊंचे पदपर पहुंच सकता है। रंग और जाति इसमें बाधक नहीं हैं। जो यथार्थमें परिश्रमी हैं, उनके सामने उन्नति हाथ जोड़े खड़ी रहती है। भगवन्! क्या भारतवर्षमें भी कभी ऐसा दिन दिखायी पड़ेगा, जब यहांका दरिद्र-कुलोत्पन्न व्यक्ति भी परिश्रम और ईमान्दारीके बलसे भारतीय संयुक्त राष्ट्रके अध्यक्षका पद ग्रहण करनेमें समर्थ हो सकेगा? अस्तु।

तार पहुंचानेवाले बालकोंको कई प्रकारसे आनन्द प्राप्त हुआ करता था। फलकी दूकानोंमें शीघ्र तार पहुंचानेसे भरपेट सेव खानेका मौका मिलता था। हलवाई और नान-वाईकी दूकानोंमें रोटी और मिठाई मिला करती थी। अच्छे अच्छे लोग शीघ्र तार पहुंचानेपर लड़कोंकी तारीफ कर दिया करते थे। यथार्थमें लोगोंका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करनेके लिये इससे बढ़कर कोई दूसरा साधन नहीं है। चतुर लोग ऐसे ही चालाक और गर्वशील लड़कोंकी खोजमें रहते हैं। एक निश्चित सीमाके बाहर तारकी खबर पहुंचानेपर १० सेंट अलग चार्ज वसूल किया जाता था और यह तार पहुंचानेवालेका होता था। कभी कोई ऐसा तार हाथमें आनेपर सब उसे पहुंचानेके लिये झगड़ने लग जाते थे। कभी कभी सभी लड़के बारी बारीसे ऐसे तारोंको पहुंचाया

करते थे। इसके लिये कारनेगीने प्रस्ताव किया कि ऐसे तारोंको पहुंचानेसे जो आमदनी हो, सब एक स्थानपर जमा रखी जाय और सप्ताहके अन्तमें बांट ली जाय। चरित्रनायक ही इसका खजाञ्ची बनाया गया। इसके बाद फिर शांति रही। कारनेगीने पहलेपहल इस आर्थिक सहयोगमें भाग लिया।

लड़के इन पैसोंकी खूब मिठाई उड़ाया करते थे। पासमें ही एक हलवाईकी दूकान थी और सभी उसके यहां जाकर जम जाते थे। कभी कभी तो जमासे खर्च ही बढ़ जाता था। इसलिये खजांचीने हलवाईको बाजाप्ता नोटिस दे दिया था कि यदि कोई बालक आमदनीसे ज्यादा खर्च कर देगा तो वह उसके लिये देनदार नहीं होगा। राबर्ट पिट कर्न इस सम्बन्धमें सबसे बड़ा अपराधी था। एक दिन कारनेगीने एकान्तमें उसे बहुत फटकारा। इसपर राबर्टने जवाब दिया—"मेरे पेटमें बहुतसे ऐसे कीड़े हैं, जो जबतक मिठाई नहीं खाते, तबतक पेट खखोरा करते हैं। उन्हीको सन्तुष्ट करनेके लिये मैं इतनी ज्यादा मिठाई खाता हूं।

पञ्चम परिच्छेद
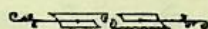
सरस्वतीकी उपासना

इतना आनन्द मिलनेपर भी कारनेगी प्रभृतिको कठिन काम करना पड़ता था। प्रति दूसरे दिन आफिस बन्द होने-तक उसे 'ड्यूटी' पर हाजिर रहना पड़ता था और घर जाते जाते रातका ११ बज जाता था। नहीं तो ६ बजे सन्ध्या समय ही छुट्टी मिला करती थी। इससे आत्मोन्नति करनेकी सुविधा नहीं मिलती थी। परिवारकी भी आर्थिक अवस्था ऐसी नहीं थी जिससे कोई पुस्तक खरीदकर वह पढ़ सके। पर ऐसे समयमें एक सुवर्णमय संयोग उपस्थित हुआ और साहित्य-जगत्का द्वार कारनेगीके लिये उन्मुक्त हो गया।

पिट्सवर्गमें कर्नल जेम्स एण्डरसन नामक एक सज्जन रहते थे। इन्होंने अपनी ४०० पुस्तकोंकी एक लाइब्रेरीको मजूर बालकों के लिये खोलते हुए सूचना निकाली कि कोई भी बालक प्रति शनिवारको एक पुस्तक पढ़नेके लिये ले जा सकता है और अगले शनिवारको पुस्तक लौटाकर वह फिर दूसरी पुस्तक लेनेका अधिकारी हो सकता है। अब प्रश्न यह उठा कि कारनेगी प्रभृति 'मजूर बालक' की हैसियतसे पुस्तक लेनेके अधिकारी

थे या नहीं? कारनेगीने "पिट्सवर्गडिसपैच" नामक समाचार-पत्रमें एक पत्र लिखकर कर्नल एण्डरसनसे प्रार्थना की कि तारघरमें काम करनेवालोंको भी पुस्तक लेनेकी सुविधा दी जाय, क्योंकि यद्यपि वे लोग हाथसे काम नहीं करते थे, पर उन लोगोंमें कुछ लड़कोंने पहले ऐसा काम किया था और वे लोग यथार्थमें 'मजूर बालक' ही थे। कर्नल एन्डरसनने शीघ्रही चरित्रनायक प्रभृतिको भी पुस्तक लेनेकी सुविधा कर दी। इस प्रकार कारनेगी अपने प्रथम समाचारपत्रलेखनमें सफल हुआ था। टाम मिलर नामक कारनेगीके मित्रने कर्नल एन्डरसनसे उसका परिचय करा दिया। इस प्रकार ज्ञान-प्रकाशके प्रवेशका द्वार और भी उन्मुक्त हो गया। पुस्तक-पाठके द्वारा दिनभरकी थकावट और सब प्रकार की चिन्ता दूर हो जाया करती थी। शनिवार की प्रतीक्षा बड़ी उत्सुकताके साथ की जाती थी। इस प्रकार चरित्रनायक, मैकालेके लेख, उसके लिखे हुए ऐतिहासिक ग्रन्थ तथा वैनक्रोफर-लिखित अमेरिकाके संयुक्तराष्ट्रके इतिहाससे परिचित हो गया। अमेरिकाके इतिहासको कारनेगीने बड़े ध्यानसे पढ़ा। लैम्बरचित, शेक्सपियरके नाटकोंकी कथाको पढ़नेमें उसका खूब मन लगता था। तबतक कारनेगी शेक्सपियरके नाटकोंके रसास्वादनसे वंचित था। इसके कुछ दिनके पीछे पिट्सबर्गके थियेटरमें शेक्सपियरके नाटकोंका अभिनय देखकर ही चरित्रनायकके मनमें शेक्सपियरके नाटकोंका प्रेम प्रतिष्ठित हुआ था।

इस प्रकार कर्नल एन्डरसनकी उदारतासे कारनेगी सरस्वतीकी उपासनामें दत्तचित्त रहने लगा। चरित्रनायकने अपने आत्मचरित्रमें लिखा है—"कर्नल एन्डरसनकी कृपासे ही साहित्यमें मेरा अनुराग उत्पन्न हुआ। मैं उस अनुरागको करोड़ों रुपयेसे भी नहीं बदल सकता। उसके बिना तो जीवन ही भार है। इसीसे मैं बुरी संगतसे बचा रहा"। कारनेगीने इस उपकारका बदला भी अच्छी तरह दिया। भाग्यलक्ष्मीके सुप्रसन्न होनेपर चरित्रनायकने कर्नल एन्डरसनका एक स्मारक अलगेनी पुस्कालयके सम्मुख स्थापितकर उसपर निम्नलिखित वाक्य अंकित कर दिये—

"पेन्सिल वेनियाकी फ्री लाइब्रेरीके संस्थापक कर्नल जेम्स एन्डरसनकी पवित्र स्मृतिमें। उन्होंने अपने पुस्तकालय-को मजूर बालकोंके लिये खोलकर और प्रति शनिवारको 'लाइब्रेरियन' का काम करके, न केवल पुस्तकोंको, बल्कि स्वयं अपने शरीरको इस पवित्र कार्यके लिये अर्पित कर दिया था। यह स्मारक उनकी कृतज्ञतापूर्ण स्मृतिमें एन्ड्रू कारनेगी-के द्वारा स्थापित किया जाता है जो "एक मजूर बालक" था और जिसके लिये ज्ञानप्राप्तिका द्वार उन्मुक्त किया था—जिसकी सहायतासे नवयुवक उन्नतिके मार्गमें भ्रमण करनेमें समर्थ हो सकते हैं।"

कारनेगी जीवनभर कर्नल एन्डरसनको श्रद्धाकी दृष्टिसे देखता रहा। इसी आदर्शको सामने रखकर चरित्रनायकने

भविष्यमें चलकर अनेक स्थानोंमें बहुसंख्यक पुस्तकालयोंकी प्रतिष्ठा की थी।

ठीक मौकेपर पुस्तकीय ज्ञानका द्वार कारनेगीके लिये उन्मुक्त किया गया था। पुस्तकालयको व्यवहारमें लानेकी विशेषता यह है कि विना परिश्रमके इससे कोई लाभ नहीं उठा सकता। नवयुवकोंको स्वयं परिश्रम करके ही ज्ञानोपार्जन करना चाहिये। पुस्तकालयको व्यवहारमें लानेसे युवकोंको आत्म-निर्भरताकी शिक्षा मिलती है।

कारनेगीके पिताने भी डनफरलिनमें कुछ पुस्तकोंको संग्रहकर और जुलाहोंकी सहायतासे एक भ्रमणशील पुस्तकालयकी प्रतिष्ठा की थी। उस पुस्तकालयका इतिहास भी मनोरंजक है। इसकी धीरे धीरे वृद्धि होने लगी और ७ वार उसे एक स्थानसे दूसरे स्थानमें हटाना पड़ा। कारनेगीने पीछे चलकर अपने जन्मस्थानमें एक बहुत बड़े पुस्तकालयकी प्रतिष्ठा की और जिस कार्य्यको उनके पिताने प्रारंभ किया था उसको पूर्णकर अपने पिताकी स्वर्गस्थ आत्माको सन्तुष्ट किया।

पहले ही कह चुके हैं कि थियेटर देखकर ही चरित्रनायकके मनमें शेक्सपियरके नाटकोंका प्रेम अंकुरित हुआ था। उस समय मि० फोस्टरके अधीन उस नाट्यशालाकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। उनके पास तारकी खबरें मुफ्त पहुंचायी जाती थीं और इसके बदले तारके बाबुओंको मुफ्तमें नाटक देखनेको

मिलता था। कभी कभी तार पहुंचानेवालोंको भी यह सुविधा मिला करती थी। तीसरे पहर आये हुए तारोंको वे लोग जान-बूझकर शामतक रोक रखते थे और शामको खबर पहुंचाते हुए वे प्रार्थनाकर नाटक देखनेमें सम्मिलित हो जाया करते थे। सभी 'लड़के' बारी बारीसे नाटक देखा करते थे।

इस प्रकार कारनेगी उस संसारसे भी परिचित हो गया जो अबतक पर्देके भीतर छिपा हुआ था। खेल साधारण ही होता था, पर १५ वर्षके बालककी आंखोंमें चकाचौंधी डालनेके लिये वह काफी था। कारनेगीने इसके पहले नाटक देखा ही नहीं था। उसके साथी लड़के 'डेवी' 'हेनरी' 'बोब' सबके साथ यही बात थी। नाटक देखनेके प्रत्येक मौकेका पूरा उपयोग किया जाता था। एडविन एडेम्स नामक अभिनेताने जब अपना पार्ट खेलना शुरू किया, तब तो कारनेगी पूरा शेक्सपियर-भक्त बन गया। वह नाटकके पद्योंको अनायास कण्ठस्थ करने लग गया। इसके पहले चरित्रनायकको मालूम नहीं था कि कवितामें क्या जादूकी शक्ति भरी होती है।

उसी समय अलगेनी नगरमें कोई सौ मनुष्योंने मिलकर "स्वेडेनबोरजियन सोसाइटी" स्थापित की थी और उसमें कारनेगीके सम्बन्धी प्रधान रूपसे भाग लेते थे। कारनेगी अपने पिताके साथ रातमें बराबर जाया करता था। चरित्र-नायककी माता इससे भी उदासीन थीं, सभी धर्मोंको आदर-की दृष्टिसे देखते हुए भी वह इस सम्बन्धमें सर्वदा तटस्थ रहा

करती थीं। वह कनफ्यूशियसके इस सिद्धान्तको मानने-वाली थीं कि "इस संसारके कर्त्तव्योंका पालन भलीभांति करना चाहिये। दूसरे लोककी चिन्ता करनेकी आवश्यकता नहीं है। यही सबसे बढ़कर बुद्धिमत्ता है।"

यद्यपि कारनेगीकी माता अपने पुत्रोंको गिरजा और रविवारके स्कूलोंमें जानेके लिये उत्साहित करती थीं, पर यह स्पष्ट था कि वह बाइबिलकी रचना तथा 'स्वेडेन बोरजियन समिति' को ईश्वरीय प्रभावसे प्रभावित नहीं मानती थीं। चरित्रनायकपर स्वेडेन बोरजियन समितिका पूरा प्रभाव पड़ा। इसकी धर्म-चर्चाओंमें भाग लेकर वह लोगोंकी वाह-वाही खूब लूटा करता था। उसकी चाची एटकिन उसे बराबर बधाई दिया करती थी और कहा करती थी कि कारनेगी आगे चलकर 'जगद्गुरु' हो जायगा। इसी समितिमें भाग लेनेके समय कारनेगीके मनमें संगीतके प्रति प्रेम उत्पन्न हुआ। समितिकी प्रार्थना-पुस्तकके अन्तमें कुछ भजन थे और उन्हें चरित्रनायक सबके साथ मिलकर दुहराया करता था। स्वर अच्छा नहीं रहनेपर भी कारनेगी बड़े उत्साहसे इसमें भाग लेता और कुछ त्रुटि होनेपर भी दलका नायक मि० कोथेन उसे क्षमा कर दिया करता था। कारनेगीके पिता भी स्काटलैण्डके संगीतको बराबर गाया करते थे और चरित्रनायकने उन सभी गीतोंके स्वर-तानको अच्छी तरह सीख लिया था। चरित्र-नायकके पिता अच्छे गानेवालोंमेंसे थे और कारनेगीने उन्हींसे

संगीत-प्रेम प्राप्त किया था। कनूफ्यूशियसके ये वाक्य सर्वदा उसके कर्ण-कुहरमें प्रतिध्वनित होते रहते थे, "पवित्र संगीत! तुम ईश्वरकी मधुर जिह्वा हो। तुम्हारी पुकार सुनते ही मैं आनन्दसे मुग्ध हो जाता हूं।"

इसी समय एक और घटना हुई, जिससे कारनेगीके माता-पिताकी उदार-हृदयताका परिचय मिलता है। तार पहुंचानेवालोंको रविवार वगैरहकी छुट्टी नहीं मिला करती थी—केवल गरमीमें दो सप्ताहका अवकाश मिलता था। कारनेगी उस अवकाशको ओहियो नदीमें नौ-क्रीड़ामें बिताया करता था। वर्फपर 'स्केटिंग' करनेमें भी चरित्रनायकको बड़ा आनन्द मिलता था। उसके घरके बगलमें ही जाड़ेके दिनोंमें नदीके ऊपर वर्फ जम जाया करता था। शनिवारकी रातमें देरकर घर पहुंचनेपर प्रश्न उठा कि चरित्रनायकको खूब सवेरे उठाकर गिरजा जानेके पहले 'स्केटिंग' करने दिया जाय या नहीं? स्काच माता-पिताओंके सामने इससे बढ़कर कठिन समस्या दूसरी पेश नहीं हुई थी। माताका मत तो स्पष्ट था कि चरित्रनायकको यथेच्छ 'स्केटिंग' करने दिया जाय। पिताने कहा—"हां, वह स्केटिङ्ग करने जा सकता है, पर मुझे आशा है कि वह गिरजा जानेके पहले ही अवश्य लौट आवेगा।" वर्तमान कालमें अमेरिकाके हजार माता-पिताओंमेंसे ९९९ की राय यही होगी। इंगलैण्डमें भी यही बात होगी, पर स्काटलैंड़-के लिये यह नयी बात थी। आजकल ईसाई-जगत्‌में लोगोंका

विचार हो रहा है कि रविवारके दिनको पापोंके प्रायश्चित्तमें नहीं बिताकर उस दिनको झगड़े-झंझटसे दूर रहकर आनन्दमय बनानेकी पूर्ण चेष्टा करनी चाहिये, पर चरित्रनायकके माता-पिता आजसे ७० वर्ष पूर्व ही इस मतके थे। वे अपने समयके अपवादस्वरूप थे—कारण स्काच लोगोंमें रविवारके दिन धार्मिक ग्रन्थोंके पाठको छोड़कर अन्य आमोदपूर्ण कार्य्यमें भाग लेनेकी सख्त मनाही थी।

षष्ठ परिच्छेद

उन्नतिके पथमें

कारनेगोको तारघरमें काम करते हुए १ वर्ष बीत गया। उन दिनों कर्नल जान ग्लास नामक सज्जन तारबाबूका काम करते थे। चरित्रनायकको कार्यकुशल जानकर जब वे कुछ मिनटके लिये बाहर चले जाते तो अपने पीछेमें काम देखनेका भार उसको ही देकर जाते। मि० ग्लासको जनता बहुत चाहती थी और स्वयं भी वे राजनीतिक क्षेत्रमें प्रवेश करनेके अभिलाषी थे। अतएव बीच बीचमें वे घंटों लोगोंसे मिलने चले जाया करते थे और कारनेगीको ही उनका काम संभालना पड़ता था। धीरे धीरे कारनेगी उस कार्यमें भी पटु हो गया। सर्वसाधारणसे तारकी खबरोंको लेना और जो तार बाहरसे आते थे उन्हें 'लड़कों' के द्वारा शीघ्र बंटवानेकी व्यवस्था करनेका काम वह भलीभांति सम्पादन करने लगा।

कार्य कुछ सामान्य नहीं था। विशेषकर सहकारी बालकोंको मनमें यह सोचकर बड़ी ईर्ष्या होती थी कि कारनेगी तार पहुँचानेका काम न करके बाबू बनकर बैठा रहता है। और बालकोंकी तरह कारनेगी भरपेट मिठाई भी नहीं खाता था

और न उनके जलसोंमें शरीक हुआ करता था। वे लोग इस बातको जानते थे कि कारनेगीके घरकी आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं है, पर तो भी बाल-स्वभावके कारण वे चरित्र-नायकसे जला करते थे। पर कारनेगी तो घरकी प्रकृत अवस्था-से परिचित था। वह अपने पिता-माता और अपनी कमाईकी रकमका पूरा लेखा जानता था। घरके खर्चके लिये महीनेमें कितना चाहिये, यह भी उसे भलीभांति मालूम था। इस दशामें वह एक छदाम भी व्यर्थ कैसे खर्च कर सकता था?

चरित्रनायककी माता भी बड़ी संयमशीला थीं। जब कभी कुछ बचत होती थी, वे उसे बड़े यत्नसे जमा करती जाती थीं। अन्तमें तपस्या पूरी हुई। १०० डालर संग्रह होनेपर २० पौंड उदारहृदया श्रीमती हैन्डरसनको भेज दिया गया और इस प्रकार कारनेगी-परिवार ऋणमुक्त हो गया। उस दिनके आनन्दका क्या पूछना है! ऋण तो चुका दिया गया पर कार-नेगी-परिवार उस महिलाका चिर कृतज्ञ बना रहा। चरित्र-नायक डनफरलिन जानेपर बराबर श्रीमती हैन्डरसनका दर्शनकर कृतज्ञता प्रकाश किया करता था।

कारनेगी धीरे धीरे कर्नल ग्लासका सहायक हो उठा। एक शनिवारको कर्नल ग्लास सभी बालकोंको मासिक वेतन बाँट रहे थे। सभी एक पंक्तिमें खड़े थे और कर्नल महाशय सबको एक एककर एक मासका ११। डालर देते जाते थे। कारनेगी-की बारी आनेपर उन्होंने उसे पूछा भी नहीं और दूसरे बालक-

को वेतन दे दिया। कारनेगीके तो होश उड़ गये। वह सोचने लगा, 'हमने ऐसा कौनसा अपराध किया या कर्त्तव्यपालनमें त्रुटि की जिससे मेरा वेतन रोका जा रहा है। अब तो मैं परिवारको मुंह दिखानेके योग्य भी नहीं रहूंगा।' जब सभी लड़के वेतन पाकर चले गये तो कर्नल ग्लासने कारनेगीको एकान्तमें ले जाकर कहा—'तुमने और बालकोंसे अच्छा काम किया है अतएव तुम्हें उनसे अधिक वेतन मिलेगा।' यह कहकर उन्होंने चरित्रनायकके हाथमें १३॥ डालर दे दिये। कारनेगीका माथा चकरा गया। उसे भ्रम हुआ कि कहीं उससे सुननेमें भूल तो नहीं हुई। डालर गिने तो पूरे निकले। हर्षके मारे कारनेगी विह्वल हो उठा। छलांग मारते हुए वह एकदममें घर जा पहुंचा। ११। डालर तो माताको दे दिये और सवा दो डालर अपने पाकेटमें ही रख छोड़े। उसके बाद चरित्रनायकने अरबों उपार्जन किया, पर जैसा आनन्द उस सवा दो डालरसे मिला था, वैसा कभी नहीं मिला। रातमें सोते समय टामको यह रहस्य बताया गया। दोनो भाई मिलकर भविष्यके कार्यक्रमपर विचार करने लगे। कारनेगीने प्रस्ताव किया कि दोनों भाई मिलकर "कारनेगी ब्रदर्स" के नामसे एक फर्म खोलेंगे और भारी व्यापारी बनेंगे और तब माता-पिताको जोड़ीपर बैठाकर शहरमें घुमायेंगे। केवल पितृसवर्गमें ही नहीं दोनों भाइयोंका विचार हुआ कि डनफरलिन जाकर वहीं उन लोगोंकी सवारी निकले। मालूम होता है कि ईश्वरने उन दोनों शुद्ध

आत्माओंकी आन्तरिक इच्छा सुन ली !! कारनेगीका भविष्य-जीवन इसका साक्षी है ।

रविवारके प्रातःकालको जब सभी जलपान करने एक साथ बैठे, उस समय चरित्रनायकने उन डालरोंको निकालकर सबको चकित कर दिया। चरित्रनायकके पिताने स्नेहपूर्ण नेत्रोंसे पुत्रकी ओर देखा और माताकी आंखें प्रेमाश्रुसे छल-छलाने लगीं। उन्हें यह जानकर हर्ष हुआ कि उनका पुत्र उन्नति कर रहा है। बालक कारनेगीके मनपर भी इसका बड़ा प्रभाव पड़ा। उसे संसार स्वर्गमय प्रतीत होने लगा।

तारघरके बालकोंको प्रातःकाल ही आफिसमें झाड़ू देनी पड़ती थी। तारबाबुओंके आनेके पूर्व उन लोगोंको डेमीको 'टिकटिक' करनेका मौका मिला करता था। कारनेगीने इस अवसरको भी हाथसे नहीं जाने दिया और शीघ्र ही तार देनेका काम सीख लिया। दूसरे तारघरोंमें भी कुछ ऐसे ही बालक थे—उनके साथ बातचीत चलने लगी। कुछ नयी बात सीखनेसे उसे व्यवहारमें लानेकी इच्छा लोगोंके हृदयमें उत्पन्न होना स्वाभाविक है और कारनेगी भी इस नियमका अपवाद नहीं था।

एक दिन प्रातःकाल जब चरित्रनायक तारघरमें झाड़ू लगा रहा था, उसी समय पिट्सवर्गके तारघरसे जोरोंकी घंटी बजी। कारनेगीने समझा कि कोई जरूरी खबर होनेके कारण ही इस प्रकार जोरसे घंटी बजायी जा रही है। उसने

साहसकर तार ग्रहण करनेका निश्चय किया और भेजनेवालेसे कहा कि धीरे धीरे खबर भेजनेसे वह उसे ग्रहण कर सकता है। खबर मिल गयी और उसे लेकर कारनेगी पानेवालेके पास दौड़कर पहुंचा आया। मि० ब्रूकसके आनेपर सब हाल उनसे कह दिया। सौभाग्यवश मि० ब्रूकसने चरित्रनायककी बड़ी तारीफ की और उत्साह प्रदान किया, पर भविष्यमें और भी सावधान होने तथा गलतीसे बचनेका आदेश दिया। अब जब कभी तारबाबू अनुपस्थित होता था, कारनेगी ही उसका काम कर दिया करता था। इस प्रकार वह तार देनेमें सुपटु हो गया।

तार बाबू बड़ा सुस्त और काहिल आदमी था। कारनेगीके काम कर देनेपर वह बड़ा प्रसन्न होता था। धीरे धीरे चरित्र-नायकने इस कार्यमें अच्छी प्रवीणता प्राप्त कर ली। कुछ दिनोंके बाद ही पिट्सबर्गसे ३० मील दूर ग्रीन्सबर्ग नामक स्थानमें जासेफ टेलर नामक एक तारबाबूने दो सप्ताहकी छुट्टी लेनी चाही। मि० ब्रूकसने कारनेगीको बुलाकर पूछा, "नेग! क्या तुम ग्रीन्सबर्ग जाकर काम संभाल सकोगे?"

"हां, महाशय, मैं भलीभांति काम कर लूंगा।"

"अच्छा, मैं तुम्हें परीक्षाके तौरपर एकबार भेजता हूं।"

कारनेगी एक मेलबोटमें बैठकर ग्रीन्सबर्गको चला। रास्ता बड़े आनन्दसे कटा। पहली ही बार चरित्रनायक अमेरिकामें घरके बाहर सैर करने निकला था। ग्रीन्सबर्गका होटल ही पहला सार्वजनिक भोजनालय था, जहां कारनेगीने घरसे बाहर

भोजन किया था। यहांका भोजन उसे अमृतके समान सुस्वादु प्रतीत हुआ।

यह सन् १८५२ ई० की बात है। ग्रीन्सवर्गके निकट पेन्सिलवेनिया रेल रोड बन ही रही थी। कारनेगी रोज सवेरे उठकर रेल रोडपर घूमा करता था। पीछे चलकर चरित्रनायक उसी रेलवे कम्पनीका एक श्रेष्ठ कर्मचारी हो गया। तार-विभागमें कारनेगीने यह पहला ही उत्तरदायित्वपूर्ण कार्यभार उठाया था, अतएव वह प्राणपणसे अपने कर्त्तव्यका पालन करनेकी चेष्टा किया करता था। एक दिन बड़े जोरसे आंधी आयी और वर्षा होने लगी। कारनेगी तारके 'कनेक्सन्'के बिलकुल निकट बैठा था। अचानक उसे जोरोंसे बिजलीका धक्का लगा और वह कुर्सीसे दूर जा गिरा। इसके बाद वह बड़ी सावधानीसे रहने लगा। कारनेगीके कामसे सभी सन्तुष्ट हुए और दो सप्ताहके बाद वह विजयी वीरको तरह पिट्सबर्ग लौट आया। शीघ्र ही पदोन्नति हुई। उस समय एक सहायक तार-बाबूकी आवश्यकता हुई और मि० ब्रूकसकी सिफारिशपर चरित्रनायकको ही वह कार्य दिया गया। अब तो उसे मासमें २५ डालर मिलने लगे। कारनेगीने २५ डालर मासिकको परिवारके व्यय-निर्वाहके लिये यथेष्ट समझा था। अपनी कल्पनाको इतना शीघ्र कार्यरूपमें परिणत होते देखकर उसके आनन्दकी सीमा नहीं रही। उस समय कारनेगीकी अवस्था केवल १७ वर्षकी थी।

नवयुवकोंको तारघरमें अनेक बातोंकी शिक्षा मिल सकती है। वहाँ उन्हें सर्वदा लिखने-पढ़ने तथा भिन्न भिन्न प्रकारकी खबरोंसे परिचित होते रहनेका अवसर प्राप्त होता है। कारनेगीने यूरोप और अमेरिकाकी बातोंका जो ज्ञान पुस्तकोंद्वारा प्राप्त किया था उससे उसे बड़ी सहायता मिली। ज्ञान किसी प्रकारका क्यों न हो—वह कभी न कभी किसी काममें जरूर आता है। ज्ञान कभी व्यर्थ नहीं होता। विदेशी समाचारों और जहाजोंके आने-जानेकी खबरोंको ग्रहण करना चरित्रनायकका विशेष कार्य्य था। वह इस कामको पसन्द भी खूब करता था।

उस समय तार भेजने और ग्रहण करनेमें कल्पनासे अधिक काम लेना पड़ता था—कारण तारको व्यवहारमें लाये हुए बहुत ही कम दिन हुए थे और इसमें बहुत कुछ उन्नतिकी गुंजायश थी। कारनेगीकी बुद्धि तीक्ष्ण होनेके कारण वह बड़ी सफलतापूर्वक संवादमें छूटे हुए शब्दोंकी पूर्ति कर दिया करता था। विदेशी खबरोंके सम्बन्धमें ऐसा करना हानिकारक भी नहीं था। कारनेगीका विदेशी ज्ञान बहुत बढ़ गया—खासकर इंगलैण्डकी बातोंसे तो वह पूर्ण परिचित हो गया। दो एक शब्दोंको जानते ही वह पूरा वाक्य लिख दिया करता था और उसकी कल्पना प्रायः ठीक निकला करती थी।

पिट्सबर्गमें उन दिनों जितने समाचारपत्र निकलते थे

सब अपने रिपोर्टरोंको तारघरमें भेजा करते थे और जो विदेशी संवाद आता था, सबकी नकलकर वे ले जाया करते थे। पीछे चलकर सब अखबारोंने मिलकर केवल एक आदमी-को भेजनेका ठीक किया और कारनेगीके साथ यह व्यवस्था हुई कि वह विदेशी संवादोंकी ५ प्रतियां लिखकर दिया करे। इस कार्य्यके लिये उसे सप्ताहमें एक डालर ऊपरी मिलने लगा। इस प्रकार कारनेगी-परिवारकी आय बढ़ने लगी और भावी करोड़पति होनेका स्वप्न कुछ अंशोंमें पूरा होने लगा।

उसी समय कारनेगी "वेबस्टर-साहित्य-सभा" में सम्मिलित हो गया। पिट्सवर्गमें इस सभाकी बड़ी प्रतिष्ठा थी और इसका मेम्बर हो जानेपर चरित्रनायक बड़ा प्रसन्न हुआ। इसके पूर्वही कुछ लड़कोंने मिलकर एक "डिबेटिंग क्लब" स्थापित किया था, जिसमें भिन्न भिन्न विषयोंपर वादविवाद हुआ करता था। एक बार विवादका प्रश्न था—"क्या न्याय-विभागका कर्मचारी भी जनताद्वारा निर्वाचित होना चाहिये?" कारनेगीने इसपर १॥ घंटेतक युक्तिपूर्ण व्याख्यान दिया था। कारनेगीने ऐसे क्लबोंकी बड़ी तारीफ अपने आत्मचरितमें की है। उसके विचारमें प्रत्येक नवयुवकको ऐसी समितियोंमें सम्मिलित होना चाहिये। इससे लाभ यह होता है कि विवाद-के लिये जो विषय स्थिर किया जाता है, उस सम्बंधमें ग्रन्थोंको पढ़नेकी उत्तेजना होती है और विचारको स्पष्टरूपसे लोगोंके सामने प्रकट करनेका अभ्यास होता है। 'वेबस्टर-समिति' में

योगदान करनेके फलसे ही कारनेगीने आत्म-निर्भरता और जनताके समक्ष उपस्थित होकर निर्भीकतापूर्वक भाषण करनेकी शिक्षा प्राप्त की थी। चरित्रनायकने जनताके सामने भाषण करनेके जो दो नियम बताये हैं, उन्हें भावी वक्ताओंको सर्वदा ध्यानमें रखना चाहिये—श्रोताओंके सामने सहज भावसे, बिना आडम्बर किये बात करनी चाहिये और भाषण देते समय सर्वदा अपने व्यक्तित्वको स्मरण रखना चाहिये। बहुतसे लोग भाषण देते समय जनतापर अपना प्रभाव जमानेके लिये कृत्रिम भावोंको प्रकट करते हैं, पर इससे उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। हृदयसे निकली हुई बात श्रोताओंके हृदय-तक जा पहुंचती है। इसके लिये भाषण देते समय उछलने-कूदनेकी जरूरत नहीं है। महात्मा गांधीके भाषणोंको जिन्होंने सुना है, वे उपर्युक्त कथनकी सत्यताका समर्थन मुक्तकण्ठसे करेंगे।

इधर चरित्रनायकने तार ग्रहण करनेकी कलामें भी पार-दर्शिता प्राप्त कर ली। अब वह डेमीकी ध्वनि सुननेके साथ ही खबरोंको लिख लिया करता था। लोग इस बातको आश्चर्यकी दृष्टिसे देखा करते थे। एक बार बड़ी बाढ़ आयी और स्टूवेनविल और ह्वीलिङ्ग नामक स्थानोंके बीच तारका सम्बन्ध विच्छिन्न हो गया। दोनों स्थानोंका अन्तर २५ मील था। कारनेगीको ही काम संभालनेके लिये स्टूवेनविल भेजा गया। वहांसे घंटे घंटेपर तारकी खबर नावके द्वारा भिजवानेका

प्रबन्ध हुआ। पिट्सबर्गसे जो खबरें भेजनी होती थीं, वे नावके द्वारा भेजी जाती थीं। इस प्रकार एक सप्ताहतक काम चलता रहा। उन्हीं दिनों चरित्रनायकके पिता 'टेबल-क्लाथ' बेचनेके लिये हीलिङ्ग जा रहे थे। कारनेगीने बोटके पास जाकर पिताका दर्शन किया। कारनेगीके पिताने किफा-यतके लिये केबिनका टिकट न लेकर साधारण यात्रियों-की तरह डकपर जाना ही स्थिर किया था। चरित्रनायकको यह जानकर क्रोध आया कि उसका पिता क्यों असुविधाके साथ यात्रा कर रहा है। अन्तमें कारनेगीने पितासे जाकर कहा—"पिताजी! मां और आप अब शीघ्र ही गाड़ीपर चढ़-कर घूमने निकला करेंगे।"

कारनेगीके पिता स्वभावतः अल्पभाषी थे, पुत्रके सामने वे उसकी तारीफ इस डरसे नहीं किया करते थे कि लड़का बिगड़ जायगा। इस अवसरपर पिता अपनेको नहीं संभाल सके और प्यारे पुत्रका हाथ प्रेमपूर्वक पकड़कर कहा—

"अन्ड्रा, मुझे तुम्हारे जैसे सुपुत्र पानेका गर्व है।"

इतना कहकर वे कुछ और नहीं बोल सके और उनके नेत्रोंसे प्रेमाश्रु टपकने लगे। कारनेगीने आंसू पोंछ डाले और पितासे विदा होकर अपने कार्य्यालयको वापस गया। अनेक वर्षोंतक कारनेगी उस पवित्र वाक्यको स्मरणकर अपने-को धन्य समझता था।

पिट्सबर्ग लौटनेपर कारनेगीकी दोस्ती "टामस ए०

स्काट" नामक सज्जनसे हुई। वे पेन्सिल वेनिया रेलरोडके निरीक्षक बनकर आये थे। उन्हें अपने उच्चाधिकारियोंके साथ बातचीत करनेके लिये तारकी ज्यादा जरूरत हुआ करती थी और इस कामके लिये रातको भी वे तारघर पहुंचा करते थे। कारनेगी प्रायः रातको तारघरमें रहता था और मि० स्काट-का काम कर दिया करता था। मि० स्काटने एक दिन कारनेगीको अपना क्लर्क और तारबाबू बनानेका विचार प्रकट किया। चरित्रनायक चटपट राजी होगया। सन् १८५३ ई० की १ ली फरवरीको वह ३५ डालर मासिकपर नवीन पदपर नियुक्त हुआ। २५ डालरसे ३५ डालर मासिक पाकर चरित्रनायकके हर्षकी सीमा नहीं रही। उन दिनों एकाएक दश डालर मासिककी तरक्की असाधारण बात समझी जाती थी। एक सार्वजनिक तारघर मि० स्काटके आफिसके बाहरी भागमें खोल दिया गया और जनताके कामोंमें बिना व्याघात पहुंचाये 'तार' के द्वारा खबर भेजने-की उन्हें पूरी स्वतन्त्रता दी गयी। इस प्रकार हमारा चरित्र-नायक दिन दिन उन्नतिके पथमें अग्रसर होने लगा।

सप्तम परिच्छेद
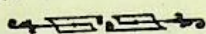
रेलकी नौकरी

तारघरके कामको छोड़कर कारनेगीने विस्तृत कार्यक्षेत्र-में प्रवेश किया, पर यह परिवर्तन आरंभमें उसे रुचिकर नहीं लगा। उस समय चरित्रनायकने १८ वां वर्ष समाप्तकर १९ वें वर्षमें प्रवेश ही किया था। इस बीचमें उसने अपने जीवनमें कभी एक भी अपशब्दका प्रयोग नहीं किया था और भले-मानुसोंके बीचमें लालित-पालित होनेके कारण उसे अपशब्दोंके सुननेका भी मौका नहीं मिला था। पर इस नये काममें उसे सब प्रकारके आदमियोंसे काम पड़ा। मि० स्काटका आफिस ही ब्रेकमैन और ड्राईवर आदिका अड्डा था। वे लोग वहां आकर तरह तरहकी बातें किया करते और अपशब्दोंका भी प्रयोग करते थे। कारनेगीने जीवनमें पहलेपहल ऐसी बातें सुनीं, पर इसका चरित्रनायकपर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा। स्वर्गसमान घरके पवित्र संसर्गसे और चरित्रवान युवक मित्रोंके सहवास-से इन बुराइयोंने चरित्रनायकके मनपर कुछ भी असर नहीं पहुंचाया। बुराईसे भी कभी कभी भलाई हुआ करती है। कारनेगीके मनमें उसी समयसे तम्बाकूके व्यवहारसे घृणा उत्पन्न हुई, अपशब्दोंके सुननेसे सदाके लिये उसे ऐसे शब्दोंसे

विरक्ति हो गयी और यह अभ्यास उसे जीवनपर्य्यन्त बना रहा। यह बात नहीं थी कि आफिसमें आनेवाले सभी दुश्चरित्र थे। उन दिनों तम्बाकू पीने, गालीगलौज करने और बात बातमें शपथ खानेकी आदत साधारण लोगोंमें सामान्य बात थी। रेलकी नयी सड़क बन रही थी और बहुतसे साधारण श्रेणीके मनुष्य उसमें काम कर रहे थे। अन्तमें मि० स्काटने अपने लिये एक दूसरे आफिसका प्रबन्ध किया और सब गोलमाल मिट गया।

एकबार मि० स्काटने कारनेगीको मासिक वेतनके लिये चेक वगैरह लानेके लिये अलटूना नामक स्थानमें भेजा। उस समयतक अलगेनी पर्व्वततक रेलकी सड़क नहीं बन सकी थी और कारनेगीको पैदल ही वहांतक यात्रा करनी पड़ी। इस यात्रामें बड़ा आनन्द आया। अलटूना पहुंचकर चरित्रनायकने रेलरोडके जनरल सुपरिन्टेन्डेन्ट मि० लम्बर्टसे भेंट की। उसका मित्र राबर्ट पिटकर्न मि० लम्बर्टके सेक्रेटरीका काम करता था। मि० लम्बर्टकी प्रकृति 'स्काट' से भिन्न प्रकारकी थी। वे उतने मिलनसार नहीं थे, पर मुलाकातके बाद जब लम्बर्ट साहबने चरित्रनायकको चायपानका निमन्त्रण दिया तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। धड़कते हुए दिलसे कारनेगीने निमन्त्रण स्वीकार किया और ठीक समयपर उपस्थित हुआ। श्रीमती लम्बर्टने बड़ा शिष्टाचार किया। मि० लम्बर्टने कारनेगीका परिचय यह कहकर दिया—"मि० स्काटका

'अन्डी' यही नवयुवक है।" मि० स्काटका प्रियपात्र होनेकी बात सुनकर चरित्रनायकको बड़ा आनन्द मिला था।

इसी यात्राके समय एक ऐसी घटना हो गयी थी, जिससे कारनेगीके जीवनमें गहरा धक्का लगता। चेक वगैरह लेकर जब दूसरे दिन वह पिट्सवर्ग चला तो रास्तेमें सड़ककी जांच करनेवाले इञ्जिनपर चढ़ लिया। नयी सड़क होनेके कारण बीच बीचमें जोरोंका धक्का लगा करता था। एकबार धक्का लगनेपर कारनेगीने पाकेट टटोला तो देखा कि चेक वगैरहका कहीं पता ही नहीं है। अब तो कारनेगीके होश उड़ गये! वह आया था तो चेक लेने, पर राहमें उसे खोकर मि० स्काटको किस तरह मुंह दिखावेगा। कारनेगीको अपना भविष्य अन्धकारमय प्रतीत होने लगा। अन्तमें साहसकर उसने इञ्जीनियरसे सभी बातें खोलकर कहीं, उससे इञ्जिनको फिर पीछे लौटा ले जानेका अनुरोध किया। इञ्जीनियर बेचारा बड़ा भला आदमी था। इञ्जिन पीछे लौटाया गया और कारनेगी बड़े ध्यानसे अपने पैकेटको देखने लगा। एक बड़ी नदीके किनारे—जलसे कुछ ही दूर 'पैकेट' दिखायी पड़ा। कारनेगीको तो अपनी आखोंपर विश्वास ही नहीं हुआ। झटसे वह इञ्जिनसे उतरा और दौड़-कर 'पैकेट' को उठा लिया। सभी चीजें ठीक थीं। इसके बाद तो पिट्सवर्ग पहुंचनेतक वह उस पैकेटको मुट्ठीसे दबाये हुए ले गया। इस घटनाको केवल इञ्जीनियर और ड्राईवर हीने जाना। उन्होंने इसको गुप्त रखनेकी प्रतिज्ञा की। इसके बहुत

दिनोंके बाद कारनेगीको इस घटनाको प्रकाशित करनेका साहस हुआ। एक सामान्य घटना कभी कभी मनुष्य-जीवनको किस प्रकार विपद्ग्रस्त कर सकती है—यह इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। मान लीजिये कि पैकेट नदीकी धारामें गिर पड़ता, फिर तो उसका कहीं पता भी नहीं मिलता। कारनेगी-को असावधानताका सर्टिफिकेट मिलता और कई वर्षका घोर परिश्रम व्यर्थ जाता। वर्षों मेहनत करनेपर फिर कारनेगी अपने उच्च कर्मचारियोंका विश्वासपात्र मुश्किलसे बन सकता। हो सकता था कि शोक और लज्जासे पीड़ित होकर कारनेगी आत्महत्या ही कर बैठता। ऐसी दशामें क्या भयङ्कर परिणाम होता उसकी कल्पना पाठक सहजमें ही कर सकते हैं। कार-नेगीके ऊपर इस घटनाका भी खूब प्रभाव पड़ा। अपने भविष्य-जीवनमें भाग्यलक्ष्मीके सुप्रसन्न होनेपर कारनेगीने किसी नव-युवकके दो एक भारी अपराध करनेपर भी उसपर कभी क्रोध नहीं किया। इसके बाद जब कभी चरित्रनायक उस राह होकर यात्रा करता था तो उस स्थानको ध्यानपूर्वक देख लिया करता था, जहां वह पैकेट गिर पड़ा था। उसको मालूम होता कि वह स्थान स्पष्ट शब्दोंमें कह रहा है—

"प्यारे लड़के! तुम्हारे देवता प्रसन्न थे! पर फिर ऐसी भूल न करना।"

उसी अवस्थामें चरित्रनायक 'गुलामीप्रथा' का पूरा विरोधी था और २२ वीं फरवरी सन् १८५६ ई० में पिट्सवर्गमें

प्रजातन्त्रदलकी ओरसे गुलामीके विरोधमें जो सभा हुई थी, उसमें कारनेगीने भी बड़े उत्साहसे भाग लिया था। रेलकी सड़कमें काम करनेवाले मजूरोंकी एक समिति भी चरित्र-नायकने प्रतिष्ठित की थी। न्यूयार्कके 'ट्रिव्यून' नामक साप्ताहिक पत्रमें भी वह बराबर लेख भेजा करता था। इस पत्रने दासत्व-प्रथाके विरोधमें लोकमतको खूब जागृत किया था। कारनेगीको पहलेपहल उस स्वतन्त्रताप्रिय पत्रमें अपना लेख देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई थी। वह वर्षों उस 'ट्रिव्यून' को रखे रहा।

इसके थोड़े दिनोंके बाद ही रेलवे कम्पनीने अपना तार लगाया। इसका काम करनेके लिये बहुतसे नये मनुष्योंकी आवश्यकता हुई और कारनेगीने अपने परिचितों और मित्रोंको काम सिखाकर उसमें भरती कराया। पहलेपहल कारनेगीने ही इस विभागमें स्त्रियोंको नियुक्त करवाया। चरित्रनायककी चचेरी बहन मिस मेरिया होगन प्रथम महिला थी, जिसने अमेरिकामें तारघरमें काम किया था। कारनेगीका अनुभव था कि नवयुवतियां तारघरमें पुरुषोंसे अच्छा काम कर सकती हैं।

मि० स्काटकी प्रकृति अत्यन्त मनोहर थी और शीघ्र ही कारनेगीकी भक्ति उनपर हो गयी। वह उन्हें बड़ी श्रद्धाकी दृष्टिसे देखा करता था। उनके अधीन चरित्रनायक ऐसे कामोंको भी सीखने लगा जो उसके आफिसके कार्यक्रमसे बाहर थे। एकबार एक ऐसी घटना घटी, जिसने चरित्रनायक-की उन्नतिका द्वार और भी उन्मुक्त कर दिया।

घटना यह है—उन दिनों रेलकी प्रायः एक ही लाइन थी। गाड़ी छोड़नेके पहले तारसे खबर दे देना आवश्यक होता था जिससे ट्रेनोंमें टक्कर न लगने पावे। केवल सुपरिन्टेन्डेन्ट ही गाड़ी छोड़नेकी आज्ञा दिया करता था। मि० स्काटको कभी कभी रातमें जाकर गाड़ियोंका पथ प्रशस्त करना पड़ता था। एक दिन सवेरे आफिस पहुंचनेपर कारनेगीने देखा कि मि० स्काट नहीं हैं। पूर्वी विभागमें कोई दुर्घटना हो जानेके कारण उधरसे आनेवाली 'एक्सप्रेस' के आनेमें देर हो रही थी और पश्चिमसे आनेवाली पैसेंजर आगे बढ़ती आ रही थी। माल-गाड़ियां सभी बगलमें खड़ी थीं। कारनेगीने कुछ देर मि० स्काटकी राह देखी। उनको न आते देखकर चरित्रनायकने साहसपूर्वक मि० स्काटका कार्य करना आरम्भ किया। उन्हींके नामपर आर्डर देकर माल और पैसेंजर ट्रेनोंको स्टेशन स्टेशन भेजता गया। सभी काम ठीक रीतिसे हो रहा था। इतनेमें ही मि० स्काट आ पहुंचे। आते ही पहला प्रश्न उन्होंने पूछा—
"कहो! क्या हाल है?"

जल्दीमें वे चरित्रनायकके पास पहुंचे और पेन्सिल लेकर आर्डर लिखने बैठे। कारनेगीने डरते डरते कहा—

"मि० स्काट! मैंने आपको बहुत खोजा, पर आपका पता न पाकर आप हीके नाममें सवेरेसे आज्ञा भेज रहा हूं।"

"क्या सब काम ठीक चल रहा है? अच्छा, पूरबकी ओरसे आनेवाली एक्सप्रेस कहां है?"

कारनेगीने प्रत्येक ट्रेनकी स्थिति दिखला दी। सभी बातें ठीक थीं। एक सेकण्डतक मि० स्काटने कारनेगीको देखा, पर कारनेगी उनकी ओर नहीं देख सका। उसे मालूम नहीं था कि मि० स्काट क्या कहेंगे। मि० स्काटने कुछ बोलनेके पूर्व फिरसे सभी ट्रेनोंकी स्थितिको ध्यानपूर्वक देखा। फिर भी वे कुछ नहीं बोले और धीरेसे अपनी जगहपर जा बैठे। मि० स्काट-ने कारनेगीको बुरा-भला कुछ भी नहीं कहा, पर इसके बाद वे कुछ दिनतक प्रातःकालमें नियमित रूपसे आने लगे। चरित्र-नायकने भी इस घटनाकी चर्चा किसीसे नहीं की। कोई इस बातको नहीं जानता था कि मि० स्काटने आज्ञा नहीं दी थी। मि० स्काटने ही एक दिन माल-विभागके प्रबन्धकर्त्ता मि० फ्रान्सिसकससे कहा—

"आप जानते हैं, उस स्काच छोकड़ेने क्या किया था?"

"नहीं, तो!"

"यदि उस दिन उसने मेरी अनुपस्थितिमें मेरे नामसे आज्ञा देकर ट्रेनोंको न चलाया होता तो मेरी बड़ी बदनामी होती।"

"तो क्या उसने सब काम ठीक ठीक किया?"

"अरे! बिलकुल ठीक किया।"

इस वार्तालापकी सूचना मिलनेपर कारनेगीका मन शान्त हुआ। इसके बाद तो कारनेगी सभी मौकोंपर साहसपूर्वक

काम करने लगा। मि० स्काटने भी धीरे धीरे कारनेगीपर यह भार छोड़ दिया।

उस समय पेन्सिलवेनिया रेलवेके प्रेसिडेन्ट मि० जान एडगर टामसन थे। वे बड़े अल्पभाषी थे। एक दिन एकाएक मि० स्काटके तारघरमें आकर उन्होंने कारनेगीकी पीठ ठोकी और "स्काटका एन्डी" कहकर उसे प्रेमकी दृष्टिसे देखा। कारनेगीको बड़ा आश्चर्य हुआ। पीछे उसे मालूम हुआ कि मि० टामसनने भी चरित्रनायककी वीरताका हाल सुना था। बड़े लोगोंकी दृष्टिमें आनेसे ही नवयुवकोंके जीवनकी उन्नति-का द्वार उन्मुक्त हो जाता है और जीवनयुद्धपर आंशिक विजय उसी समय प्राप्त हो जाती है। प्रत्येक नवयुवकको अपने कार्य-क्षेत्रसे बाहरका कार्य भी करना चाहिये, जिससे उसके उच्चा-धिकारियोंकी दृष्टि विशेषकर उसीके ऊपर पड़ सके।

इसके कुछ ही दिनोंके बाद मि० स्काट दो सप्ताहकी छुट्टी लेकर गये और मि० लम्बर्टसे सिफारिश की कि चरित्र-नायकको ही उनके स्थानमें कार्य्य करनेकी अनुमति दी जाय। कारनेगी उस समय २० वर्षका था और मि० स्काटका यह सिफारिश करना बड़े साहसका काम था। कहना नहीं होगा कि मि० स्काटकी प्रार्थना स्वीकृत हुई और कारनेगीने उनका कार्यभार संभाल लिया। इस बीचमें केवल एक दुर्घटना हुई। जिसकी असावधानीसे दुर्घटना हुई थी, उसे कठिन दण्ड दिया गया। मि० स्काटने भी आकर मामलेकी जांच की और कार-

नेगीके भावको समझकर सजाको बहाल रखा। पीछे चलकर चरित्रनायकके मनमें कठिन दण्ड देनेका बहुत दुःख हुआ और बहुत दिनतक बना रहा।

इस बीचमें कारनेगी-परिवारकी आर्थिक अवस्था बहुत कुछ सुधर गयी थी। कारनेगीको अब मासमें ४० डालर मिला करते थे। मि० स्काटने अपनी इच्छासे ही ५ डालरकी वेतन-वृद्धि कर दी थी। अबतक कारनेगी भाड़ेके घरमें ही रहता था। अब सबका विचार हुआ कि जिस मकानमें वे लोग रहते हैं उसीको खरीद लिया जाय। जिस मकानमें कारनेगीका चचा होगन रहता था, वह भी खाली हो गया था—वे लोग दूसरे मकानमें चले गये थे। उस चार कमरेवाले मकानको भी कारनेगी-परिवारने खरीद लिया और कारनेगीके अनुरोधसे मि० होगन भी पीछे आकर उसी मकानमें रहने लगा। मकान और जमीनका दाम ७०० डालर हुआ। १०० डालर तो नकद दे दिये और बाकी दाम किस्तपर अदा किया जाने लगा। कुछ ही दिनोंमें ऋण अदा हो गया, पर इसी बीचमें कारनेगी-परिवारपर अनभ्र वज्रपात हुआ।

२ री अक्टूबर सन् १८५५ ई० को चरित्रनायकके पूज्य पिताका स्वर्गवास हो गया। परिवारके लोगोंके सामने कठिन समस्या उपस्थित हुई। जो कुछ बचाखुचा था, सब औषधिकी व्यवस्थामें स्वाहा हो गया था। हाथ बिलकुल खाली पड़ गया था। हिम्मत बांधकर कारनेगी और उसकी वीर माताने जीवन-

युद्धमें भाग लिया और अध्यवसायके द्वारा जैसी सफलता प्राप्त की, वह मनुष्यके जीवनमें एक असाधारण घटना है।

मनुष्यके जीवनमें कभी कभी ऐसा काल उपस्थित हो जाता है, जब सहायताकी आवश्यकता होनेपर उसे कोई सहायता नहीं देना चाहता, पर जब किसीकी सहायताकी आवश्यकता नहीं रहती, उस समय लोग सहायता करनेके लिये दौड़ पड़ते हैं। जिस समय कारनेगीके पिताकी मृत्यु हुई थी, उस समय मि० डैविड मैकक्रैन्डलेस स्वेडेनवोर्जियनसमितिके प्रमुख सदस्य थे। उन्होंने चरित्रनायकके माता-पिताके आदर्श चरित्रके सम्बन्धमें पहलेसे ही सुन रखा था। समितिके अधि-वेशनके समय वे लोग आपसमें दो एक बात कर लिया करते थे, पर कभी उन लोगोंमें घनिष्ठता उत्पन्न नहीं हुई थी। कार-नेगीकी चाची एटकिनसे मि० डैविडकी अच्छी घनिष्ठता थी। कारनेगीके पिताकी मृत्युके बाद उन्होंने श्रीमती एटकिनसे कहला भेजा कि यदि कारनेगी-परिवारको किसी प्रकारकी सहायताकी आवश्यकता हो तो वे बड़ी प्रसन्नतासे सहायता देंगे। यद्यपि कारनेगीकी माताने बड़ी भद्रतापूर्वक सहायताको अस्वीकार कर दिया, पर जीवनपर्यन्त वह उनकी कृतज्ञ बनी रहीं। कारनेगीका इसके बाद इस बातपर पूर्ण विश्वास हो गया कि जो यथार्थमें सहायताके पात्र होते हैं, उन्हें ऐसे विपद-पूर्ण अवसरोंपर अवश्य सहायता मिला करती है। संसारमें ऐसे बहुतसे सहृदय मनुष्य हैं, जो असहाय और विपत्तिमें मग्न

मनुष्योंको सहायता देनेके लिये बराबर अवसर ढूंढा करते हैं। पर जो लोग स्वयं अपनी सहायता करते हैं, उन्हें दूसरोंकी सहायताकी कमी नहीं रहती। इस चरित्रलेखकका भी अपना अनुभव ठीक इसी प्रकारका है।

पिताकी मृत्युके बाद चरित्रनायकपर परिवारका बिलकुल बोझ आ पड़ा। उसकी मां जूतोंकी मरम्मत करनेका काम करती ही रही। 'टाम' स्कूलमें पढ़ता था और कारनेगी मि० स्काटके साथ रेलवेमें काम करता रहा। इसी समय कारनेगीपर लक्ष्मीकी कृपादृष्टि पड़ी। मि० स्काटने एक दिन उसे पूछा कि उसके पास ५०० डालर हैं या नहीं। ५०० डालर होनेसे उसे एक नफेके रोजगारमें लगाया जा सकता है। उस समय कारनेगीकी पूंजी ५ डालरसे अधिक नहीं थी, पर चरित्रनायक इस मौकेको हाथसे जाने देना भी नहीं चाहता था। साहसकर जवाब दे दिया—"अच्छा, मैं इसके लिये प्रबन्ध करता हूं।" इन डालरोंसे एक कम्पनीके कुछ शेयरोंको खरीदनेका विचार हुआ। घर आकर कारनेगीने मातासे सब हाल कह सुनाया। वह वीर माता भला कब हिम्मत हारनेवाली थी। हाल हीमें मकानवालेको बाकी ५०० डालर दिये जा चुके थे। अब वे लोग फिर उसी मकानपर ५०० डालर कर्ज ले सकते थे। घर बंधक रखकर ५०० डालर लिये गये और मि० स्काटने दश शेयर कारनेगीके नामसे खरीद लिये। दुर्भाग्यवश १०० डालर और भी 'प्रिमियम' देना था, पर मि० स्काटने ठीक कर दिया कि

सुविधानुसार १०० डालर दे दिये जायंगे, इसके लिये कुछ जल्दी नहीं है। ऐसा करना कारनेगीके लिये आसान बात थी।

कारनेगीने अपने जीवनमें पहलेपहल व्यवसायक्षेत्रमें प्रवेश किया। उन दिनों कम्पनियां मासिक 'डिविडेन्ड' दिया करती थीं। एक दिन प्रातःकाल कारनेगीने अपने डेस्कपर एक सादा लिफाफा पड़ा देखा, जिसपर बड़े बड़े स्पष्ट अक्षरोंमें "श्रीमान ऐन्ड्रू कारनेगीकी सेवामें" लिखा हुआ था। धड़कते हुए दिलसे कारनेगीने उस लिफाफेको खोला। उसमें न्यूयार्ककी एक बैंकके नामसे १० डालरका चेक था। कारनेगीने अपने आत्मचरितमें लिखा है—"मैं उस चेकको जीवनपर्यन्त स्मरण रखूंगा। पूंजीके व्यवसायमें लगानेपर वही पहली बार मुझे नफेके रूपमें मिला था। ये डालर मेरे पसीनेकी कमाईके नहीं थे। मैंने मनमें सोचा—यह मुर्गी तो सोनेका अंडा देती है।"

रविवारके तीसरे पहरको कारनेगीका मित्रमंडल प्राकृतिक शोभापूर्ण स्थानोंमें व्यतीत किया करता था। कारनेगीने उस चेकको अपने मित्रोंको दिखाया। मित्रमंडलीपर इसका बड़ा प्रभाव पड़ा। किसीको ऐसे लाभपर विश्वास नहीं होता था। इसके बाद सब मित्रोंने मिलकर कुछ पूंजी एक व्यवसायमें लगायी थी और जो कुछ थोड़ा नफा होता था उसे सब आपसमें बांट लिया करते थे।

अबतक कारनेगीके परिचितोंकी संख्या अंगुली हीपर गिननेयोग्य थी। मालगाड़ीके प्रबन्धकर्त्ता मि० फ्रांसिसकसकी

धर्मपत्नी कारनेगीको बराबर अपने घरमें बुलाया करतीं, पर कारनेगी मारे लाजके वहाँ नहीं जाता। वर्षोंतक आग्रह करनेपर भी चरित्रनायकने उस महिलाके यहां निमन्त्रित होकर भी भोजन नहीं किया। दूसरेके घरमें जानेमें कारनेगीको अच्छा नहीं लगता था। मि० स्काटके बहुत कहने-सुननेपर वह उनके साथ होटलमें जाकर खाया करता था। कारनेगीने अलटूनामें मि० लम्बर्ट और पिट्सवर्गमें केवल मि० फ्रान्सिसकसके गृहमें प्रवेश किया था। तबतक कभी कारनेगी रातमें किसी अपरिचित गृहमें नहीं रहा था। एकबार 'पिट्सवर्ग जर्नल' में एक लेख लिखनेके कारण पेन्सिलवेनिया रेलरोडके प्रधान सलाहकार मि० स्टोक्सने कारनेगीको अपने गृहमें निमन्त्रित किया था। घटना यों है—कारनेगीकी आदत बराबर समाचारपत्रोंमें लेख लिखते रहनेकी थी। सम्पादक बननेकी धुन उसे लड़कपनमें खूब थी। एकबार कारनेगीने 'पिट्सवर्ग जर्नल' में पेन्सिलवेनिया रेलवे कम्पनीके प्रति जनताके भावोंके सम्बन्धमें एक लेख लिख भेजा। लेख भेजनेवालेका नाम नहीं दिया गया। दूसरे दिन कारनेगीको यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसके लेखको एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। मि० रावर्ट रिडल सम्पादक थे। लेख पढ़कर मि० स्टोक्सने मि० स्काटको तार भेजकर कहा कि वे मि० रिडलसे लेखकका पता लगावें। मि० रिडलको तो खुद लेखकका नाम मालूम नहीं था—वे कहांसे बताते। पर कारनेगीको डर हुआ कि यदि मि० स्काट स्वयं

सम्पादकके पास पहुंच जायंगे तो मि० रिडल अवश्य ही हस्त-लिखित कापी उन्हें दिखा देंगे और उस दशामें मि० स्काट कारनेगीकी हस्तलिपि अवश्य ही पहचान जायंगे, अतएव कारनेगीने सभी बातें खोलकर मि० स्काटसे कह दीं। मि० स्काटको विश्वास ही नहीं हुआ। उन्होंने भी लेख पढ़कर आश्चर्य्य प्रकट किया था। इसके बाद तो मि० स्टोकसने अगले रविवारको कारनेगीको आमन्त्रित किया और वे दोनों गाढ़ मित्रताके सूत्रमें आबद्ध हो गये।

मि० स्टोकसके घरकी सजावटने कारनेगीको मुग्ध कर दिया। सबसे बढ़कर प्रभाव उसके उपर एक संगमर्मर पर लिखे स्मरण-पत्रसे पड़ा जो उनके पुस्तकालयमें रखा हुआ था। उसमें निम्नलिखित वाक्य लिखे हुए थे—

"जो तर्क करना नहीं जानता, वह मूर्ख है। जो तर्क नहीं करता, वह अन्धविश्वासी है और जो तर्क करनेका साहस ही नहीं करता वह गुलाम है"। कारनेगीके हृदयपर इन वाक्योंने बिजलीकी तरह असर किया। उसने मन ही मन निश्चय किया—"मैं भी एक पुस्तकालयकी प्रतिष्ठा करूंगा और उसमें भी ये ही वाक्य लिखे रहेंगे।" न्यूयार्क और स्किवोमें जो पुस्तकालय कारनेगीने स्थापित किये, उनमें उपर्युक्त वाक्य लिखे हुए हैं।

इस घटनाके कुछ वर्षोंके बाद एक रविवारके दिन श्री कारनेगी मि० स्टोक्सके यहां गये। उस समय वे पेन्सिल-

वेनिया रेलवेके पिट्सवर्ग विभागके सुपरिन्टेन्डेन्ट हो गये थे। दास-प्रथाको लेकर उत्तर और दक्षिण अमेरिकामें गृहयुद्ध प्रारंभ हो गया था। मि० स्टोक्स 'डेमोक्रेट' दलके थे और उत्तरी संयुक्त राज्य जो जबर्दस्ती दक्षिण भागको अपनेमें मिलाये रखना चाहता था, उसके वे विरोधी थे। उस दिन बातचीतमें ही मि० स्टोक्सने कुछ ऐसे शब्दोंका प्रयोग किया, जिनको सुनकर कारनेगी आपेमें नहीं रहे और बोल उठे— "मि० स्टोक्स, आप जैसे लोगोंको हमलोग डेढ़ महीनेमें फांसी-पर चढ़ा देंगे।" मि० स्टोक्सने हंसते हुए अपनी स्त्रीसे कहा— "नैन्सी, नैन्सी! देखो, यह स्काच छोकड़ा कहता है कि वह हमलोगोंको डेढ़ मासमें फांसीपर चढ़ा देगा।"

उन दिनों आश्चर्य्यजनक घटनायें हुआ करती थीं। कुछ ही दिनोंके बाद कारनेगी युद्धसचिवके आफिसमें चले आये और मि० स्टोक्सने स्वयंसेवकदलमें भरती होनेके लिये आवेदन-पत्र भेजा। कारनेगीने चेष्टाकर मि० स्टोक्सको मेजरका पद दिला दिया और मि० स्टोक्सने उत्तरीप्रान्तकी ओरसे "अमेरिकन झंडे" की एकताके लिये युद्धमें भाग लिया।

अष्टम परिच्छेद

उन्नतिके पथमें

उत्साह सम्पन्नमदीर्घ सूत्रं, क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम् ।
शूरंकृतज्ञं दृढ़ निश्चयं च लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः ॥

सन् १८५६ ई० में मि० स्काट पेन्सिलवेनिया रेलवेके जेनरल सुपरिन्टेन्डेन्ट बनाये गये और अलटूना जाते समय चरित्रनायकको भी अपने साथ लेते गये। उस समय कारनेगी-की अवस्था २३ वर्षकी थी। पितृस्वर्ग त्याग करते समय कारनेगीको अवश्य ही बहुत दुःख हुआ, पर कोई भी घटना इनकी उन्नतिके मार्गमें रोड़े डालनेमें समर्थ नहीं थी। उनकी माताने भी इसमें सम्मति दे दी। फिर मि० स्काटको श्रीकारनेगी गुरुवत् मानते थे। उनके कहनेपर वे आगमें भी कूदनेके लिये तैयार थे।

मि० स्काटके एकाएक सुपरिन्टेन्डेन्ट हो जानेसे कुछ लोगोंका हृदय जल उठा। उन्हें कार्य्यभार संभालनेके साथ ही एक भारी हड़तालसे सामना करना पड़ा। उससे पूर्व ही उनकी सहधर्मिणीका देहान्त हो चुका था और उनका जीवन सूना हो रहा था। अलटूनामें उनका परिचित भी कोई नहीं

था। कारनेगी ही उनके एकमात्र सहायक और मित्र थे। कुछ दिनतक तो दोनों साथ ही एक होटलमें ठहरे। पीछे मि० स्काटने अपने बालबच्चोंको पिट्सवर्गसे बुला लिया। कारनेगी भी उनके अनुरोधसे उन्हींके साथ एक ही कमरेमें रहने लगे।

हड़बालकी अवस्था भीषण होने लगी। एक रात लोगोंने चरित्रनायकको सोतेसे उठाकर मालगाड़ीके कर्मचारियोंके हड़ताल करनेकी सूचना दी। लाइन बिलकुल रुक गयी थी और गाड़ियोंका आना-जाना वन्द हो गया था। मि० स्काट उस समय गहरी नींदमें सो रहे थे, उनको उस समय जगाकर कहना कारनेगीको बड़ा कठिन मालूम हुआ—कारण मि० स्काट दिनभरके थकेमांदे थे। आखिर मि० स्काटकी नींद टूटी और कारनेगीने हड़तालकी जांच करने और निपटारा करनेके लिये जानेकी इच्छा प्रकट की। अर्द्ध-निद्रित अवस्थामें ही मि० स्काटने अनुमति दे दी। कारनेगी कार्य्यालयमें गये और मि० स्काटके नामसे बातचीतकर हड़तालियोंको दूसरे दिन अलटूना आनेका आदेश दिया। अन्तमें कारनेगीके प्रयत्नसे कर्मचारियोंने कार्य्य शुरू किया और हड़ताल समाप्त हो गयी।

केवल ड्राईवरोंने ही हड़ताल नहीं की थी वरन् दूकानदारोंने भी उनका साथ देनेका निश्चय कर लिया था। इसकी सूचना कारनेगीको विचित्र रूपसे मिली। एक रातको जब वे अन्ध-

कारमें ही घरकी ओर लौट रहे थे, उसी समय एक मनुष्य इनके पास आ पहुंचा और इनसे कहा—

"मैं नहीं चाहता कि लोग मुझे आपके साथ बात करते हुए देख लें, पर आपने एकबार मेरे ऊपर बड़ी दया की थी और उसी समय मैंने प्रतिज्ञा की थी कि अवसर आनेपर मैं आपकी सहायता अवश्य करूंगा। आपकी सहायतासे मैं इस समय अलटूनामें मिस्त्रीका काम कर रहा हूं। याद कीजिये, मैंने पिट्सबर्गमें आपके पास मिस्त्रीके कामके लिये आवेदनपत्र भेजा था। आपने मेरे आवेदनपत्रको पढ़कर और मेरी सिफारिशोंको देखकर मुझे अलटूनामें काम दिला दिया था। अब मैं अपने बालबच्चोंके साथ चैन कर रहा हूं। अच्छा, मैं आपके लाभकी एक बात बताऊंगा—अगले रविवारको हड़ताल करनेके लिये सभी दूकानदार एक प्रतिज्ञापत्रपर हस्ताक्षर कर रहे हैं।"

कारनेगीने प्रातःकाल ही मि० स्काटको सभी बातें कह सुनायीं। मि० स्काटने एक नोटिस छपाकर रेलवेके सभी दूकानदारोंके पास भेज दिया कि जिन लोगोंने प्रतिज्ञापत्रपर हस्ताक्षर किये हैं, वे डिसमिस कर दिये जाते हैं; इसलिये वे आफिसमें आकर अपनी तनखाह ले लें। उसी बीचमें उन लोगोंके नामकी एक फिहरिस्त भी कारनेगीको मिल गयी थी, जिन्होंने हड़तालमें भाग लेनेके लिये हस्ताक्षर किये थे। दूकानदारोंमें बड़ी हलचल मची और हड़तालका अन्त हो गया।

कई मनुष्योंने समय समयपर चरित्रनायकको उस मिस्त्रीके समान ही सहायता दी थी। साधारण मनुष्योंके साथ थोड़ा भी दयाका व्यवहार करनेसे वे विपत्तिके समय बड़े काममें आते हैं। उनकी सहायता विना मांगे निकलती है। शुभ-कार्य्योंका कभी नाश नहीं होता। कारनेगीका स्वभाव साधारणसे साधारण मनुष्यके साथ भी दयाका व्यवहार करनेका था। इसके बदलेमें समय समयपर उन्हें जो सहायता मिलती, उससे उनको बड़ा आनन्द मिलता था। ऐसी सहायता सर्वदा निःस्वार्थ हुआ करती है और यदि प्रत्युपकार करनेवाला अत्यन्त साधारण व्यक्ति हो तो आनन्दकी मात्रा शतगुण हो जाती है। "दरिद्रान्भर कौंतेय, मा प्रयच्छे-श्वरे धनम्"। दरिद्रां—असहायोंको सहायता करनेमें जो आनन्द मिलता है, वह लखपतियोंकी सहायता करनेसे कहीं बढ़कर है।

उसी समय एक और घटना हुई। रेलवे कम्पनीपर किसीने नालिश कर दी और उस मुकदमेमें कारनेगी प्रधान साक्षी बनाये गये। मुकदमा मेजर स्टोक्सकी अदालतमें था। डर था कि मुदई कारनेगीको वागी करार देता। मेजर स्टोक्स चरित्रनायकके पुराने परिचित थे। उन्होंने मुकदमेको मुलतवी रखनेका विचारकर मि० स्काटको सलाह दी कि कारनेगीको शीघ्रातिशीघ्र कहीं वाहर भेज दें। कारनेगीको मुफ्तमें सैर करनेकी छुट्टी मिल गयी। वे ओहियोकी ओर चल पड़े। राहमें

वे एक गाड़ीमें बैठे हुए थे कि एक अपरिचित किसान उनके पास उपस्थित हुआ। आते ही उसने कहा—"ड्राईवरसे मुझे मालूम हुआ कि आपका सम्बन्ध पेन्सिलवेनिया रेलकी कम्पनीसे है। मैंने रात्रिमें भ्रमण करनेके समय सोनेकी सुविधाके लिये एक गाड़ीका आविष्कार किया है। आप उसके नमूनेको देखें" यह कहकर उसने अपने बेगसे एक छोटासा नमूना निकालकर कारनेगीको दिखाया।

यह अपरिचित व्यक्ति प्रसिद्ध टी० टी० उडरफ था, जिसने सभ्यताकी एक आवश्यक सामग्री, सोनेवाली गाड़ियोंका आविष्कार किया था, इसका महत्व कारनेगीके ध्यानमें शीघ्र ही आ गया। उन्होंने उडरफको खबर देनेपर अलटूना आनेका अनुरोध किया। अलटूना लौटनेपर चरित्रनायकने मि० स्काटको सभी बातें कह सुनायीं। मि० स्काटकी सम्मतिसे उडरफको अलटूना बुलाया गया और दो गाड़ियों-को रेलवे कम्पनीको देनेका कन्ट्राक्ट किया गया। इसके बाद जब उडरफने कारनेगीको भी उसमें शरीक करने और आठवां हिस्सा देनेका विचार प्रकट किया तो इनके आश्चर्यका ठिकाना नहीं रहा। झटसे इन्होंने उडरफकी बात मान ली और किसी तरह हिस्सेके रुपये देनेका संकल्प किया। कार-नेगीको पहले महीनेमें २१७॥ डालर देना था। स्थानीय बेंकर मि० लायडसे उन्होंने उतने डालर ऋणस्वरूप मांगे। मि० लायडने सभी बातें सुनकर चरित्रनायकको आलिङ्गन करते हुए

कहा—"ठीक है, मैं आपको अवश्य रुपया दूंगा मि० अन्डी।" कारनेगीने अपने जीवनमें पहली बार एक रुका लिखा और एक बेंकरने उसके आधारपर उन्हें कर्ज दिया। एक युवकके व्यावसायिक जीवनमें यह अवश्य ही गौरवपूर्ण घटना है। सोनेवाली गाड़ियोंकी बड़ी कदर हुई और इसके जरिये चरित्रनायकने अच्छा लाभ उठाया।

अलटूना आनेपर कारनेगीने गृह-कार्य्योंके झंझटसे माताको मुक्त करनेके विचारसे एक दाई रखनेका निश्चय किया। माताने बड़ी हुज्जतके बाद एक अपरिचित व्यक्तिको परिवारकी सीमाके भीतर घुसने देनेकी सम्मति दी। वीर माताने अपने दोनों लालोंके लिये असह्य कष्ट उठाये थे। भोजन बनाना, कपड़ा साफ करना, बिछावन करना, घर साफ करना और अपने पुत्रोंके आरामकी सभी व्यवस्था करना ही उसके जीवनका एकमात्र कार्य्य हो गया था। माताको इन स्नेहपूर्ण कार्य्योंसे छुड़ानेका कौन साहस कर सकता था? पर वृद्धावस्थामें माताको आराम देना जरूरी था। कारनेगीने बहुत हठकर एक दाईको रखा, पर खाने-पीनेमें फिर वह आनन्द मिलना नसीब कहां? एकके बाद अनेक दाइयां आयीं, पर माताके प्रेममय व्यवहारके सामने सब फीका ही मालूम होता। माताके हाथका भोजन करनेमें जो आनन्द मिलता है, वह एक भाड़ेके नौकरके हाथकी रसोई खानेसे कहांतक मिल सकता है? बालकपनसे ही कारनेगी केवल माताको जानते थे। उनके लिये माता ही सब-

कुछ थी, अतएव आश्चर्य्य नहीं कि निर्धन बालककी ही अपने माता-पिताके ऊपर विशेष श्रद्धाभक्ति देखी जाती है। धनियोंके लड़कोंके मां-बाप उनकी इच्छापूर्तिके मार्गमें बाधकस्वरूप ही होते हैं, फिर श्रद्धाभक्ति बालक कहांसे करेगा? कारनेगी इस सम्बन्धमें बड़े भाग्यवान थे। इनके पिता इनके शिक्षक, साथी और सहायक थे और माता तो इनके जीवनका आधार ही थीं। ऐसे पुण्यात्मा माता-पिताकी संरक्षकतामें रहकर चरित्रनायकने जो कुछ शिक्षा ग्रहण की थी, वह धनियोंके बालकोंको दुर्लभ है।

श्रीकारनेगीकी माताको यह परिवर्तन आरंभमें अच्छा नहीं मालूम हुआ, पर फिर वे भी इसकी आवश्यकता समझती थीं। उन्होंने पहली बार इस बातको स्मरण किया कि उनका बड़ा पुत्र अब उन्नति कर रहा है। चरित्रनायकने माताके चरणोंमें बैठकर निवेदन किया—"मां, तुमने हमलोगोंके लिये सबकुछ किया। टाम और मेरे जीवनका आधार तो तुम्हीं हो। अब मुझे भी कुछ सेवा करनेका अवसर दो। अब तुम घरके मामूली काम-धंधोंको छोड़कर आराम करो और अड़ोसपड़ोसमें घूमकर अपना दिल बहलाओ। यह दाई तुम्हारी सब प्रकारसे सहायता किया करेगी।"

श्रीकारनेगीकी विजय हुई। अब उनकी मां उन लोगोंके साथ बाहर घूमनेके लिये निकलने लगीं। उन्हें भद्रसमाजमें प्रवेश करनेके लिये कुछ सीखना नहीं पड़ा। एक भद्र महिलामें

जिन आदर्श गुणोंकी आवश्यकता होती है, सब उनमें स्वभाव-से ही मौजूद थे।

मि० स्काटकी एक भतीजी थी, जिसका नाम मिस केपेका स्टिवार्ट था। स्त्री-वियोगके बाद वही मि० स्काटके घरका काम संभाला करती थी। कारनेगी उसे बड़ी बहन कहा करते थे। मिस स्टिवार्टकी संगतिमें चरित्रनायकको बड़ा आनन्द मिलता था। वे लोग साथ साथ घूमनेके लिये निकला करते। मिस स्टिवार्ट भी चरित्रनायकको छोटे भाई-की तरह प्रेमकी दृष्टिसे देखती थी। अन्तकालतक यह पवित्र स्नेह-बन्धन बना रहा।

मि० स्काट तीन वर्षतक अलटूनामें रहे। इसके बाद उनकी पदोन्नति हुई। सन् १८५९ ई०में वे कम्पनीके वाइस—प्रेसिडेण्ट बनाये गये। वे अब फिलेडेलफिया जाकर कार्य करनेवाले थे। प्रश्न यह उठा कि कारनेगी क्या करें? क्या वे भी मि० स्काटके साथ ही जायं या आलटूनामें ही नये सुपरिन्टेन्डेण्टकी अध्यक्षतामें कार्य करें। मि० स्काटका वियोग चरित्रनायकको असह्य हो रहा था। नये कर्मचारी-के अधीन कार्य करना भी उन्हें भारी मालूम होता था। अन्तमें फिलेडेलफियामें प्रेसिडेण्टसे भेंटकर जब मि० स्काट लौटे तो उन्होंने कारनेगीको बुलवाकर अपने नवीन स्थानमें जानेका पक्का निश्चय प्रकट किया और अन्तमें पूछा—

"अच्छा, अब तुम्हारे सम्बन्धमें। क्या तुम पिट्सवर्ग-विभागका कार्यभार अपने ऊपर ले सकोगे?"

चरित्रनायककी अवस्था उस समय २४ वर्षकी थी और वे अपनेको संसारके सभी कार्योंको करनेके योग्य समझते थे। उनके आदर्श लार्ड जान रसेल थे। वालेस और ब्रूसका भी आदर्श कारनेगीके आगे बराबर मौजूद रहता था। उन्होंने मि० स्काटके प्रश्नके उत्तरमें 'हां' कहा।

"अच्छा, तो पिट्सबर्ग-विभागके सुपरिन्टेन्डेण्ट मि० पोट्स बदलकर फिलेडेलफिया जा रहे हैं और मैंने तुम्हारे लिये प्रेसिडेन्टसे उनके स्थानपर कार्य करनेकी सिफारिश की थी। प्रेसिडेन्टने तुम्हें परीक्षाके रूपमें कार्यभार देना स्वीकार कर लिया है। अच्छा, तुम उस कार्यके लिये क्या वेतन लोगे?"

चरित्रनायकने झुंझलाकर कहा—"वेतन? वेतनके लिये कौन परवाह करता है? मैं वेतन नहीं चाहता, मुझे तो पद चाहिये। आपके पूर्वस्थान पिट्सबर्गमें सुपरिन्टिन्डेन्ट बन जाना ही मेरे लिये गौरवका विषय है। आप अपनी इच्छाके अनुसार मुझे वेतन दें। मैं जो कुछ अभी पारहा हूं वही मेरे लिये यथेष्ट है।" उस समय चरित्रनायकको मासिक ६५ डालर मिला करते थे। मि० स्काटने कहा—"तुम्हें मालूम है कि पिट्सबर्गमें काम करनेके समय मुझे १२५ डालर मासिक वेतन मिला करता था और मि० पोट्सको १५० डालर मिलते हैं। मैं समझता हूं तुम्हें आरंभमें १२५ डालर मासिक देना ठीक होगा और कार्य्य ठीक रीतिसे करनेसे तुम्हारा वेतन भी १५० डालर मासिक कर दिया जायगा।

कारनेगीने उत्तर दिया—"बस, ठीक है। वेतनकी बातचीत मत कीजिये।"

सन् १८५९ ईस्वीकी १ ली दिसम्बरको कारनेगी पिट्सवर्गके सुपरिन्टेन्डेन्ट बनाये गये। अब एक विभागके वे स्वतन्त्र कर्ताधर्ता थे। शीघ्र ही परिवारको पिट्सवर्ग लानेका प्रबन्ध किया गया। अपने पूर्वपरिचित स्थानमें लौट आनेसे सभी प्रसन्न हुए। अलटूनामें भी इनके रहनेका बड़ा अच्छा प्रबन्ध था—घरके आसपास ही प्रकृतिकी रमणीय शोभा थी, पर अपने परिचित मित्रोंके बीचमें पहुंचनेपर इन्हें स्वर्गोपम आनन्द मिला। 'टाम' ने उस समयतक तारका काम भलीभांति सीख लिया था। कारनेगीने उसे अपना सेक्रेटरी बना लिया।

पिट्सवर्ग लौटकर कारनेगीने एक अच्छासा मकान किराये-पर लिया और उसीमें रहने लगे। उस समयके पिट्सवर्ग और वर्तमान नगरमें आकाश-पातालका अन्तर है। उस समय नगर बिलकुल धूएंसे भरा रहता था। आप अपना मुंह-हाथ साफ कर लीजिये—एक घंटेमें ही आपका मुंह और हाथ धूएंसे काला हो जायगा। बालोंमें कोयलेके कण समा जाते थे और बेतरह बुरा लगता था। अलटूनाके स्वच्छ वायुमंडलसे लौटनेपर कुछ दिनोंतक चरित्रनायकको पिट्स-वर्गमें रहना बड़ा भद्दा मालूम होता था। अन्तमें इन्होंने नगरसे दूर होमउड नामक स्थानके पास एक मकान किरायेपर

लिया और वहीं रहने लगे। तार वहांतक लगा दिया गया और घर बैठे ही वे अपना कर्तव्यसम्पादन करने लगे।

यहां कारनेगी-परिवारका जीवन बड़े आनन्दसे कटने लगा। चारों ओर प्रकृतिका मनोहर दृश्य था। होमउड ग्राममें कई सौ एकड़ जमीन थी, पासमें ही जंगल था, जहां एक छोटा-सा झरना भी बहता था। कारनेगीके घरके आसपास भी एक छोटीसी फुलवारी थी। कारनेगीकी माताका जीवन पुष्पोंकी संगतिमें कटने लगा। वे कभी अपने हाथसे किसी फूलको नहीं तोड़ती थीं। एकबार कारनेगीने कुछ घासोंको उखाड़ फेंका, इसपर उन्हें माताकी फटकार सहनी पड़ी। माताका यह दयाद्रस्वभाव कारनेगीमें भी पाया जाता था। कई बार कारनेगी घरसे बाहर निकलनेके समय एक फूल तोड़कर अपने बटनके छेदमें लगाना चाहते थे, पर फुलवारीभरमें उन्हें कोई ऐसा फूल नहीं मिलता था, जिसको वे तोड़ लेनेका साहस कर सकें। लाचार हो विना फूलके ही वे बाहर निकलते थे।

यहीं रहते समय चरित्रनायकने अनेक सज्जनोंसे मित्रताका सम्बन्ध स्थापित किया। होमउड प्रायः सभी परिवारोंका ही अड्डा था। कारनेगी भी उन लोगोंके जलसोंमें भाग लिया करते थे। ऐसे अवसरोंपर कारनेगीने बहुतसी नयी बातें सीखीं। धनियोंके व्यवहारसम्बन्धी नवीन बातोंको जानकर इन्हें बड़ा आनन्द आता था। यहीं इनकी दोस्ती वेनजामिन और जान-भ्रातृद्वयोंसे हुई।

'बेनजामिन' के साथ तो इन्होंने आगे चलकर संसारकी सैर की थी। 'संसारभ्रमण' नामक स्वरचित ग्रन्थमें कारनेगीने 'बेनजामिन या बेन्डी' का बराबर उल्लेख किया है। मि० स्टिवार्डसे भी इनकी गहरी दोस्ती हुई। इन लोगोंके साथ मिलकर चरित्रनायकने व्यवसायक्षेत्रमें प्रवेश किया था।

पेन्सिलवेनियाके प्रसिद्ध जज माननीय विल्किन्ससे भी श्रीकारनेगीका परिचय होमउड हीमें हुआ। न्यायाधीश महाशयकी अवस्था उस समय ८० वर्षकी थी, पर तो भी उनकी बुद्धि नवयुवकोंके समान प्रखर थी। उनका ज्ञानभाण्डार अपूर्व था। उनकी स्त्री भी अत्यन्त विदुषी थी। उनकी दो लड़कियां—कुमारी विलकिन्स और श्रीमती सैन्डर्सकी संगतिका भी कारनेगीपर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। कुमारी विल्किन्स प्रायः नाटकों और संगीतोंमें बराबर भाग लिया करती और कारनेगी उसके सांसारिक दुर्लभ आनन्दका उपयोग किया करते थे। न्यायाधीश महाशयका ऐतिहासिक अनुभव अपूर्व था। वे अमेरिका संयुक्तराष्ट्रके प्रेसिडेन्ट जैकसनके कार्यकालमें अमेरिकाकी ओरसे रूसमें राजदूत रह चुके थे। वार्तालापके समय किसी बातपर जोर देनेके लिये वे प्रायः कह बैठते—"मैंने ड्यूक आफ वेलिङ्गटनको ऐसा कहा था, अथवा प्रेसिडेण्ट जेकसनने एक दिन मुझे ऐसा कहा था" इत्यादि। रूसके जारके साथ वार्तालापकी चर्चा भी वे बराबर किया करते थे। विल्किन्सके

गृहकी सभी बातें कारनेगीके जीवनको उन्नत बनानेके लिये उत्तेजकका कार्य करती थीं। केवल राजनैतिक बातोंमें मतभेद हुआ करता था। विल्किन्स-परिवार डेमोक्रेटिक दलके सिद्धान्तका अनुयायी था और कारनेगी प्रजातन्त्र-वादी थे। एक दिन जब विल्किन्स-परिवारमें नीग्रो और गोरोंके समानताके वर्तावपर बहस छिड़ रही थी, उसी समय कारनेगी जा पहुंचे। श्रीमती विल्किन्सने इनसे कहा—"भला देखो तो मेरे पौत्र "डालस" ने लिखा है कि West-Point के सरदारने उसे एक नीग्रोके नीचे स्थान प्रदान किया है। क्या आपने ऐसा अन्धेर कभी सुना था? क्या इससे भी बढ़कर कुछ अपमानकी बात हो सकती है ?"

चरित्रनायकने उत्तर दिया—"श्रीमतीजी, इससे भी बढ़कर बुरी बातें हो गयी हैं। मैंने सुना है कि कुछ नीग्रो स्वर्गमें जा पहुंचे हैं।"

देरतक सभी चुप हो गये। अन्तमें श्रीमती विल्किन्सने उत्तर दिया—"मि० कारनेगी, यह तो दूसरी बातें हैं। कुमारी विल्किन्सने तो एक बार बड़े दिनके उपलक्ष्यमें बड़े यत्नसे एक अफगान सैनिककी आकृति बीनकर और उसपर प्रेमपूर्ण शब्द लिखकर आपको उपहार दिया था।" (श्रीकारनेगीने जीवनपर्य्यन्त उस उपहारको रखा।)

पिट्सबर्गमें रहते समय श्रीकारनेगीका परिचय डा० एडिसनकी पुत्री कुमारी लीला एडिसनसे हो गया था। शीघ्र

ही एडिसन-परिवारसे चरित्रनायककी घनिष्ठता हो गयी और इसके फलसे इन्होंने बहुत लाभ उठाया। वे लोग सभी उच्च शिक्षित थे। प्रसिद्ध विद्वान् कार्लाइल कुछ दिनोंतक श्रीमती एडिसनके गृह-शिक्षक थे। कुमारी एडिसनने विदेशमें शिक्षा प्राप्त की थी और वह अङ्गरेजी भाषाके साथ साथ फ्रेंच, स्पेनिश और इटालियन भाषामें भी प्रवीण थी। इन लोगोंके संसर्गसे ही श्रीकारनेगीको उच्च ज्ञानप्राप्तिकी उत्कट अभिलाषा उत्पन्न हुई। कुमारी एडिसनसे इनकी गाढ़ी मित्रता हो गयी। कुमारी एडिसन कारनेगीकी निर्दयतापूर्वक समालोचना किया करती और उसीकी समालोचनाके डरसे इन्होंने भाषा, भाव-भङ्गी आचरण सबमें उन्नति की। प्राचीन काव्य-ग्रन्थोंका भी इन्होंने खूब अध्ययन किया। अबतक श्रीकारनेगी वस्त्रादि पहननेमें बड़ी लापरवाही करते थे। भद्दे भारी जूते, खुले कालर और मोटे वस्त्रोंको पहनना उन दिनों वीरतापूर्ण समझा जाता था। नज़ाकतकी सभी चीजोंको लोग घृणाकी दृष्टिसे देखते थे। एकबार एक रेलवे कम्पनीके एक कर्मचारीने नरम चमड़ेका एक दस्ताना पहना था, इसपर लोगोंने उसकी बड़ी दिल्लगी उड़ायी थी। कुमारी एडिसनके संसर्गसे श्रीकारनेगीके विचार इस सम्बन्धमें बिलकुल बदल गये। इन्होंने उच्च शिक्षितोंके संसर्गसे वेश, भावभंगी, सबमें समयानुकूल उन्नति कर ली।

नवम परिच्छेद
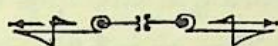
अमेरिकाका गृहयुद्ध

सन् १८६१ ई०में अमेरिकामें दासत्व-प्रथाको लेकर गृह-युद्ध छिड़ गया। संयुक्तराष्ट्रका उत्तरी प्रदेश दासत्व-प्रथाका घोर विरोधी था, पर दक्षिण प्रान्तवाले इसको जारी रखना चाहते थे। दक्षिणमें कृषि-कार्य चलानेके लिये नीग्रो दासोंकी आवश्यकता हुआ करती थी। संयुक्तराष्ट्रके प्रेसिडेण्ट मि० लिंकनने दासत्व-प्रथाको उठा देनेकी घोषणा की। इसपर बिगड़ कर दक्षिण प्रान्तने विद्रोह कर दिया और उत्तर प्रान्तसे अलग होनेका निश्चय किया। परिणाममें भयंकर गृहयुद्ध हुआ। प्रेसिडेन्ट लिंकनने संयुक्तराष्ट्रकी रक्षाके लिये दक्षिण प्रान्तसे युद्ध छेड़ दिया। मि० स्काट उस समय युद्धके सहायक मंत्री नियुक्त किये गये थे। उन्होंने सहायताके लिये श्रीकार-नेगीको बुलाभेजा। इनका काम रेल और तारके प्रबन्धमें सहायकका कार्य करना था। युद्धके आरंभमें यह विभाग अत्यन्त महत्वपूर्ण था।

वाल्टीमोर होकर जाती हुई यूनियनकी सेनापर आक्रमण शुरू हो गया था और वाल्टीमोर तथा अनापोलिस जंकशनके

बीच रेल-पथ काट दिये जानेके कारण वाशिंगटन नगरसे सम्बन्ध-विच्छेद हो गया था। श्रीकारनेगीके जिम्मे इसी टूटे हुए रेल-पथकी मरम्मत करनेका काम दिया गया। अन्तमें बड़ी कठिनतासे कार्य्य सम्पन्न हुआ और गाड़ी वाशिंगटनको जाने लगी। पहला ही इंजिन, जो वाशिंगटन जा रहा था, उसपर सवार होकर श्रीकारनेगीने राजधानीकी यात्रा की। उन्होंने राजधानीसे कुछ इधर ही तारको टूटा हुआ जमीनपर पड़ा देखा। इंजिन खड़ाकर चरित्रनायक उस टूटे तारके पास जा पहुंचे और उसे उठाने लगे। विद्युत-प्रवाहने जोरसे धक्का देकर श्रीकारनेगीको दूर फेंक दिया। इससे इनके गालमें बड़ी चोट लगी और रक्त-धारा बह चली। इसी अवस्थामें इन्होंने राजधानीमें प्रवेश किया। इनको यह सोचकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि जिस अमेरिकाने इन्हें उन्नतिकी सीढ़ीपर चढ़नेका अवसर प्रदान किया था, उसकी सेवामें इन्हें भी रक्त बहाना पड़ा।" श्रीकारनेगी दिन-रात अपने विभागकी सफलताके लिये चेष्टा करने लगे।

चरित्रनायकने अपना कार्य्यालय वाशिंगटनसे हटाकर अलेकजेन्ड्रिया नगरमें रखा। उसी समय बुलरनकी लड़ाई शुरू हुई। अब चरित्रनायकने युद्धक्षेत्रके घायलोंको लाने और सामान पहुंचानेके लिये अधिकसे अधिक गाड़ियोंके दौड़ानेका प्रवन्ध किया। वर्क स्टेशन ही युद्धक्षेत्रके निकट था। कारनेगी स्वयं वहां जाकर घायलोंको गाड़ीमें भेजने लगे।

बलवाइयोंने शीघ्र ही वर्क स्टेशनपर भी धावा किया। अन्तमें उस स्टेशनको भी बन्दकर श्रीकारनेगी अलेकजेन्ड्रिया लौट आये। कुछ रेलवेके कर्मचारी भी युद्धमें लापता हो गये। कारनेगी फिर वाशिंगटन गये और कर्नल स्काटके साथ ही युद्ध-भवनमें अपना आफिस ले आये। तार और रेल-विभागका प्रबन्ध श्रीकारनेगीके हाथमें था, अतएव इन्हें प्रेसिडेन्ट लिंकन तथा अन्य उच्च कर्मचारियोंके साथ मिलनेका अधिक मौका मिला करता था। इस सम्मिलनसे चरित्रनायकको बड़ा आनन्द मिलता था। प्रेसिडेन्ट लिंकन इनके डेस्कके निकट आ बैठते थे और तारके द्वारा युद्धक्षेत्रसे जो खबरें आती थीं, उन्हें बड़े ध्यानसे सुना करते थे।

प्रेसिडेन्ट लिंकनकी गति असाधारण थी। जब वे प्रकृतिस्थ रहते थे तो उनका व्यवहार एक बालकके समान सरल होता था, पर उत्तेजित होनेपर या किसी घटनाका वर्णन करनेके समय उनकी आखोंसे प्रतिभा टपकने लगती थी। उनका व्यवहार स्वाभाविक और सबके साथ एक समान था। वे सबके साथ अत्यन्त मधुर वाणीमें बातचीत किया करते थे। एक बालकसे बात करते समय भी उनका ध्यान एक ही समान रहता था। वे समदर्शी थे। वे सबको बराबर समझते—किसीको अपने अधीन नहीं समझते थे। वे प्रकृत 'डेमोक्रेट' थे। महात्माओंकी तरह मन, वचन और कर्ममें उनका आचरण एक समान था।

युद्ध शीघ्र समाप्त होनेवाला नहीं था और उसके लिये स्थायी कार्य्यकर्ताओंकी आवश्यकता हुई। मि० स्काटको पेन्सिल-वेनिया रेलवे कम्पनी छोड़ना नहीं चाहती थी और मि० स्काट-ने निश्चय कर दिया कि श्रीकारनेगी भी पिट्सवर्ग लौट जायं, क्योंकि वहांका भी काम संभालना जरूरी था। अन्तमें दूसरे कार्य्यकर्ताओंपर कार्यभार सौंपकर श्रीकारनेगी पिट्सवर्ग लौट आये। यहां आते ही ये पहली बार भयंकर रूपसे बीमार पड़े। इनका स्वास्थ्य बिलकुल बिगड़ गया और इन्हें विश्राम करनेके लिये बाध्य होना पड़ा। एक दिन जब ये वर्जिनिया-रेल-पथका निरीक्षण कर रहे थे, उसी समय इन्हें 'लू' लग गयी। आराम होनेके बाद भी धूपमें चलना इनके लिये असह्य हो गया। इनको डाक्टरोंने अमेरिकाकी धूपसे बचकर शीत हाईलैण्डमें विश्राम करनेका आदेश दिया। रेलवे कम्पनीने भी छुट्टी दे दी और चरित्रनायकने २८ जून सन् १८६२ ई०को अपने जीवनके २७ वें वर्षमें स्काटलैण्डकी यात्रा की। लिवर-पुलमें जहाजसे उतरनेपर श्रीकारनेगी सीधे डनफरलिन गये। यहां पहुंचकर इन्हें बड़ा आनन्द मिला। इन्हें मालूम होने लगा कि मानो वे स्वप्न-राज्यमें विचरण कर रहे हैं। ज्यों ज्यों ये लोग डनफरलिन नगरके निकट आते थे, त्यों त्यों इनका हृदयानुराग बढ़ता जा रहा था। नगरके निकट परिचित झाड़ियोंको देखकर तो कारनेगीकी माता भावोद्रेकसे चिल्ला उठीं। श्रीकारनेगीकी भी इच्छा होती थी कि गाड़ीसे उतरकर पवित्र

जन्मभूमिको साष्टाङ्ग प्रणाम करें। इन्हीं भावोंके साथ यह लोग मि० लौडरके घरपर उपस्थित हुए । न्यूयार्कके मुकाबिलेमें वहां सभी चीजें इन्हें बिलकुल छोटी दिखायी पड़ती थीं। कहां वहांका उच्च आलीशान गगनचुम्बी प्रासाद और कहां डनफरलिनके झोपड़े। कारनेगीको मालूम हुआ कि वे लोग प्रसिद्ध अंगरेजी-ग्रन्थकार स्विफ्टद्वारा वर्णित लिलीपुटोंके लोकमें जा पहुंचे हैं। सभी चीजें बच्चोंके खिलौनेके समान प्रतीत होती थीं। मूडीस्ट्रीटके जिस कुएंसे वे पानी खींचकर लाया करते थे, वह भी बेतरह छोटा मालूम होता था। पर एक चीज अपने गर्वपूर्ण मस्तकको उन्नत किये खड़ी थी। प्राचीन गिरजाघर उसी निर्भीक भावसे खड़ा था, जैसा कारनेगीने अपने लड़कपन-में देखा था। टावरके ऊपर "महाराज रावर्ट ब्रूस" अभीतक स्वर्णाक्षरोंमें चमक रहा था। उसको देखकर चरित्रनायकका हृदय भर आया।

चरित्रनायकके सम्बन्धियोंने इनकी बड़ी खातिरदारी की। वृद्धा आन्टी चारलोटने तो हर्षातिरेकमें कह डाला—"तुम एक दिन यहां आकर हाईस्ट्रीटमें जरूर दूकान खोलना।" हाई-स्ट्रीटमें दूकान होना, वहां सम्मानकी बात समझी जाती थी। उस वृद्धाके बेटी-दामादने वहां एक दूकान खोल रखी थी और वृद्धा इसीको सफलताकी चरम सीमा समझती थी। कारनेगीकी धायने इन्हें लड़कपनकी बहुतसी बातें कह सुनायीं। उसने कहा कि चरित्रनायक लड़कपनमें भूखसे बड़ा चिल्लाया करता और

उसे दो चम्मचोंसे खिलाया जाता था। जहां चम्मच मिलनेमें देर हुई कि फिर 'बालानां रोदनं बलम्' का प्रयोग होने लगता था। एकने कहा कि कारनेगीके जन्मते ही दांत निकल आये थे।

कारनेगी लौडरके घरपर ही ठहरे रहे। यहां भी उन्हें सर्दी लग जानेसे बुखार चढ़ आया। दश सप्ताहतक ज्वरका प्रकोप बना रहा। स्काटलैण्डमें प्रचलित परिपाटीके अनुसार इनकी नस काटकर रक्त बहा दिया गया (फस्त खोल दिया गया), इससे इन्हें इतनी कमजोरी हुई कि ज्वर छूटनेके बाद हफ्तों ये खड़ेतक नहीं हो सकते थे। बीमारीसे आराम होते ही उन्होंने अमेरिकाकी यात्रा की। समुद्र-यात्रासे इनका स्वास्थ्य सुधर गया और अमेरिका पहुंचकर इन्होंने अपना कार्य्य शुरू कर दिया।

पिट्सवर्ग पहुंचनेपर इनके अधीन कार्य्यकर्ताओंने इनका हार्दिक स्वागत किया। इनके सम्मानमें गोले छोड़े गये। अपने जीवनमें पहली ही बार इन्होंने जनताका हार्दिक स्वागत प्राप्त किया था। श्रीकारनेगी अधीनस्थ कर्मचारियोंके हितपर बराबर दृष्टि रखते थे। बदलेमें उनका प्रेम पाकर चरित्रनायकको बड़ा आनन्द मिला। जो दूसरोंका ख्याल रखते हैं, दूसरे भी उनका ख्याल अवश्य रखते हैं।

दशम परिच्छेद

व्यवसायक्षेत्रमें पदार्पण

गृहयुद्धके समय लोहेका भाव चढ़कर १ डालर ३० सेंटप्रति टन हो गया था। फिर भी लोग सामान नहीं जुटा सकते थे। नये रेल पथोंके अभावमें अमेरिकन रेल लाइनें भयावह हो रही थीं। इस अभावका अनुभवकर श्रीकारनेगीने सन् १८६४ ई०में पिट्सवर्गमें रेल बनानेका एक कारखाना खोला। पूंजी और साझेदारोंके मिलनेमें कुछ भी दिक्कत नहीं हुई। पटरी बनानेके सभी सामान ठीक कर लिये गये।

इसके पूर्व सन् १८६१ ई०से ही चरित्रनायक 'सन सिटी फोर्ज' कम्पनीमें मि० मिलरके साथ लोहेका सामान्य व्यापार किया करते थे। उस समय गाड़ियोंकी मांग भी बहुत अधिक थी। मि० मिलरके साझेमें इन्होंने गाड़ियोंको बनानेके लिये भी पिट्सवर्गमें ही एक कारखाना खोल दिया। अबतक वह कारखाना जारी है और वहांकी बनी हुई गाड़ियोंकी अमेरिकामें बड़ी कदर है। लोगोंको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि इस कम्पनीके १०० डालरके हिस्सेका दाम सन् १९०६ ई० में ३००० डालर था। दाम तीस गुणा अधिक हो गया था।

हिस्सेदारोंको वार्षिक भारी डिविडेन्ट नियमित रूपसे दिया जाता था।

अलटूनामें रहते समय चरित्रनायकने पेन्सिलवेनिया रेलवे कम्पनीके कारखानेमें लोहेके बने हुए पहले पुलको देखा था। उन्होंने उसी समय अनुभव कर लिया था कि रेल-पथके लिये लकड़ीके पुलोंसे स्थायी काम नहीं चल सकता। उन्हीं दिनों पेन्सिलवेनिया रेल-पथके एक महत्वपूर्ण पुलमें आग लग जानेके कारण दो दिनतक गाड़ियोंका आना-जाना रुका रहा था। वहां लोहेके पुलकी आवश्यकता थी। चरित्रनायकने लोहेके पुलके प्रथम निर्माणकर्ता मि० लिनविल और पेन्सिल-वेनियाके रेल-पथके पुलोंके प्रवन्धकर्ता मि० पाइपरसे प्रस्ताव किया कि यदि वे लोग पिट्सवर्ग आवें तो वह पुलोंको निर्माण करनेके लिये एक कम्पनी खड़ी करनेका प्रवन्ध करें। मि० स्काटको भी इन्होंने इसकी सूचना दी और उन्हें भी इसमें शरीक करनेकी इच्छा प्रकट की। यह इस प्रकारकी पहली कम्पनी थी। प्रत्येक हिस्सेदारने १२५० डालर दिये। श्रीकार-नेगीने भी वैंकसे उधार लेकर रुपया दे दिया। आजकल इतना रुपया देखनेमें बहुत कम मालूम होता है, पर बीजसे ही वृक्ष उत्पन्न होता है।

इस प्रकार सन् १८६२ ई०में पाइपरकम्पनीकी प्रतिष्ठा लोहेके पुलोंके बनानेके लिये हुई। सन् १८६३ ई०में यह कम्पनी कीस्टोनब्रिज कम्पनीमें मिला दी गयी। उसी समयसे

लोहेके पुल अधिक संख्यामें तैयार होने लगे और केवल अमे-रिकामें ही नहीं, वरन् संसारभरमें व्यवहारमें लाये जाने लगे। पुल बड़ी सावधानीके साथ तैयार किये जाते थे। अबतक बहुतसे रेल-पथोंमें वे ही पुल मौजूद हैं।

इसके बाद ही स्टेवेनविलमें ओहियो नदीपर पुल बनानेका प्रश्न उपस्थित हुआ। श्रीकारनेगीसे पूछा गया कि उनकी कम्पनी ३०० फीट लम्बे पुलको तैयार करनेका काम अपने हाथमें ले सकती है या नहीं? आजकल इस प्रकारके प्रश्नको सुनकर लोगोंको हंसी आ सकती है, पर यह ध्यानमें रखना चाहिये कि उन दिनों इस्पातका आविष्कार नहीं हुआ था। सब सामान ढलवां लोहेसे ही तैयार किये जाते थे। अपने हिस्से-दारोंको राजीकर श्रीकारनेगीने अन्तमें पुल बनानेका 'कन्ट्राक्ट' कर लिया। जब पुल बन रहा था, उस समय रेलवे कम्पनीके प्रेसिडेन्ट मि० जिवेट उसे देखने गये। भारी भारी लोहेके स्तंभ इधर-उधर पड़े थे और उनका आना जारी था। उन्हें देखकर प्रेसिडेन्टने श्रीकारनेगीसे कहा—"मुझे तो विश्वास ही नहीं होता कि इतने भारी लोहेके खंभे किस प्रकार खड़े किये जायंगे। ये अपना बोझ भी तो नहीं संभाल सकेंगे, फिर ओहियो नदीके आरपार गाड़ियोंके बोझको कैसे सह सकेंगे।" पर पुल बन गया और उन्हें विश्वास ही नहीं करना पड़ा—अपनी आंखों उन्होंने ओहियो नदीपर गाड़ियोंको दौड़ते भी देखा। इस कार्य्यमें खूब नफा होनेवाला था, पर सिक्कोंकी दर कम हो

जानेके कारण नफेका भाग प्रायः उड़ गया। पेन्सिलवेनियाके प्रेसिडेन्ट एडगर टामसनने सभी बातोंको जानकर कुछ अतिरिक्त धन दिलाकर कम्पनीको हानिसे बचाया।

मि० टामसन रेलवे कम्पनीके बड़े हितैषी थे, पर वे साथ साथ कानूनके शब्दाडम्बरसे बढ़कर उसके यथार्थ तत्वपर ही ध्यान रखते थे।

लिनविल, पाइपर और स्किफ्लर, सभी अपने अपने फनके उस्ताद थे। 'कीस्टोनब्रिजवर्कस' भी सर्वप्रिय हो रहा था। श्रीकारनेगीको इसके कार्यसे बड़ी प्रसन्नता होती थी। अमेरिकाकी जितनी कम्पनियोंने पुल बनानेका काम शुरू किया था, सभी अपने कार्यमें असफल हुई थीं। बहुतसे पुल तो खड़े ही नहीं हो सके। बहुतसे पीछे गिर पड़े और इसके फलस्वरूप बहुतसी भयंकर दुर्घटनायें भी हुईं। पर कीस्टोन कम्पनीद्वारा बने हुए सभी पुल जांचमें ठीक उतरे। उनके साथ कभी कोई दुर्घटना नहीं हुई। यह कोई भाग्यकी बात नहीं थी। कीस्टोन कम्पनी पुल बनानेके लिये जिन सामानोंको काममें लाती थी, सभी प्रथम श्रेणीके हुआ करते थे। लोहा और इस्पात सभी अपने कारखानेमें ही तैयार किया जाता था। श्रीकारनेगी प्रभृति स्वयं अपनी कमजोरियोंकी जांच अच्छी तरह किया करते थे।

"अच्छेसे अच्छा काम करना या काम ही नहीं करना" यही इन लोगोंका सिद्धान्त था। यही पालिसी सफलताकी यथार्थ

कुंजी है। कुछ वर्षोंतक तो अवश्य ही धैर्य्यपूर्वक कार्य्य करना होगा, पर इसके बाद फिर मैदान साफ मिलता है। बहुतसी कम्पनियां निरीक्षकोंके देखने-भालनेमें आपत्ति उपस्थित किया करती हैं, पर ऐसा करना भ्रम है। निरीक्षकोंकी उपस्थितिमें कार्य्य बढ़िया होता है। चेष्टा यही रहती है कि काममें कहीं किसी प्रकारकी त्रुटि रहने नहीं पावे। प्रत्येक वस्तुमें 'Quality' ही प्रधान है, दामको बहुत कम लोग पूछते हैं। व्यवहार करनेवाले धोखेबाजी नहीं चाहते। वे ऐसी चीजें चाहते हैं जो टिकाऊ हों, जिनपर विश्वास किया जा सके। वे उनके लिये अधिक दाम देनेके लिये भी तैयार रहते हैं। इस प्रकार ईमानदारीसे काम करनेवाली कोई भी कम्पनी प्रतिस्पर्द्धासे हानि नहीं उठा सकती। तपानेसे सोनेका रंग और भी चमकने लगता है। यदि किसी व्यवसायमें लगे हुए सभी लोगोंका ध्यान इस ओर रहे तो फिर सफलता हाथ जोड़े खड़ी रहती है। कारखानेकी सफाई, औजारोंकी सुन्दरता तथा ऐसी ही अन्य बातोंका भी दर्शकोंपर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है। व्यवसायकी सफलताके लिये एक बात और भी आवश्यक है। उसे प्राणपणसे सफल बनानेवाला आदमी" उस व्यवसायमें होना चाहिये। सत्यश्रमाभ्यां सकलार्थसिद्धिः।" श्रीकारनेगी तथा उनके हिस्सेदार सभी अपनी कम्पनीके प्राणस्वरूप थे। "कार्यं वा साधेयेयं शरीरं वा पातयेयम्" ही उनका सिद्धान्त था, फिर सफलता क्यों न मिले।

कुछ वर्षोंतक श्रीकारनेगीने 'कीस्टोनब्रिजवर्क्स' के काममें स्वयं खूब भाग लिया। जब कभी कोई महत्वपूर्ण 'कन्ट्राक्ट' किया जाता था, चरित्रनायक स्वयं जा पहुंचते थे। सन् १८६८ ई० में मिसीसिपी नदीके ऊपर डुवक स्थानके पास वड़ा पुल बनाया जानेवाला था। श्रीकारनेगी अपने इंजिनियरके साथ डुवक जा पहुंचे। नदीपर बर्फ जमा हुआ था। "स्ले" गाड़ियोंपर चढ़कर ये लोग नदी पार पहुंचे। सामान्य घटनाओंके बलपर ही इन्हें अपने उद्देशमें सफलता प्राप्त हुई। वहां पहुंचनेपर श्रीकार-नेगीको पता लगा कि उन्होंने जो 'टेन्डर' भेजा था वह किसीसे कम नहीं था। उनका प्रधान प्रतिद्वन्दी शिकागोकी एक प्रसिद्ध पुल बनानेवाली कम्पनी थी और उसीको ठीका देनेका निश्चय बोर्डने कर लिया था। श्रीकारनेगीने वोर्डके कुछ डिरेक्टरोंके साथ बातचीत की। वे लोग पिटवां और ढलवां लोहेके गुण-दोषसे सर्वथा अनभिज्ञ थे। कारनेगीकी कम्पनी अपने पुलके प्रधान अंशको पिटवां लोहेसे बनाया करती थी, पर प्रतिद्वन्दी कम्पनी सभी काम ढलवां लोहेसे ही करती थी। इसीको लेकर श्रीकारनेगीने कम्पनीकी ओरसे बहस शुरू की। उन्होंने एक स्टीमरका उदाहरण देकर कहा—"यदि स्टीमर पिटवां लोहेसे टकरावेगा तो अधिकसे अधिक क्षति यही हो सकती है कि लोहा कुछ टेढ़ा हो जायगा, पर ढलवां लोहेको सिवाय टूट जानेके और कोई उपाय नहीं है।" इस दशामें पुल गिर पड़ेगा। एक डिरेक्टरने श्रीकारनेगीकी बातको समझा और

उसका समर्थन भी किया। उन्होंने डिरेक्टरोंको अपना अनुभव भी बताया। एक रातको वे गाड़ीमें सड़कपर जा रहे थे कि गाड़ी लैम्पके खंभेसे टकरा गयी। खंभा ढलवां लोहेका बना था—जोरसे धक्का लगते ही टूटकर गिर पड़ा। श्रीकार-नेगोने झट कहा—'महाशयो! यही तो बात है। कुछ अधिक रुपया खर्च करने हीसे आपका ऐसा पुल तैयार होगा जो किसी भी दुर्घटनासे टूट नहीं सकता। हमलोग सस्ते पुलोंको नहीं बनाते। हमारे पुल कभी नष्ट नहीं हुए।" अन्तमें कार-नेगी-कम्पनीको ही कन्ट्राक्ट दिया गया। दाममें कुछ कमी करनी पड़ी, पर इस घटनाने कारनेगीकी कम्पनीकी धाक सबपर जमा दी। लैम्पके एक खंभेके टूटनेसे ही श्रीकार-नेगीको यह कन्ट्राक्ट मिला। एक समान्य घटना क्या कर सकती है, यह इसका प्रत्यक्ष निदर्शन है।

इस कथाकी शिक्षा स्पष्ट है। यदि आप कोई कन्ट्राक्ट लेना चाहते हैं तो आपको उस समय अवश्य मौजूद रहना चाहिये, जब अन्तिम निर्णय होता हो। पूर्व-घटनामें वर्णित एक टूटे हुए खंभेके समान किसी घटनाके बलपर ही उपस्थित लोग बाजी मार लेते हैं। यदि संभव हो तो कन्ट्राक्ट खतम होनेतक ठहरे रहना चाहिये।

इसके बाद ही बाल्टीमोर और ओहियो रेलवे कम्पनीने ओहियो नदीपर वार्कर्सवर्ग और हीलिङ्ग, दोनों स्थानोंपर पुल बनाना चाहा। इन पुलोंके कन्ट्राक्ट लेनेके समय ही कारनेगी-

की मित्रता मि० गैरेटसे हुई जो वाल्टीमोर और ओहियो रेलवे कम्पनीके प्रेसिडेन्ट थे।

कारनेगीकी कम्पनी दोनों पुलोंका कन्ट्राक्ट लेना चाहती थी, पर मि० गैरेटकी धारणा थी कि निश्चित समयके भीतर ये लोग कभी काम समाप्त नहीं कर सकेंगे। मि० गैरेटने श्रीकारनेगीसे कहा कि वे पुलके बनाने और काममें लाये जानेके लिये कुछ सामानको रेलवेके कारखानेमें ही तैयार करा-लेना चाहते हैं, यदि चरित्रनायक उन्हें अपना पेटेन्ट व्यवहारमें लानेकी अनुमति दें। श्रीकारनेगीने अपनी सहमति प्रकट की। इसका मि० गैरेटपर बड़ा प्रभाव पड़ा। वे श्रीकार-नेगीको एक एकान्त कमरेमें ले जाकर बोले—"हमारा पेन्सिल-वेनिया रेलवे कम्पनीसे बराबर झगड़ा लगा ही रहता है। मि० स्काट और मि० टामसन, जो पेन्सिलवेनिया रेलवे कम्पनीके कर्ताधर्ता हैं, उनसे चखाचखी चला ही करती है। उन लोगोंसे प्रतिद्वन्दता करनेके लिये ही मैंने अपनी कम्पनीका एक स्वतन्त्र पुल बनानेका निश्चय किया है।" श्रीकारनेगीने उत्तर दिया—"मैं फिलेडेलफिया होता हुआ ही यहां आया हूं। आते समय मैंने मि० स्काटसे भेंटकर अपने यहां आनेका उद्देश्य उन्हें स्पष्ट कह सुनाया था। मि० स्काटने मेरे कार्यको मूर्खतापूर्ण बताते हुए कहा था कि मि० गैरेट तुम्हें कभी यह कन्ट्राक्ट नहीं देंगे। तुम पेन्सिलवेनिया रेलवे कम्पनीके पुराने नौकर रह चुके हो।" पर मैंने उत्तर दिया—"मेरी कम्पनी मि० गैरेटके पुलको निश्चय ही बनायेगी।"

मि० गैरेटने प्रसन्न होकर श्रीकारनेगीकी कम्पनीको ही कन्ट्राक्ट देनेका निश्चय किया, पर अबतक बातचीतमें कुछ कसर रह गयी थी। मि० गैरेट कुछ सामग्रियोंको अपने कारखानेमें बनवाना चाहते थे और कारनेगी कम्पनीके पेटेन्टके अनुसार ही बनाना चाहते थे। श्रीकारनेगीने उन्हें विश्वास दिलाया कि दोनों पुल निश्चित समयके भीतर ही बनकर तैयार हो जायंगे, यदि उनकी कम्पनीको कार्य करनेकी पूरी स्वतन्त्रता दी जाय। इसके लिये वे १ लाख डालरकी गारन्टी देनेको तैयार हो गये। गारन्टी लिखी गयी। श्रीकारनेगीने कन्ट्राक्ट लिया और निश्चित समयके भीतर ही पुल बनकर तैयार हो गया।

इसके बादसे मि० गैरेट श्रीकारनेगीके घनिष्ठ मित्र हो गये। एक बार मि० गैरेटकी रेलवे कम्पनीने अपनी पटरी स्वयं बनानी चाही, पर श्रीकारनेगीने अपने कारखानेकी श्रेष्ठताको दिखलाते हुए उन्हें चुप कर दिया। फिर कभी उन्होंने कारनेगी-कम्पनीसे प्रतिद्वन्द्विता नहीं की।
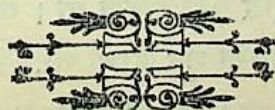
एकादश परिच्छेद

लोहेका कारबार।

श्रीकारनेगीने अब लोहेके कारबारके विशाल कार्यक्षेत्रमें प्रवेश किया। टामसमिलर, हेनरीफिप्स और एन्ड्रू क्रोमनके साथ कारनेगी भ्रातृद्वयोंने एक लोहेकी छोटी मिल स्थापित की। मि० मिलरने ही इस कारखानेका श्रीगणेश किया था। इसके बाद क्रोमन और फियूसने ८००—८०० डालर देकर छठां हिस्सा खरीदा और उस कारबारमें शामिल हो गये। अन्तमें कारनेगी भ्रातृद्वयोंने योगदान देकर कारखानेको उन्नतिकी चरम सीमातक पहुंचा दिया।

एन्ड्रू क्रोमन अलगेनी नगरमें लोहेका सामान्यारोजगार करता था। पेन्सिलवेनिया रेलवे कम्पनीके सुपरिन्टेन्डेन्टके पदपर रहते हुए ही चरित्रनायकने देखा कि क्रोमनबढ़िया Axle बना सकता है। उसकी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण थी। वह अध्यवसायी भी पूरा था। जिस कामको शुरू करता था, उसे बिना अन्ततक पहुंचाये नहीं छोड़ता था। उसीने पहलेपहल (Cold Saw) का आविष्कार किया, जो लोहेको काट डालता था। उसीने पहलेपहल पुलको जोड़नेके लिये Link तैयार करनेकी मशीनका

आविष्कार किया। अमेरिकामें पहली सर्वप्रिय मिल उसीने तैयार की थी। यह सब सामान कारनेगीकी लोहेकी मिलमें ही तैयार किया गया था। उसने कभी कभी ऐसे कामोंको भी कर दिखाया था, जिसको करनेमें अमेरिकाकी सभी कम्पनियां हताश हो चुकी थीं। मि० क्रोमनपर श्रीकारनेगीका इतना अधिक विश्वास हो गया था कि जभी वह किसी कामको कर सकनेकी हामी भरता था तभी उसका कन्ट्राक्ट ले लिया जाता था।

फिप्स-परिवारके साथ भी कारनेगीकी बड़ी घनिष्ठता हो गयी थी। हेनरीफिप्स कारनेगीसे कुछ छोटा था, पर उसने लड़कपन हीमें श्रीकारनेगीका ध्यान आकर्षित किया था। एक दिन हेनरीने अपने बड़े भाई जानसे २५ सेंट कुछ जरूरी काम-का बहाना करके मांगे। जानने बिना पूछे ही दे दिये। दूसरे दिन 'पिट्सबर्ग डिसपैच' नामक समाचारपत्रमें एक विज्ञापन निकला—

"काम करनेकी इच्छा रखनेवाला एक बालक काम चाहता है।"

हेनरीने २५ सेंटका उपरोक्त उपयोग ही किया था। अपने जीवनमें उसने यही २५ सेंट पहलेपहल खर्च किये थे। डिल-वर्थ और बिडवेल कम्पनीने हेनरीको बुला भेजा। हेनरी वहां भरती हो गया और धीरे धीरे अपनी उन्नतिकर उस फार्ममें हिस्सेदार हो गया। मि० मिलरकी दृष्टि हेनरीपर पड़ी और उन्होंने हेनरीको एन्ड्रू क्रोमनके साथ एक व्यवसायमें शरीक

कर दिया। अन्तमें हेनरी लोहेका एक बड़ा कारखाना खोलनेमें समर्थ हो सका। श्रीकारनेगीका छोटा भाई टाम उसका सहपाठी था। वे लोग साथ ही खेलते थे। व्यवसायमें भी दोनोंने सभी कम्पनियोंमें बराबर ही हिस्सा लिया। जो एक करता था, वही दूसरा भी करता था। आज वही हेनरी संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाके धनकुबेरोंमेंसे एक है। हेनरीने अपने धनका सदुपयोग भी खूब किया। श्रीकारनेगी ही उसके जीवनके आदर्श थे। अध्यवसायपूर्वक काम करनेवालोंके लिये कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

कुछ दिनोंके बाद क्रोमन, फिप्स और मिलरमें किसी कारणसे मतभेद हो गया और बेचारे मिलरको उन दोनोंने साझेदारीसे अलग कर दिया। श्रीकारनेगीने यह जानकर कि मिलरके साथ अन्याय किया गया है, उसीका पक्ष लिया और उसके साथ मिलकर सन् १८६४ ई० में साइक्लोप्स मिलसकी प्रतिष्ठा की। सन् १८६७ ई०में पुरानी और नयी दोनों मिलोंको मिलाकर 'युनियन आयरन मिल' की प्रतिष्ठा की गयी। मि० मिलरने क्रोमन और फिप्सके साथ काम न करनेका निश्चय कर अलग हो जाना चाहा। बड़ी आरज़ू-मिन्नत करनेपर भी वह टससे मस नहीं हुआ। श्रीकारनेगीने अनिच्छापूर्वक मिलरके हिस्सोंको खरीद लिया।

इसी बीचमें मि०क्रोमनने लोहेका बीम बना डाला। अबतक कोई कम्पनी बीम बनानेमें समर्थ नहीं हुई थी। नयी आयरन-मिलमें सब प्रकारके बीम तयार किये जाने लगे। जो काम

कोई कम्पनी नहीं कर सकती थी, उसीको करनेमें कारनेगी-कम्पनी हाथ लगाती थी। जो चीज़ इस कम्पनीके कारखानेसे बनकर निकलती थी, वह प्रथम श्रेणीकी होती थी। ग्राहकोंको सन्तुष्ट रखना यह कम्पनी अपना कर्तव्य समझती थी। कार-नेगीको कभी अदालत जानेकी जरूरत नहीं हुई।

श्रीकारनेगीने एक भारी सुधार अपने कारबारमें किया। अबतक लोहेकी चीज़ तैयार करनेमें यह पता नहीं लगता था कि किस प्रणालीसे कार्य करनेमें कितना खर्च पड़ता है। जबतक सालके अन्तमें हिसाब नहीं होता था, तबतक लाभ-हानिका पता ही नहीं चलता था। व्यापारी लोग सालभर झखा करते, पर कभी कभी हिसाब करनेपर उन्हें नफा हो जाता था और बहुतसी कम्पनियाँ, जिन्हें लाभ होनेकी पूरी आशा रहती थी, घाटा उठाती थीं। श्रीकारनेगीको यह अन्धेरेमें टटोलना पसन्द नहीं आया। उन्होंने निश्चय किया कि प्रत्येक वस्तुके तैयार करनेके समय जिन जिन भिन्न नियमोंके अनुसार कार्य करना पड़ता है, सबके खर्चका व्योरेवार हिसाब रखा जाय। कौन कर्मचारी कैसा काम करता है, किससे कम्पनीको लाभ है और किसके कार्यसे कम्पनीको हानि पहुचती है, सबका लेखा रखनेपर उन्होंने जोर दिया। प्रत्येक मिलके मैनेजरने स्वभावतः इस नवीन प्रणालीका विरोध किया, पर कुछ वर्षोंमें ही पूरा हिसाब रखा जाने लगा। इससे ठीक ठीक मालूम हो जाता था कि कौन आदमी क्या काम

कर रहा है और कम्पनीको क्या लाभ पहुंचा रहा है। इससे कम्पनीको बड़ा लाभ पहुंचा।

सन् १८६८ ई० में पेन्सिलवेनियाकी तेलकी खानोंकी ओर श्रीकारनेगीका ध्यान आकर्षित हुआ। इन्होंने चालीस हजार डालर देकर तेलकी खानोंको खरीद लिया। इससे चरित्र-नायकको पूरा लाभ हुआ। १ वर्षमें १० लाख डालरकी आमदनी हुई और खानोंका दाम ५० लाख डालर हो गया।

इसके बाद ही ओहियोमें एक प्रकारके तेलकी खानका पता लगा जो (Lubricating) के काममें आ सकता था। अपरिचित प्रान्तोंमें भ्रमण करते हुए श्रीकारनेगी उस खानके पास पहुंचे और उसको भी खरीदकर ही लौटे।

अब चरित्रनायकका कारबार बहुत अधिक बढ़ गया था और उसको देखनेके लिये इन्हें बहुत काम करना पड़ता था। यही सोच-विचारकर इन्होंने रेलवे कम्पनीकी नौकरी छोड़कर अपना पूरा समय और शक्ति अपने व्यवसायकी उन्नति करनेमें ही लगानेका निश्चय किया। प्रेसिडेन्ट टामसनने चरित्रनायकको बुलाकर सहायक जनरल सुपरिन्टेन्डेण्ट बनानेकी इच्छा प्रकट की थी, पर इन्होंने सधन्यवाद अस्वीकृत कर दिया। उनकी अन्तरात्माने यही कहा कि नौकरी छोड़ दो और व्यवसायमें लग जाओ, इसीसे धनकुबेर बन सकोगे। २८ वीं मार्च सन् १८६५ ई० को श्रीकारनेगीने रेलवे कम्पनीकी नौकरीसे पद-त्याग किया और रेलवे कम्पनीके कर्मचारियोंने

इन्हें एक सोनेकी घड़ी भेंटमें दी। नौकरी छोड़ते समय इन्होंने पिट्सबर्ग-विभागके कर्मचारियोंके पास निम्नलिखित मर्मकी चिट्ठी लिखी थी :—

"सज्जनो !

आपके साथ सम्बन्ध-विच्छेद करते हुए मुझे बड़ा दुःख हो रहा है। आप लोगोंके साथ १२ वर्ष कार्य करते रहनेसे मुझे आप लोगोंसे बड़ा प्रेम हो गया है। नौकरी छोड़ देनेसे मैं अपने पूर्वके घनिष्ठ मित्रोंसे फिर सम्बन्ध नहीं रख सकूंगा, इसका मुझे अधिक दुःख है। आप लोग विश्वास करें कि आपसका सम्बन्ध छूट जानेपर भी मुझे आप लोगोंका ख्याल बराबर बना रहेगा। आपने मेरे प्रति जो प्रेम और दयाका भाव प्रदर्शित किया है, उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूं। मेरा अन्तिम नमस्कार स्वीकार करें। विनीत—

एन्ड्रू कारनेगी।"

इसके बादसे श्रीकारनेगीने कभी नौकरी नहीं की। सन् १८६७ ई० में चरित्रनायकने मि० फिप्स, और मि० वैन्डोके साथ यूरोपकी सैर की। यूरोपकी यात्रासे श्रीकारनेगीका अनुभव और भी अधिक बढ़ गया। अबतक वे कलाविद्याका कुछ भी ज्ञान नहीं रखते थे। शीघ्र ही वे इसमें भी पटु हो उठे और बड़े बड़े चित्रविद्या-विशारदोंके कार्य्योंका विभाग कर सकनेमें समर्थ हो गये। संगीतका प्रेम भी उनका खूब बढ़ गया। लण्डनके क्रिस्टल पैलेसमें उन्हीं दिनों सङ्गीत-समाजका वार्षि-

कोत्सव मनाया जा रहा था। उसमें भाग लेनेसे श्रीकारनेगीके मनपर सङ्गीतके प्रभावका सिक्का बैठ गया। इसके बाद फ्रांस आदि देशोंमें भ्रमण करने और थियेटर आदि देखनेसे सङ्गीतके प्रति इनकी श्रद्धा और भी बढ़ गयी। व्यापारिक दृष्टिसे भी यूरोपकी यात्रा इनके लिये हितकर ही हुई।

इसके बाद कारनेगीका लोहेका कारबार बढ़ता ही चला गया। गृहयुद्धके समाप्त होनेके बाद अमेरिकन गवर्नमेंटने निश्चय कर लिया था कि अमेरिकाके व्यवहारकी सभी चीजें देशके भीतर ही तैयार हों—यूरोपसे कुछ भी न मंगाया जाय। विदेशसे आनेवाले लोहेके तैयार मालपर २८ सैकड़ा कर लगा दिया गया। इस रक्षणशील नीतिने अमेरिकन व्यापारको बड़ा लाभ पहुंचाया। अब नये व्यवसायोंके लिये रुपया लगानेमें लोगोंको कुछ भी हिचकिचाहट नहीं होती थी—कारण, लोगों-का विश्वास था कि गवर्नमेंट प्रत्येक दशामें सहायता देनेके लिये तैयार रहेगी। न मालूम भारतवर्षको यह सौभाग्य कब प्राप्त होगा। यहां तो "आग लगन्ते झोपड़ा, जो निकसे सो लाभ" की कहावत चरितार्थ हो रही है। भारतीय व्यापारसे जितना लाभ उठा सको उठा लो—एक दिन तो भारत स्वावलम्बी होगा ही, फिर तो दाल गलने नहीं पायगी।

———

द्वादश परिच्छेद

व्यवसायकी वृद्धि

श्रीकारनेगीका व्यवसाय दिन दिन बढ़ने लगा। अब उन्हें प्रायः न्यूयार्क तथा अन्य पूर्वी नगरोंको यात्रा करनी पड़ती थी। इङ्गलैण्डमें लंडनका जो स्थान है वही अमेरिकामें न्यूयार्कको प्राप्त है। अमेरिकामें जितने प्रधान प्रधान व्यवसाय हैं, सबका मुख्य केन्द्र न्यूयार्क ही है। कोई भी व्यवसायी विना वहां अपना केन्द्र स्थापित किये अपने व्यवसायमें पूरी सफलता नहीं प्राप्त कर सकता। श्रीकारनेगीका भाई और मि० फिप्स तो पिट्सवर्गके व्यवसायकी देखभाल करते ही थे। अब श्रीकारनेगीने कम्पनियोंका प्रधान नीति-नियन्त्रण करनेका भार अपने ऊपर लिया। मुख्य मुख्य कण्ट्राक्टोंको ठीक करनेका भार भी इन्होंने अपने ही ऊपर रखा।

श्रीकारनेगीके भाई टामने अपने एक हिस्सेदार मि० कोलमैनकी विदुषी कन्यासे पाणिग्रहण कर लिया था। वे होमउडमें रहने लगे और श्रीकारनेगीने सन् १८६७ ई० में अपना निवासस्थान न्यूयार्कमें ठीक किया। यह परिवर्तन पहलेपहल इनके और इनकी माताके लिये सुखकर प्रतीत नहीं हुआ। पुराने

मित्रोंसे एकदम नाता टूट जानेसे इन्हें अवश्य ही दुःख हुआ, पर कारनेगी-परिवार कहीं भी रहकर सुखी रह सकनेमें समर्थ था। न्यूयार्कमें इनका कोई परिचित नहीं था, इन्होंने सेंट निकोलस होटेलमें ठहरनेका निश्चय किया और वहांकी प्रसिद्ध ब्रौड-स्ट्रीटमें अपनी गद्दी खोल दी।

पिट्सवर्गके मित्रगण जब न्यूयार्क जाते तो श्रीकारनेगीके यहां ही ठहरते। उनके संसर्गसे इन्हें बड़ा आनन्द मिलता था। पिट्सवर्गके समाचारपत्रोंको विना पढ़े श्रीकारनेगोको चैन नहीं मिलती थी। श्रीकारनेगी बराबर पिट्सवर्ग जाकर मित्रोंसे मिल आया करते थे। धीरे धीरे न्यूयार्कमें ही एक मित्रगोष्ठी स्थापित हो गयी और फिर तो वही स्थान स्वर्गोपम प्रतीत होने लगा।

न्यूयार्कमें विण्डसर होटल स्थापित होनेपर श्रीकारनेगी वहीं जाकर रहने लगे और सन् १८८७ ई०तक वहीं रहे। होटलके अध्यक्ष मि० हाकसे इनकी गहरी दोस्ती हो गयी। उन्हीं दिनों न्यूयार्कमें 'उन्नीसवीं शताब्दी क्लब' स्थापित हुआ था। चरित्रनायक भी उसके मेम्बर बन गये। न्यूयार्कके सभी प्रसिद्ध पुरुष उस क्लबके सदस्य थे। मासमें एक बार 'क्लब' का अधिवेशन हुआ करता था और सभी प्रधान विषयोंकी समालोचना हुआ करती थी। श्रीकारनेगी भी आलोचना-प्रत्यालोचनामें भाग लिया करते थे। इस प्रकार चरित्रनायक शीघ्र ही न्यूयार्कके सभ्य समाजमें भी परिचित हो गये। वहीं इनकी

लानेल विश्वविद्यालयके प्रेसिडेन्ट मि० ह्वाइटसे दोस्ती हुई। मि० ह्वाइट पीछे चलकर अमेरिकाकी ओरसे रूस और जर्मनीमें राजदूत रहे और अन्तमें हेगकान्फरेन्समें अमेरिकाके प्रधान प्रतिनिधि बनकर उपस्थित हुए थे।

श्रीकारनेगीने पिट्सवर्गमें रहते समय केवल औद्योगिक विभागका परिचय प्राप्त किया था। फाटकेबाजीका इन्होंने केवल नाम ही सुना था। न्यूयार्कमें आकर इन्होंने फाटके-बाजीका बाजार गर्म देखा। बालस्ट्रीटमें न्यूयार्कका प्रधान स्टाक एक्सचेंज है, जहां शेयरोंका कारबार होता था। प्रायः जितने प्रसिद्ध व्यवसायी थे, सबका सम्बन्ध बालस्ट्रीटसे था। न्यूयार्कमें परिचय होनेके साथ ही लोगोंने चारो ओरसे इन्हें घेरना शुरू किया। कोई आकर इनके रेलवे ज्ञानके बारेमें पूछता था, कोई कहता था कि हमलोग पूंजी देते हैं आप किसी लाभदायक व्यापारमें उसे लगाकर उसके प्रबन्धक बनिये। बहुतसे व्यापारी बड़े बड़े कारबारको खोलना चाहते थे, उन्होंने भी चरित्रनायकको हिस्सेदार बननेका अनुरोध किया। न्यूयार्क की फाटकेबाजीका द्वार श्रीकारनेगीके लिये उन्मुक्त हो गया।

श्रीकारनेगीने पूर्ण सोच विचारके उपरान्त किसी भी प्रस्तावको स्वीकृत नहीं किया। एक दिन प्रातःकाल जब वे विण्डसर होटलमें ठहरे हुए थे, मि० जय गोल्ड नामक प्रसिद्ध व्यापारीने इनसे भेंट की और कहा "मि० कारनेगी, मैंने आप-की बड़ी तारीफ सुनी है। मैं पेन्सिलवेनिया रेलवे कम्पनीको

खरीद लेना चाहता हूं। यदि आप उसके प्रबन्धको अपने ऊपर ले लें तो कम्पनीसे जो लाभ होगा उसका आधा आप हीका हिस्सा रहेगा।” श्रीकारनेगीने उन्हें धन्यवाद देते हुए उनके अनुरोधको अस्वीकार किया और कहा कि यद्यपि मि० स्काटसे उनका व्यापारिक सम्बन्ध-विच्छेद हो गया है, पर तो भी वे कभी मि० स्काटके हितके विरुद्ध कोई काम नहीं कर सकते। मि० गोल्ड वैरंग वापस गये। इसके बाद मि० स्काटने इस सम्बन्धमें एक पत्र लिखकर श्रीकारनेगीको उलहना दिया था। मि० स्काट ही उन दिनों पेन्सिलवेनिया रेलवे कम्पनीके प्रेसिडेन्ट थे और यदि मि० गोल्ड उस कम्पनीको खरीद लेते तो मि० स्काटको हटना पड़ता। श्रीकारनेगीने वीरतापूर्ण उत्तर लिख भेजा—“मैं तभी किसी रेलवे कम्पनीका प्रेसिडेन्ट होऊंगा, जब वह कम्पनी मेरी खास होगी।”

इस घटनाके ३० वर्षके बाद सन् १९०० ई० में श्रीकारनेगीने मि० गोल्डके पुत्रको बुलाकर पुराना किस्सा कह सुनानेके बाद कहा—“आपके पिताने पेन्सिलवेनिया रेलवे कम्पनीका प्रबन्ध मेरे हाथमें देना चाहा था, अब मैं आपको समुद्रके एक छोरसे दूसरे छोरतक फैली हुई वैवास रेलवे कम्पनीके प्रबन्धका भार सौंपता हूं।” यह रेलवे अटलाण्टिक समुद्रसे लेकर पिट्सबर्गतक फैली हुई है। इसको श्रीकारनेगीने मि० गोल्डके पुत्रके साझेमें खोला था। सन् १९०१ ई० में मि० मोरगनके हाथ वह कम्पनी बेच दी गयी और इस प्रकार श्रीकारनेगीका रेलवे-व्यवसाय समाप्त हुआ।

श्रीकारनेगीने अपने जीवनभरमें कभी शेयरका कारबार नहीं किया। केवल एकबार जीवनके प्रारम्भकालमें इन्होंने पेन्सिलवेनिया रेलवे कम्पनीके कुछ हिस्सोंको खरीदा था। उसके बाद इन्होंने कभी इस मार्गमें पैर नहीं रखा और अन्त-कालतक इस व्रतको निभाया। श्रीकारनेगी शेयरके व्यापारका जूआ समझते थे और इसीसे उससे बिलकुल अलग रहते थे। इन्होंने अपना ध्यान यथार्थ व्यापार—वस्तुओंके उत्पादनकी ओर दिया था। सभी व्यावसायिक पुरुषोंको श्रीकारनेगीके जीवनसे यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। जो लोग किसी वस्तुके उत्पादनमें प्रवृत्त हैं, उन्हें तो भूलसे भी फाटकेबाजीका नाम नहीं लेना चाहिये। उनके सामने जो समस्यायें समय समयपर उपस्थित होती रहती हैं, उन्हींको हल करनेके लिये उनका मन शान्त और स्थिर रहना चाहिये। व्यवसायकी सफ-लताके लिये शान्त मनकी आवश्यकता है। फाटकेबाजीमें जो मस्त हैं—जिनका मन क्षण क्षण शेयरके भाव चढ़ने-उतरनेपर चञ्चल होता रहता है, वे भला उत्पादनका व्यवसाय किस प्रकार सफलतापूर्वक चला सकते हैं। फाटकेबाजीकी तुलना मादक द्रव्योंके साथकी जा सकती है। फाटकेबाजोंको अभावमें भाव और भावमें अभाव दिखायी पड़ता है। वस्तुओंका यथार्थ ज्ञान उन्हें प्राप्त नहीं हो सकता। पर्वतको वे राई और राईको पर्वतके समान देखा करते हैं। उनका मन तो बराबर स्टाक एक्सचेंजपर रहता है, फिर शान्त और गंभीर विचार कहांसे

उत्पन्न होंगे। फाटकेबाजीसे वस्तुओंके मूल्यमें व्यर्थ वृद्धि होती है। अर्थशास्त्रकी दृष्टिसे इससे कुछ भी उत्पादन नहीं होता। क्या हमारे भारतीय व्यवसायी फाटकेबाजीकी इस हानिकारक प्रथाका त्यागकर श्रीकारनेगीके आदर्शपर अपना समय और शक्ति उपयोगी द्रव्योंके उत्पादनमें लगावेंगे?

न्यूयार्कमें स्थिर होनेके बाद श्रीकारनेगीने केकुक नामक स्थानके निकट मिसोसिपी नदीपर एक पुल बनानेका ठीका लिया। यह पुल २३०० फीट लम्बा है। पेन्सिलवेनिया रेलवे कम्पनीके प्रेसिडेन्ट मि० टामसनके साझेमें चरित्रनायकने इस कामका पूरा ठीका ले लिया। पुल तो बहुत सुन्दर और मजबूत तैयार हुआ, पर इन्हें आर्थिक लाभ कुछ नहीं हुआ। शाखा रेल कम्पनियोंका दिवाला निकल जानेके कारण ठीकेका पूरा रुपया इन्हें नहीं मिल सका। सौभाग्यकी बात यही हुई कि इन्हें घाटा नहीं उठाना पड़ा।

पर इनका परिश्रम व्यर्थ नहीं हुआ। केकुकमें पुल बनानेमें इन्हें जो सफलता मिली थी, उसे जानकर सेंट लुइस नामक स्थानके निकट मिसोसिपी नदीपर पुल बनानेवाली कम्पनीके प्रबन्धकोंने श्रीकारनेगीसे भेंट की और उनसे इस कार्यमें सहायता प्रदान करनेके लिये अनुरोध किया। स्कीमकी भलीभांति परीक्षाकर श्रीकारनेगीने कीस्टोनब्रिज वर्क्सकी ओरसे उस पुलको बनानेका ठीका ले लिया। कम्पनीके 'बौंड'को बेचनेके लिये श्रीकारनेगी सन् १८६९ ई० में लंडनको रवाना हुए। रास्ते हीमें

इन्होंने एक प्रोसपेक्ट्स तैयार किया और लंडन पहुंचकर अपने पूर्वपरिचित बैंकर मि० मार्गनसे मिले। अनेक प्रकारके वाद-विवादके बाद बड़ी चतुरताके साथ श्रीकारनेगी अपने उद्देश्यमें सफल हुए। सेंट लुइसब्रिजके लिये रुपया मिल गया। इस बातचीतमें इन्हें अच्छा लाभ हुआ। यूरोपके प्रसिद्ध बैंकरोंके साथ यह इनका पहला कारबार था।

मि० मारगनसे निबटकर श्रीकारनेगी अपने पूज्य जन्म-स्थान डनफरलिनका दर्शन करने गये। इस यात्रामें इन्होंने वहां सर्व-साधारणके स्नानके लिये एक स्नानागारका प्रबन्ध कर दिया। इसके पूर्व ही इन्होंने बैनोकबर्ग नामक स्थानके निकट प्रसिद्ध वीर वैलेसके स्मारक बननेमें चन्दा भेजा था। उस समय ये तारघर हीमें नौकर थे और इनकी मासिक आय केवल ३० डालर थी। इनकी माताने भी इस कार्यमें इन्हें उत्साहित किया था। माताको यह सोचकर बड़ा आनन्द मिला था कि उसके पुत्रका नाम भी दाताओंकी तालिकामें लिपिबद्ध रहेगा। भारतमें ऐसी मातायें कितनी हैं?

इसके कुछ वर्षोंके बाद माता और पुत्रने स्टरलिङ्ग नामक स्थानमें वैलेसके नामपर एक 'टावर' बनवाकर उसमें सर वाल्टर स्काटका चित्र स्थापित किया था। उसी समय श्रीकारनेगीने सन् (१८६८ ई० में) अपने जीवनका एक कार्य्यक्रम तैयार किया था। पाठकोंके मनोरंजनार्थ उसका पूरा अनुवाद नीचे दे दिया जाता है—

"सेंट निकोलस होटल, न्यूयार्क, दिसम्बर १८६८ ई०। अभी मैं तैंतीस ही वर्षका हूं, पर मेरी आय ५० हजार डालर वार्षिककी हो गयी! अब मैं दो वर्षों तक केवल यही कार्य करूंगा, जिससे मेरी आय ५० हजार डालर वार्षिककी निश्चित हो जाय। इसके बाद मैं अधिक धन कमानेका नाम भी नहीं लूंगा। खर्चके बाद शेष आमदनीको मैं अच्छे कार्य्योंमें व्यय किया करूंगा। सदैवके लिये व्यवसायसे हाथ खींच लूंगा और केवल दूसरोंको व्यवसायक्षेत्रमें सफलता प्राप्त करनेमें सहायता प्रदान किया करूंगा।

इसके बादमें आक्सफोर्डमें जाकर पूर्ण शिक्षा प्राप्त करूंगा। सभी प्रसिद्ध विद्वानोंसे परिचय प्राप्त करूंगा। इस कार्यमें तीन वर्ष लगेंगे। मैं जनताके सामने व्याख्यान देनेका पूर्ण अभ्यास डालूंगा। इसके बाद लन्दनमें रहूंगा। वहां किसी प्रसिद्ध समाचारपत्रके प्रबन्धका भार अपने ऊपर लूंगा और सर्वसाधारणके हितके कार्योंमें भाग लिया करूंगा। शिक्षाकी उन्नति और दरिद्रोंकी अवस्था सुधारनेकी ओर मेरा विशेष ध्यान रहेगा।

मनुष्यके सामने कुछ आदर्श रहना चाहिये। केवल धनोपार्जन करना सबसे निकृष्ट आदर्श है। इसमें मनुष्य-जीवनकी शक्तियोंका जैसा अपव्यय होता है, वैसा किसीमें नहीं होता। मैं जिस आदर्शको अपने सामने रखूंगा, उसमें प्राणपणसे लग जाऊंगा—अतएव आदर्श स्थिर करते समय मुझे ऐसे आदर्शोंको ही ध्यानमें रखना होगा, जिससे मेरा चरित्र उन्नत हो

सके। यदि मैं बहुत अधिक दिनोंतक धनोपार्जनके पीछे विह्वल बना रहूंगा तो मेरा सुधार असंभव हो जायगा। ३५ वर्षकी अवस्थामें मैं व्यवसायसे अवकाश ग्रहण करूंगा। इन दो वर्षों के बीच भी मैं दिनके तीसरे पहरको नयी नयी बातोंको सीखनेमें लगाया करूंगा।" भारतीय धनलोलुप इसे पढ़कर यथेष्ट शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

सन् १८६७ ई० में यूरोपकी सैर करते समय भी श्रीकारनेगीका ध्यान सर्वदा अपने व्यवसायकी ओर लगा रहता था। न्यूयार्कसे बराबर इनके पास व्यवसाय-सम्बन्धी चिट्ठियां आया करतीं और यह सैर करते हुए भी अपने व्यवसायको भलीभांति संचालित किया करते थे। गृहयुद्धके बाद अमेरिकाकी कांग्रेसने एक कानून बनाकर प्रशान्त महासागरके एक छोरसे दूसरे छोरतक रेलवे लाइन बनानेवालोंको सहायता देनेका निश्चय प्रकट किया था। रोमकी सैर करते समय श्रीकारनेगीके ध्यानमें आया कि इस कार्यमें कुछ भी विलम्ब होने देना अनुचित है। जब राष्ट्रका निर्णय हो चुका है कि देशके सभी प्रान्तोंके साथ रेलका सम्बन्ध स्थापित कर दिया जाय तो फिर इसमें अनावश्यक देर करनेकी आवश्यकता ही क्या है? इन्होंने अपना विचार मि० स्काटको लिख भेजा, पर उतना उत्तेजन नहीं मिला। अमेरिका लौटते ही इन्होंने अपने विचारके अनुसार कार्य शुरू किया। उन दिनों रेलवे लाइनमें सोनेवाली गाड़ियोंकी बहुत ज्यादा मांग थी, गाड़ी बनानेवाले मांग

पूरी नहीं कर सकते थे। उसी समय मि० पुलमैनने शिकागोमें एक कम्पनी स्थापितकर सोनेवाली गाड़ियोंका बनाना शुरू कर दिया। श्रीकारनेगीका एक महान् प्रतिद्वन्दी सामने मैदानमें आया। मि० पुलमैनकी जीवनी भी अत्यन्त शिक्षाप्रद है। पुलमैन पहले बढ़ईका काम करते थे। जब शिकागो नगरकी वृद्धि होने लगी तो मि० पुलमैनने मकानोंके बनानेका कन्ट्राक्ट लेना शुरू किया। इस कार्यमें उन्हें पूरी सफलता मिली। फिर तो उनका ऐसा नाम हुआ कि किसी भी प्रसिद्ध मकानके बनाये जानेके समय मि० पुलमैनको पहले ही कन्ट्राक्ट दिया जाने लगा। मि० पुलमैन लोगोंकी आवश्यकताका अनुभवकर उसके अनुसार ही कार्य करते थे। इसीसे उन्हें सर्वदा सफलता प्राप्त हुई। उन्होंने भी देखा कि अमेरिकन रेलवे कम्पनियोंके लिये सोनेवाली गाड़ियोंकी बड़ी आवश्यकता होगी, इसलिये शिकागोमें झटसे एक कम्पनी खोल दी। यूनियन पेसिफिक रेलवेको बहुतसी गाड़ियोंकी आवश्यकता थी। श्रीकारनेगी और पुलमैन दोनोंने अपना टेन्डर भेजा था। दोनों एक ही दिन एक ही साथ डाइरेक्टरोंके पास उपस्थित हुए। एक सन्ध्याको दोनों प्रतिद्वन्दी एक ही साथ सेंट निकोलस होटलकी सीढ़ीपर चढ़ रहे थे। इनकी मुलाकात पहले हो चुकी थी, पर घनिष्ठता नहीं थी ; तो भी श्रीकारनेगीने मि० पुलमैनसे कहा—

"नमस्कार मि० पुलमैन, हमलोग बड़े अच्छे मौकेपर मिले हैं। कहिये, क्या हमलोग अपने ही आचरणसे अपनी नाक नहीं कटा रहे हैं ?"

पुलमैन इस बातको माननेके लिये तैयार नहीं थे। उन्होंने पूछा—"आपके कहनेका मतलब क्या है?"

श्रीकारनेगीने सभी बातें उनको समझाकर कहा—"हम-लोग आपसमें प्रतिद्वन्दिताकर अपने ही लाभपर कुठाराघात कर रहे हैं।"

"अच्छा, तो आपका विचार क्या है?"

श्रीकारनेगीने कहा—"आइये, हम दोनों मिलकर गाड़ी देनेका ठीका ले लें और दोनों मिलकर इस कामके लिये एक कम्पनी कायम कर लें।"

मि० पुलमैनने पूछा—"कम्पनीका नाम क्या रहेगा?"

"पुलमैन कार कम्पनी।"

पुलमैन सन्तुष्ट हो गये। फिर तो दोनोंने एक साथ बैठकर घुलघुलकर बातें कीं। फल यह हुआ कि दोनों प्रतिद्वन्दी एक हो गये और मिलकर ठीका लिया। श्रीकारनेगी और मि० पुलमैन दोनोंकी कम्पनियां मिलकर एक हो गयीं। श्रीकारनेगी उस कम्पनीके सबसे बड़े हिस्सेदार थे।

मि० पुलमैनको भी अपने जीवनमें बहुतसी कठिनाइयां झेलनी पड़ी थीं। व्यवसाय-जीवनमें मनुष्यके सामने ऐसी कठिनाइयां स्वभावतः आती ही रहती हैं, पर जो विपत्तियोंसे न घबड़ाकर वीर योद्धाकी तरह अपने कर्त्तव्यक्षेत्रमें डटे रहते हैं, सफलता उन्हींके गलेमें जयमाल डालती है। यदि विचार-कर देखा जाय तो अधिकांश मनुष्य केवल भयके भूतसे दुःखित

रहा करते हैं। यथार्थ विपत्ति बहुत कम मनुष्योंके सामने उप-स्थित होती है। बहुतसी आपदाएं तो प्रायः काल्पनिक ही होती हैं। विचारवान पुरुषोंको तो उन्हें हंसी-खेलमें ही उड़ा देना चाहिये। बहुतसे मनुष्य विना पानी मोजा उतारते हैं—नदी मिले बिना ही सूखेमें तैरने लग जाते हैं—शैतानके बिना उप-स्थित हुए उसके भयसे कांपने लगते हैं। इससे बढ़कर मूर्खता और क्या हो सकती है। यथार्थ विपत्तिके आनेतक तो घब-ड़ानेकी जरूरत ही नहीं है और फिर उसके आनेपर भी उसे धीरतापूर्वक सहन करना ही बुद्धिमानोंका कर्त्तव्य है। बुद्धि-मान मनुष्य सर्वदा आशावादी होते हैं। निराशा उन्हें कभी नहीं सताती। यदि मनुष्य इस बातको ध्यानमें रखकर आचरण किया करें तो संसारमें हमें जो दुःख-शोक दिखायी दे रहा है, वह बहुत अंशोंमें दूर हो जाय। इस तत्वको भारत-वासियोंके तो हृदयंगम करनेकी बड़ी आवश्यकता है।

त्रयोदश परिच्छेद

लक्ष्मीकी गोदमें

इसी समय श्रीकारनेगीने अलगेनी रेलवेके प्रेसिडेन्ट कर्नल विलियम फिलिप्सकी ओरसे ऋणके लिये बातचीत करनेमें सफलता प्राप्त की। एक दिन प्रातःकाल कर्नल फिलिप्सने श्रीकारनेगीके न्यूयार्कके आफिसमें प्रवेशकर इनसे कहा कि उन्हें अपनी कम्पनीके लिये ५० लाख डालरकी नितान्त आवश्यकता है, पर अमेरिकामें इतना ऋण देनेवाला कोई बैंक नजर नहीं आता। वृद्ध कर्नल सभी बैंकरोंके यहां गिड़गिड़ा आये, पर सभी उनकी आवश्यकतासे नाजायज फायदा उठाना चाहते थे। कर्नलने श्रीकारनेगीसे सहायता प्रदान करनेका अनुरोध किया। श्रीकारनेगीने लंदन जाकर इसके लिये सिरतोड़ परिश्रम किया और अन्तमें अपने कार्य्यमें सफल हुए। इसमें इन्हें भी अच्छा लाभ हुआ। इसी प्रकार इन्होंने एकबार पेन्सिलवेनिया-रेलवे कम्पनीके लिये भी ऋणकी व्यवस्थाकर कमीशनमें बहुत-सा रुपया कमाया। इन सब कार्य्योंमें इन्हें प्रसिद्ध बैंकर मि०मार्गनसे अच्छी सहायता मिली। उसी समयसे दोनों गाढ़ी मित्रताके सूत्रमें आबद्ध हो गये। श्रीकारनेगीने अपने भविष्य-

जीवनमें ऐसा कोई भी काम नहीं किया, जिससे मार्गनको किसी प्रकारकी हानि पहुंचे।

किसी बड़े व्यवसायकी सफलताके लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि उसका आधार सत्यतापर स्थापित हो। व्यवसायमें केवल कानूनी वाक्योंपर ध्यान न रखकर न्यायपर ध्यान रखा जाय तो सफलता बिना बुलाये आती है। जो व्यवसायी न्याय और सत्यके पक्षपाती होते हैं, उनकी साख अपरिमित रहती है। श्रीकारनेगीने अपने व्यवसायमें इसी सुवर्ण नियमका उपयोग किया था। वे अपने सहयोगी व्यवसायियोंको संदेहका लाभ उठानेका पूरा मौका देते थे। जहां कहीं विवाद भी उपस्थित होता था, विरुद्धपार्टीको ही लाभ उठानेका अधिक मौका दिया जाता था। फाटकेबाजीमें यह कभी संभव नहीं है। फाटकेबाजीका संसार निराला होता है। वहां तो केवल जूएकी प्रवृत्ति उत्पन्न होती रहती है। ईमानदारीके साथ व्यापार करने और फाटकेबाजीमें अन्धकार और प्रकाशका अन्तर है। दोनों एक साथ नहीं हो सकते।

श्रीकारनेगीके व्यावसायिक जीवनकी एक बात सभी मनुष्योंके ध्यानमें रखनेयोग्य है। वे कभी ऐसे ऋणकी जमानत नहीं करते थे, जिसे स्वयं दे सकनेमें अपनेको समर्थ नहीं समझते थे। इनके प्रसिद्ध गुरु और मित्र मि० स्काटने एकबार टेक्सा पेसिफिक रेलवे बनानेका सूत्रपात किया। श्रीकारनेगीको तारद्वारा फिलेडेलफिया बुलाया गया। इस कम्पनीने

लंडनमें बहुतसा कर्ज लिया था। ऋण-परिशोधका समय आ गया था, पर उसे शोध करनेका कोई उपाय सामने नहीं था। मार्गन कम्पनीने ६० दिनका समय देना स्वीकार किया—यदि श्रीकारनेगी जमानत करें। श्रीकारनेगीकी समस्त पूंजी उस समय अपने व्यवसायमें लगी हुई थी। इन्होंने जमानती होना अस्वीकार कर दिया। इसके पूर्व ही इन्होंने मि० स्काटको २ लाख ५० हजार डालर ऋणस्वरूप दिये थे। आरंभसे ही चरित्रनायक मि० स्काटको इस व्यवसायमें हाथ डालनेसे मना करते थे। हजारों मील लम्बे रेल-पथको कर्ज लेकर बनाना असंभव व्यापार था। मि०स्काटको अपनी भूलका उचित दण्ड भोगना पड़ा। कम्पनीका दिवाला निकल गया और इसी शोकमें उन्होंने अपना प्राण दे दिया। मि० स्काटके साझेदारों-की भी वही हालत हुई।

दूसरेके ऋणके लिये जमानत देनेसे बढ़कर भयङ्कर व्यव-सायियोंके लिये दूसरा कार्य नहीं है। बहुत कम लोग ऐसी विपत्तियोंसे सफलतापूर्वक बाहर निकल पाते हैं। यदि व्यव-सायीगण निम्न लिखित दो प्रश्नोंको भलीभांति सोच लिया करें तो उन्हें विपत्तिके फंदेमें न फंसना पड़े। पहला प्रश्न यह है—क्या मेरे पास इतना अतिरिक्त धन है, जिससे मैं इस जमानतका पूरा रुपया बिना किसी विशेष विघ्न-बाधाके दे सकूंगा ? और ऐसा होनेपर भी दूसरा प्रश्न यह उपस्थित होता है कि मैं जिसका जमानती होता हूं, उसके लिये उतना रुपया

खोनेके लिये तैयार हूं ? यदि इन दोनों प्रश्नोंका उत्तर 'हां' हो तो उसे अपने मित्रकी सहायता करनी चाहिये, अन्यथा नहीं। यदि प्रथम प्रश्नका उत्तर 'हां' हो तो किसी दूसरे महाजनके ऋणके लिये जमानत देनेकी अपेक्षा स्वयं उतना रुपया अपने मित्रको उधार दे देना अच्छा है। मनुष्यके पास जो सम्पत्ति है, उसे अपने ऋणदाताओंके विश्वासके लिये अछूत रखना उचित है। इस नियमके अनुसार कार्य करनेके कारण ही श्रीकारनेगी सर्वदा विपत्तिसे बचे रहे। भारतीय व्यवसायियों, जमीन्दारों और गृहस्थोंको इससे यथेष्ट शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

इसी बीचमें श्रीकारनेगीने कई बार यूरोपकी यात्राकर अनेक सीक्यूरिटियोंको बेचनेका कार्य्य किया था। सब मिलाकर उन्होंने ३ करोड़ डालरकी सीक्यूरिटियां बेची थीं। उस समयतक लन्दनके बैंकवाले न्यूयार्ककी कुछ भी गिनती नहीं करते थे। न्यूयार्क-दर अधिक होनेपर भी लोग सीक्यूरिटियोंको खरीदनेसे हिचका करते थे। उन बैंकवालोंकी दृष्टिमें प्रजातन्त्र-अमेरिकासे यूरोपके राष्ट्रोंकी साख ही अधिक थी।

श्रीकारनेगीका व्यवसाय उनके भाई और मि० फिप्सकी देखरेखमें ऐसे अच्छे ढङ्गसे चल रहा था कि वे सप्ताहोंतक विना किसी चिन्ताके दूसरे कामोंमें प्रवृत्ति हो सकते थे। बैंकवालोंसे कारबार करते हुए कभी कभी इनकी प्रवृत्ति भी बैंकके व्यवसायमें पड़नेकी हो जाती थी। अपनी सफलताके समय कई

बार उपयुक्त अवसर इनके सामने उपस्थित हुए, पर इन्होंने पूर्ण सोच-विचारके उपरान्त अपनी समस्त पूंजी और शक्ति एक ही व्यवसायकी उन्नतिमें लगाये रखनेका दृढ़ निश्चय कर लिया। श्रीकारनेगी कोई व्यवहारकी चीज तैयारकर उससे सर्वसाधारणके अभावको दूरकर रुपया पैदा करना चाहते थे—कागजी व्यवसायको पसन्द नहीं करते थे। इसी बीचमें इनका कारबार बढ़कर अमेरिकामें सर्वश्रेष्ठ हो गया था। एक बार इन्होंने एक रेलकम्पनी बनानेका विचार भी किया था, पर शीघ्र ही उससे हाथ खींचकर लोहेके व्यापारकी उन्नति करनेमें ही अपना पूर्ण ध्यान लगाना शुरू किया।

श्रीकारनेगी अपने व्यवसायमें पूर्ण सफलता प्राप्त करना चाहते थे और यही भाव इनके व्यवसायकी सफलताका मूल कारण था। अपनी पूर्ण शक्तिको एक मार्गमें—एक व्यवसायमें लगानेसे ही पूर्ण उन्नति होनेकी संभावना रहती है। शक्तिको छितरा देनेसे कोई लाभ नहीं हो सकता। शायद ही आपने किसी ऐसी औद्योगिक संस्थाको देखा होगा, जिसने एक ही साथ अनेक वस्तुओंको बनानेका काम हाथमें लेकर उन सभीमें पूर्ण सफलता लाभ की हो। जिन मनुष्योंने सफलता प्राप्त की है—सब अपनेको किसी निश्चित कार्यक्षेत्रके भीतर आबद्ध रखते थे। बहुतसे व्यापारी किसी एक व्यापारमें आर्थिक सफलता लाभकर फाटकाबाजी शुरू करते हैं या अपना रुपया किसी ऐसे व्यापारमें लगा देते हैं, जिसकी सफलताका उन्हें ज्ञान नहीं है।

वे पूर्ण सफलता लाभ करनेसे वंचित रह जाते हैं। वे घरके व्यवसायको छोड़कर मृगमरीचिकाके पीछे व्याकुल रहते हैं। श्रीकारनेगीने अपना ध्यान सब प्रकारके व्यवसायसे हटाकर केवल लोहेके व्यापारको उन्नत करनेमें लगाया और इसीलिये लोग उन्हें 'लौह-सम्राट्' (Steel King) कहा करते हैं।

श्रीकारनेगीके इङ्गलैण्ड-भ्रमणसे इनका परिचय प्रसिद्ध लौह-व्यवसायियोंसे हो गया। शीघ्र ही चरित्रनायक इङ्गलैंडके आयरन और स्टील इन्स्टीट्यूटके सभापति बनाये गये। बृटिश प्रजा नहीं होनेपर भी एक अङ्गरेजी सभाके ये सभापति बनाये गये। श्रीकारनेगीने पहले तो इस सम्मानको अस्वीकार कर दिया था—कारण इनके अमेरिकामें रहनेके कारण ये भलीभांति इन्स्टीट्यूटका काम संपादन नहीं कर सकते—पर लोगोंके जोर देनेपर उसे स्वीकार कर लिया।

इसी समय सन् १८७० ई०में श्रीकारनेगीने इस्पात बनानेका एक वृहत् कारखाना खोला। इस कार्यमें इन्हें इङ्गलैंडके प्रसिद्ध इस्पात-व्यवसायी मि० ह्वाइटहालसे बड़ी सहायता मिली। ह्वाइटहालने अमेरिका जाकर इस सम्बन्धकी सभी कठिनाइयोंको दूर कर दिया। इसके बाद तो मि० ह्वाइटहालसे श्रीकारनेगीकी गाढ़ी दोस्ती हो गयी। अपने व्यवसायके रहस्योंको दोनों मुक्त-कंठ होकर परस्पर बताया करते थे। दोनोंकी मित्रता अन्ततक बनी रही। मि० ह्वाइटहाल श्रीकारनेगीके बाद आयरन और स्टील इन्स्टीट्यूटके सभापति बनाये गये।

चतुर्दश परिच्छेद

दुनियांकी सैर

श्रीकारनेगीकी इस्पातकी मिल खूब चल निकली। बीच बीचमें अनेक प्रकारकी विपत्तियां भी आयीं—अनेक छोटे छोटे व्यवसायियोंका दिवाला निकला, पर कारनेगीमिलकी स्थिति हिमालयके समान अटल रही। श्रीकारनेगीकी संरक्षकता और प्रबन्धमें भला असफलताके लिये स्थान कहां?

कुछ दिनके बाद जर्मनी-निवासी विलियम वार्न ट्रेजरकी देखरेखमें लौह-मिलका कार्य चलने लगा। विलियम कोरा जर्मन था—अङ्गरेजी बिलकुल नहीं जानता था। शुरू शुरूमें वह कारनेगीमिलमें सामान्य कार्य करनेके लिये ही नियुक्त किया गया था, पर अपनी प्रतिभाके बलसे उसने देखते देखते उन्नति कर ली। शीघ्र ही वह अङ्गरेजी बोलनेमें पटु हो गया और ६ डालर प्रति सप्ताहपर किरानीका काम करने लगा। वह विश्रामका नाम भी नहीं जानता था, पर अपने मालिकके कामके लिये दिनरात इस प्रकार व्यस्त रहता था कि जहां देखो वहीं विलियम मौजूद है। उसे मिलमें होनेवाली प्रत्येक बातकी खबर रहती थी और उसकी नजरसे कुछ छूटने नहीं पाता था।

विलियमकी देखरेखमें कारनेगी-लोह-मिलकी बड़ी उन्नति हुई। कुछ वर्षतक लगातार कामकर वह छुट्टी लेकर जर्मनी गया। वहांसे लौटकर फिर प्राणपणसे मिलकी सफलताके लिये यत्न करने लगा। प्रातःकालसे लेकर दस बजे राततक वह मिलमें मौजूद रहता था। उसकी कर्तव्यशीलतापर मुग्ध होकर श्रीकारनेगीने उसे अपनी कम्पनीका हिस्सेदार बना लिया था। मरनेके समय दरिद्र विलियम ५० हजार डालर वार्षिककी आय छोड़कर मरा था।

विलियमके सम्बन्धमें दो एक कथा अत्यन्त मनोरंजक हैं। एक दिन उसने मिलोंके सरकारी निरीक्षक कैप्टेन इवान्सके साथ दुर्व्यवहार किया। कैप्टेनने इस बातकी शिकायत श्रीकारनेगीसे की। श्रीकारनेगीने विलियमको समझाया कि गवर्नमेंटके अफसरोंके साथ भलमनसाहतका व्यवहार करना चाहिये। इसपर विलियम बोल उठा—"वह तो आकर मेरे सिगरेटोंको पी जाता है। फिर भीतर जाकर हमारे लोहेकी निन्दा करता है। ऐसे आदमियोंके बारेमें आप क्या कहते हैं? अच्छा, मैं कल उससे क्षमा मांग लूंगा।"

कैप्टेनको कह दिया गया कि विलियम क्षमा-प्रार्थना करेगा। दूसरे दिन कैप्टेन इवान्सने हंसते हुए विलियमकी क्षमा-प्रार्थनाका हाल कह सुनाया। विलियमने क्षमा-प्रार्थना इन शब्दोंमें की थी—

"अच्छा कैप्टेन! मैं आशा करता हूं कि आज सवेरे तुम्हारा

आचरण ठीक रहेगा। तुम्हारे विरुद्ध मुझे अब कुछ नहीं कहना है कैप्टेन।" इतना कहकर उसने हाथ बढ़ाकर इवान्ससे हाथ मिलानेकी इच्छा प्रकट की। कैप्टेनने भी हंसकर हाथ मिलाया और फिर सब बखेड़ा मिट गया।

विलियमने एकबार एक लोहेके व्यवसायीके हाथ कुछ पुरानी पटरियोंको बेचा था। व्यापारीने उनको बहुत खराब पाकर चरित्रनायकसे इस बातकी शिकायत की। उसने हर्जाना भी मांगा। विलियमसे कहा गया कि वह उस व्यापारीसे मिलकर सब बात ठीक करे। विलियम उस व्यापारीके यहां गया और घूम-फिरकर उसके कारखानेको अच्छी तरह देखकर जब उन पटरियोंको कहीं नहीं देखा तो उससे कहा—"अच्छा महाशय, यदि आपको मेरी पटरियां पसन्द नहीं हैं तो आप मुझे लौटा दीजिये। आपको मैं टन पीछे पांच डालर नफेमें देता हूं।" पटरियां तो काममें आ चुकी थीं, व्यवसायीसे कुछ उत्तर देते नहीं बन पड़ा। मामला वहीं ठंढा पड़ गया।

श्रीकारनेगीके प्रसिद्ध साझेदार मि० फिप्स मिलके व्यापारिक विभागके अध्यक्षका कार्य करते थे। जब व्यवसाय बहुत अधिक बढ़ गया तब वे इस्पात-विभागमें चले आये और विलियम एवोट नामक एक नवयुवक उनके स्थानमें कार्य करने लगा। एवोटका जीवन भी विलियम बोर्न ट्रेजरके समान ही घटनामूलक था। पहले वह किरानीके कामपर नियुक्त हुआ

था। धीरे धीरे उन्नतिकर वह भी हिस्सेदार बना लिया गया और अन्तमें कम्पनीका प्रेसिडेन्ट हुआ।

पहलेपहल जब श्रीकारनेगीने इस्पातका कारखाना खोला तो इनके प्रतिद्वन्दियोंने इनको विशेष परवाह नहीं की। उन लोगोंको अपने व्यवसायमें बड़ी कठिनता उठानी पड़ी थी और उनका विश्वास था कि सभीको उसी प्रकारकी कठिनता उठानी पड़ी होगी, पर श्रीकारनेगीने अपने सुप्रबन्धके द्वारा जो उन्नति की थी उससे वे लोग परिचित नहीं थे। फल यह हुआ कि श्रीकारनेगीका व्यवसाय अपने प्रतिद्वन्दियोंके मुकाबिलेमें बढ़ चला। पहले ही मासमें उन्हें ११ हजार डालरकी बचत हुई। इन्होंने हिसाब-किताब रखनेकी ऐसी अच्छी विधि निकाली थी, जिससे प्रतिदिनके लाभका हाल मालूम हो सकता था।

इस प्रकार व्यवसायमें सफलता प्राप्त करनेके बाद श्रीकारनेगीने कुछ दिन सैर करनेका इरादा किया। अपने प्रिय मित्र मि० जे० डब्ल्यू वेन्डेवोर्ट "वेन्डी" के साथ चरित्रनायकने संसार-भ्रमणके लिये प्रस्थान किया। सन् १८७८ ई०की शरद्-ऋतुमें यात्रा आरम्भ हुई। यात्राका विवरण श्रीकारनेगी लिखते जाते थे। प्रारम्भमें इनका विचार भ्रमण-वृतान्तको प्रकाशित करनेका नहीं था—छापकर केवल मित्रोंको दिखानेका था। इन्होंने पुस्तक छपाकर मित्रोंके पास भेजी और बड़ी उत्सुकताके साथ उनकी समालोचनाकी प्रतीक्षा करने लगे।

इन्हें मित्रोंसे ग्रन्थकी बुरी समालोचनाका भय नहीं था। डर यही था कि वे लोग प्रशंसाके पुल बांध देंगे—सच्ची बातें नहीं कहेंगे। जो हो, सभी लेखक समालोचकोंसे प्रशंसा ही चाहते है। 'निज कवित्त केहि लाग न नीका, सरस होहि अथवा अति फीका।' फिर भी जब किसी लेखककी पहली पुस्तक ही लोगोंके सामने पहुंचती है तो उसका मन पुस्तककी प्रशंसाके लिये जिस प्रकार लालायित रहता है, उसे भुक्त-भोगी ही जान सकते हैं। अस्तु, एक मित्रने चरित्रनायकको लिखा—"आपकी पुस्तकने मेरी कई घंटेकी नींद हराम कर दी। पुस्तक शुरू करके छोड़नेकी इच्छा ही नहीं हुई। आखिर दो बजे रातको पुस्तक समाप्तकर सो सका।"

सेन्ट्रल पेसिफिक रेलवेके प्रेसिडेन्ट मि० हटिंगटनने इनकी पुस्तकको पढ़नेके बाद एक दिन मुलाकात होनेपर कहा—"मैं आपको बधाई देना चाहता हूं।"

"क्यों? बात क्या है?" चरित्रनायकने पूछा।

"मैं आपकी पुस्तक अथसे इतितक पढ़ गया।"

श्रीकारनेगीने कहा—"यह तो सामान्य बात है। बहुतसे मित्र मेरी पुस्तकको पढ़ गये हैं।"

"ओ हो! पर आपके कोई मित्र मेरे समान नहीं हैं। मैंने जमा-खर्चकी वहीको छोड़कर कुछ वर्षों से एक भी पुस्तक नहीं पढ़ी थी। मुझे आपकी पुस्तक पढ़नेकी भी इच्छा नहीं थी, पर पुस्तक उठानेपर मैं उसे बिना समाप्त किये छोड़

नहीं सका। मैंने पांच वर्षके भीतर केवल आपकी पुस्तक पढ़ी है।"

इसी प्रकार प्रशंसापूर्ण समालोचना इस "दुनियांकी सैर" की हुई। पीछे तो सर्वसाधारणके लिये यह पुस्तक ग्रन्थके रूपमें छपायी गयी और समाचार-पत्रोंने भी अच्छी समालोचना की। इस प्रकार श्रीकारनेगी प्रथम ग्रन्थके लेखक हुए।

इस भ्रमणसे श्रीकारनेगीके विचार बहुत बदल गये। उस समय प्रसिद्ध तत्ववेत्ता स्पेन्सर और विकाशवादके आविष्कारक मि० डारविनका यश-सौरभ चारों ओर फैल रहा था। चरित्रनायकने उनके ग्रन्थोंका पूर्ण अध्ययन किया। चीन जानेपर इन्होंने 'कन्फ्यूशियस', भारतवर्षमें बौद्ध और हिन्दू-धर्मके ग्रन्थोंको पढ़ा। 'जेन्दावेस्ता' भी इन्होंने पढ़ डाला। अब इन्हें पूर्ण मानसिक शान्ति प्राप्त हुई। अशान्त मानसिक जगत्में शान्तिका साम्राज्य छा गया। ईसाके "स्वर्ग तुम्हारे भीतर ही है" इस वाक्यका प्रकृत अर्थ इनकी समझमें आया। इन्होंने समझा कि संसार ही हमारा कर्मक्षेत्र है और अपने कर्त्तव्यके फलसे ही हम स्वर्ग या नरकका सुख-दुःख इसी जीवनमें भोगते हैं। इन्हें पता लगा कि सभी देशोंकी सभी जातियोंके धर्ममें सच्ची बाते हैं। कोई धर्म अच्छा या बुरा नहीं है। देशकी स्थितिके अनुसार जहां जिस धर्मकी उत्पत्ति हुई है, वहांके निवासियोंके लिये वही ठीक है।

इस यात्राके समय श्रीकारनेगीने भिन्न भिन्न देशोंके

लोगोंकी स्थिति और मनोभावोंके अध्ययन करनेके बाद जाना कि सब अपने घरको ही सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। सिंगापुरमें पहुंचकर इन्होंने वहांके निवासियोंको अर्द्धनग्न और बालक-बालिकाओंको आनन्द-मग्न हो उछलते-कूदते पाया। चरित्रनायकको देखकर लोग घेरकर खड़े हो गये। इन्होंने दुभाषियेके द्वारा उनसे कहा कि जाड़ेमें अमेरिकाकी नदियोंका जल बर्फ बन जाता है और लोगोंको उसीपर चलकर पार होना पड़ता है। उन लोगोंने उत्तर दिया—"हमलोगोंका देश बड़ा सुन्दर है। आप यहीं आकर क्यों नहीं बस जाते? हमलोगोंको तो यहां बड़ा आराम है।" सत्य है—सभीको घर प्रिय होता है। स्वर्ग भी घरसे बढ़कर नहीं है।
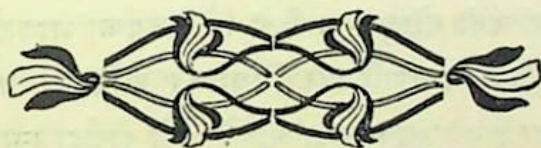
पञ्चदश परिच्छेद
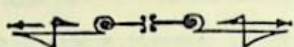
भूतलपर स्वर्ग

इसी यात्रामें श्रीकारनेगी डनफरलिनके दर्शनके लिये भी गये थे। १२वीं जुलाई सन् १८७७ ई०में इन्हें 'स्वतन्त्र नागरिक' बनाकर इनका सम्मान किया गया। इनके जीवनमें पहली वार सर्वसाधारणने इन्हें सम्मानित किया था। श्रीकारनेगी हर्षातिरेकसे विह्वल हो गये। उस अवसरपर इन्होंने 'स्वतन्त्रता' पर जो भाषण दिया था, सबने उसकी भूरि भूरि प्रशंसा की। पीछे इन्होंने अपने मामा मारिसनसे कहा कि मैंने उस समय केवल वे ही बातें कही थीं, जो मेरे हृदयमें थीं। मारिसन प्रसिद्ध वक्ता था। उसने कहा—

"तुमने ठीक ही किया था अन्ड्रा! बस, भाषण करनेके समय केवल वही बोलना चाहिये जो हृदयका भावहो।"

सार्वजनिक भाषणमें इस नियमको चरित्रनायकने सर्वदा ध्यानमें रखा। नवयुवक वक्ताओंको इसे सर्वदा स्मरण रखना चाहिये। श्रोताओंके सामने खड़े होकर उनके सामने साधारण बातचीतकी तरह भाषण करना चाहिये। कृत्रिमता दिखानेसे ही बाधा उपस्थित होती है। बस, प्रकृतिस्थ होकर हृदयकी बात कह सुनानी चाहिये। हृदयसे निकली हुई बात हृदयतक पैठ

जाती है। प्रसिद्ध वक्ता कर्नल इङ्गरसोलसे एक दिन श्रीकार-नेगीने उनकी सफलताका रहस्य पूछा। उन्होंने कहा—

"सदैव कृत्रिमतासे दूर रहो। लोगोंके सामने साधारण बात-चीतके समान भाषण करो।"

इस प्रकार संसार-भ्रमणकर श्रीकारनेगी सन् १८८१ ई०-की वसन्तऋतुमें अमेरिका लौट आये। व्यवसायसे छुट्टी लेकर सैर करनेके बादसे ही इनका स्वास्थ्य बराबर ठीक बना रहा। जो काम संसार भरकी दवासे नहीं हो सका, वह भ्रमणसे सिद्ध हुआ।

सन् १८८६ ई० में चरित्रनायकके ऊपर अनभ्र वज्रपात हुआ। जिस माताके पूज्य चरणोंके प्रतापसे इन्होंने मनुष्यताकी शिक्षा ग्रहण की थी—जो माता इनके जीवनका सर्वस्व थी—वही अपने भाग्यवान धनकुबेर पुत्रकी सफलतापर आनन्द मनाती हुई स्वर्गधामको चली गयी। इनका छोटा भाई 'टाम' भी कुछ ही दिनोंके बाद चल बसा। उस समय चरित्रनायक भी भयंकर कालज्वरसे पीड़ित थे। जिस दिन इन्हें अपने भ्राता और माताकी मृत्युकी सूचना मिली, उस दिन इनकी दशा भी अत्यन्त संकटपूर्ण हो रही थी। बचनेकी कोई आशा न होनेके कारण इन्होंने भी धैर्य्यपूर्वक उस दारुण संवादको सुना। अबतक वे लोग साथ ही रहते आये थे—फिर मरनेके समय भी साथ क्यों न दिया जाय? पर ईश्वरकी इच्छा कुछ दूसरी ही थी।

धीरे धीरे चरित्रनायक आरोग्य लाभ करने लगे। अब इन्हें अपना घर उजाड़ मालूम होने लगा। केवल आशाकी एक क्षीण रश्मि दूरसे दिखायी दे रही थी। कई वर्षों से श्रीकारनेगी कुमारी ह्विटफील्डसे परिचित थे। अपनी माताकी आज्ञा ले वह श्रीकारनेगीके साथ घोड़ेपर सवार होकर घूमने निकला करती थी। दोनों इसको बहुत पसन्द करते थे। और भी अनेक कुमारियोंका नाम चरित्रनायककी लिस्टपर लिखा था। धीरे धीरे सब खिसक गयीं, पर कुमारी ह्विटफील्ड दृढ़ रही। पहले तो कुमारी ह्विटफील्डने धनकुवेर कारनेगीसे विवाह करना अस्वीकार कर दिया था, पर जब उसने देखा कि माता और भाईकी मृत्युसे कारनेगीका संसार उजाड़ हो गया है और वह यथार्थमें चरित्रनायकका सहायक बन सकती है, तब उसने स्वीकार कर लिया। उस समय कुमारी ह्विटफील्डकी अवस्था २८ वर्षकी और कारनेगीकी अवस्था ५२ वर्षकी थी। २२ वीं अप्रैल सन् १८८७ ई० को न्यूयार्कमें दोनों विवाह-बन्धनमें बंध गये और समाजकी प्रथाके अनुसार 'हनीमून' मनानेके लिये वाइट द्वीपमें चले गये।

जङ्गली फूलोंको देखकर श्रीमती कारनेगी बहुत प्रसन्न हुई। पुस्तकोंमें श्रीमतीने इन फूलोंके बारेमें पढ़ा था—अब प्रत्यक्ष दर्शनकर श्रीमतीकी प्रसन्नताका क्या पूछना था। श्रीकारनेगी-का चचा लौडर वहां इनसे मिलने आया और उसके साथ किल-ग्रास्टन नामक स्थानमें जाकर इन्होंने ग्रीष्मकाल व्यतीत किया।

स्काटलैण्डके दृश्योंको देखकर श्रीमती कारनेगी मुग्ध हो गयी। कुछ दिनके लिये श्रीकारनेगी डनफरलिन भी गये और वहां भी खूब आनन्द प्राप्त किया। लड़कपनकी बातोंको अपनी सहधर्मिणीको बताकर वे विचित्र कुतूहल लाभ करते थे।

एडिनबर्गमें इन्हें नागरिक स्वाधीनता प्रदान की गयी। मजूरोंकी एक विशाल सभामें भी इन्होंने भाषण दिया था। मजूरोंने इन्हें प्रीति-भेंट समर्पित की थी। श्रीमती कारनेगी-को भी उन लोगोंने सम्मानित किया था।

इस प्रकार आनन्द मनाकर श्रीकारनेगी अमेरिका लौट आये। सन् १८६७ ई०की ३० वीं मार्चको श्रीमती कारनेगीने एक कन्यारत्नको प्रसव किया। श्रीमतीके अनुरोधसे बालिका-का नामकरण दादीके नामके अनुसार मारगेरेट किया गया। श्रीमतीके ही अनुरोधसे चरित्रनायकने स्काटलैण्डमें ग्रीष्म-निवासके लिये स्कीवो कैसल खरीदा।

चरित्रनायकका अपनी सहधर्मिणीके प्रति कैसा भाव था, यह उन्हींके शब्दोंमें कहना ठीक होगा। उन्होंने अपने आत्म-चरितमें लिखा है—

"मेरी पूज्य माता और सहोदर भ्राताके वियोगके कुछ मासके बाद ही श्रीमती कारनेगीने चिरसंगिनी बन मेरे जीवनको बिलकुल बदल दिया। मेरा जीवन उसके संसर्गसे इतना आनन्दपूर्ण हो गया है कि उसके बिना जीनेकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता। विवाह करनेके पूर्व मैं केवल

उसके ऊपरी गुणों हीको जान सका था। उस समय उसकी पवित्रता, साधुता और बुद्धिमत्ताकी गहराईका पता मैं नहीं पा सका था। इन बीस वर्षोंके अनुभवसे मैं कह सकता हूं कि वह शान्तिमयी देवी है। जहांतक उसका प्रभाव पड़ता है वहां शान्ति छा जाती है। अपने जीवनमें उसने कभी किसीके साथ झगड़ा नहीं किया। जो कोई उससे मिलते हैं, वे सन्तुष्ट होकर ही जाते हैं। धन और उच्च सामाजिक जीवनका अभिमान उसे छूतक नहीं गया है। गन्दे शब्द उसके मुंहसे निकल ही नहीं सकते। उसका परिचय केवल निर्दोष मनुष्योंके साथ है। वह दिनरात लोगोंके हित-साधनके लिये चिन्तित रहती है। उसके बिना मेरा जीवन असह्य हो जाता। इन बीस वर्षोंतक वही मेरे जीवनका आधार रही है।"

इस प्रकार सच्ची सहधर्मिणी पाकर श्रीकारनेगीके लिये यह संसार ही स्वर्गमय हो गया था। स्वामी और स्त्रीके रूपमें दो पवित्र आत्माओंके संयोगसे यथार्थमें भूतलपर स्वर्गका आविर्भाव होता है। श्रीकारनेगी इस विषयमें यथार्थमें भाग्य-वान थे।

षोडश परिच्छेद

व्यवसायका सञ्चालन

इङ्गलैण्डमें घूमते समय श्रीकारनेगीने अनुभव किया था कि व्यवसायकी सफलताके लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि जिस वस्तुका उत्पादन किया जाता है, उसके कच्चे मालोंका प्रबन्ध भी उस व्यवसायीके पूर्ण अधिकारमें रहना चाहिये। प्रत्येक वस्तुके उत्पादनके लिये कच्चा माल, पूंजी, श्रम और सङ्गठनकी आवश्यकता हुआ करती है। यदि व्यवसायी इन सभी बातोंको अपने अधिकारमें रख सकें तो उनकी सफलता उनके अपने हाथमें है। श्रीकारनेगीने भी लोहेके व्यवसायमें पूर्ण सफलता लाभ करनेके लिये यह आवश्यक देखा कि कच्चे लोहेकी खानोंको ही खरीद लिया जाय। तदनुसार कार्य्य किया जाने लगा। टाइरन प्रदेशमें एक लोहेकी खान खरीदी गयी, पर इसमें कारनेगीकम्पनीको कुछ धोखा खाना पड़ा। ऊपर तो लोहा अच्छा निकला, पर नीचे जाकर मामला बिलकुल गोलमाल था। पीछे श्रीकारनेगीने अपने रसायन-शास्त्रीको बहुत सी खानोंकी परीक्षाके लिये बाहर भेजा। फल यह हुआ कि इस बार उन्हें आशातीत सफलता मिली। बहुतसी ऐसी खानोंको

चरित्रनायकने खरीदा, जिन्हें रसायन-ज्ञानकी अनभिज्ञताके कारण कोई कारखानेवाला नहीं पूछता था, पर यथार्थमें उसमें प्रथम श्रेणीका लोहा पाया गया। चरित्रनायकके चचेरे भाई लौडरने इस काममें अच्छी मदद की। वह पीछे इनकी कम्पनी-में हिस्सेदार भी हो गया।

चरित्रनायक इस प्रकार व्यवसाय-जगत्में पूर्ण सफलता लाभ कर रहे थे। एक बार बड़े भाग्यसे इनकी कम्पनी भारी हानि उठानेसे बची। पिट्सवर्गमें नैशनल ट्रस्ट नामकी एक कम्पनी थी। लोगोंके अनुरोधसे श्रीकारनेगीने भी उसमें २ हजार डालरके शेयर खरीद लिये थे। इन्हें इन शेयरोंके सम्बन्धमें विशेष कुछ मालूम भी नहीं था। एक बार संयोगवश चरित्रनायक पेनस्ट्रीटकी ओर घूमने निकले, वहीं उस कम्पनीका आफिस था। इन्होंने बड़े बड़े सुनहले अक्षरोंमें कम्पनीके साइनबोर्डपर लिखा हुआ देखा—"कम्पनीके हिस्से-दार व्यक्तिगत रूपसे इसकी हानिके लिये दायी हैं।" आफिस लौटनेपर अपने वही-खातोंको उलटकर देखनेसे इन्हें पता लगा कि २ हजार डालरके मूल्यके शेयर इनकी कम्पनीने भी खरीद रखे थे। इन्होंने प्रवन्धकको बुलाकर कहा—

"आप कृपाकर इस कम्पनीके शेयरोंको आज तीसरे पहर तक वेच डालिये।"

उसने कहा—"इतनी जल्दबाजीकी जरूरत नहीं, कुछ दिन और ठहरना चाहिये।"

श्रीकारनेगीने गंभीरतासे उत्तर दिया—"नहीं, इनको आज ही बेच डालना होगा।"

शेयर बेच डाले गये। कुछ ही दिनोंके बाद नैशनल ट्रस्ट-कम्पनीका दिवाला निकल गया और हिस्सेदारोंको तबाह होना पड़ा। यदि श्रीकारनेगीने शेयरोंको न बेच डाला होता तो इन्हें भी कम्पनीकी हानिके लिये व्यक्तिगत रूपसे भागी बनना पड़ता और इनकी कम्पनीको भारी हानि उठानी पड़ती।

व्यवसायक्षेत्रमें कार्य करते हुए कभी व्यक्तिगत उत्तरदायित्व नहीं लेना चाहिये। किसी ऐसी कम्पनीका शेयर खरीदना तो अत्यन्त अनुचित है, जिसके हिस्सेदारोंको व्यक्तिगत रूपसे कम्पनीकी हानिका देनदार बनना पड़े। केवल दो हजार डालरके शेयरके लिये श्रीकारनेगीको लाखों डालरकी चपेटमें पड़ना पड़ता और यह शेयर भी केवल मित्रोंके अनुरोधसे केवल इसलिये खरीदे गये थे, जिसमें श्रीकारनेगीका नाम भी लिस्टमें रहे।

लोहेके स्थानमें इस्पातका व्यवहार होनेसे श्रीकारनेगीकी कम्पनीने बड़ा लाभ उठाया। उस समय लौहराजका स्थान इस्पातराजने ग्रहण कर लिया था। उसी समय पिट्सबर्गके कुछ लोहेके व्यवसायी अपनी मिलोंको बेच डालना चाहते थे। श्रीकारनेगीने सब कारखानोंको खरीद लिया। अब सब कम्पनियोंको मिलाकर 'कारनेगी ब्रदर्स एण्ड को'के नामसे एक बड़ी कम्पनी खोल दी गयी। स्थान स्थानमें इसकी शाखायें खोल

दी गयीं। अब तो यह कम्पनी लोहेकी खानोंके संचालनसे आरम्भकर लोहे और इस्पातकी सब प्रकारकी छोटी-बड़ी चीज़ोंको तैयार करनेमें समर्थ थी।

सन् १८८८ ई०से लेकर सन् १८६७ ई०तक कारनेगी-कम्पनीने किस हिसाबसे उन्नति की थी, उसका लेखा पाठकोंके लिये अवश्य ही मनोरञ्जक होगा। सन् १८८८ ई०में श्रीकारनेगीने २ करोड़ डालर अपने व्यवसायमें लगाये थे और सन् १८६७ ई०में वही बढ़कर चार करोड़ ५० लाख डालर हो गये। सन् १८८८ ई०में ६ लाख टन इस्पात तैयार होता था—दश ही वर्षोंमें वह बढ़कर २० लाख टन हो गया। पहले प्रतिदिन २००० टन माल तैयार होता था—पीछे वह ६ हज़ार टन दैनिक हो गया।

अमेरिका शीघ्र ही लोहेके कारबारमें संसारमें सर्वश्रेष्ठ हो जायगा। संसारभर अमेरिकामें प्रस्तुत लोहेकी चीज़ोंको खरीद रहा है—भविष्यमें यह प्रतिस्पर्द्धामें सबको दबा सके, यह असम्भव नहीं है। यद्यपि वहां मज़ूरी अत्यन्त महंगी है, पर अमेरिकावाले इस बातको अच्छी तरह जानते हैं कि सब प्रकारसे सन्तुष्ट मज़ूर जितना अधिक काम कर सकता है, उसका दशांश भी परिवारके भरणपोषणके लिये चिन्ताग्रस्त, सब प्रकारके आर्थिक कष्टोंको भोगता हुआ शान्ति और उत्साहहीन, जी चुरानेवाला मज़ूर नहीं कर सकता। अमेरिकन मज़ूर पूरी मज़ूरी लेते हैं तो पूरा काम भी कर देते हैं। भारतवर्षकी तरह वहांके मज़ूर अशिक्षित और कामचोर

नहीं होते और न वहांके व्यवसायी यहांवालोंकी तरह मक्खी-चूस ही हैं। भारतीय व्यवसायी मजूरोंको कमसे कम मजूरी देकर अधिकसे अधिक काम लेना चाहते हैं। वे मजूरोंकी शिक्षा, स्वास्थ्योन्नति तथा आमोद-प्रमोदके लिये कुछ भी करना नहीं चाहते। मजूर भी अपने भाग्यको कोसते हुए रोते-कलपते दिन काटते हैं। अमेरिकन मजूर उन्नति करके राष्ट्रका अध्यक्ष बन सकता है, पर यहां तो रमुआ कहार सब दिन बरतन धोते ही बूढ़ा हो जाता है। ऐसी स्थितिमें भारतीय व्यवसायकी दुर्गति हो और भारतवासी दरिद्रताके मारे बेमौत मरा करें तो इसमें आश्चर्य ही क्या है। यहांका व्यावसायिक-जगत् ही रोगग्रस्त हो रहा है। बिना मजूरोंकी दशाके सुधारे भारतीय व्यवसायकी उन्नति असम्भव है।

अमेरिकन लौह-व्यवसायकी उन्नतिका एक कारण और है। इसके लिये उसे सर्वश्रेष्ठ Home market मौजूद है। पूंजीसे लाभ उठानेके लिये जितने मालकी खपतकी जरूरत है, उतना अमेरिका हीमें बिक जाना बिलकुल आसान है। ऐसी स्थितिमें अमेरिकन व्यवसायी बचे हुए मालको (Surplus Produce.) अत्यन्त सस्तो दरमें, लागतसे भी कम दाममें, विदेशोंमें बेच सकते हैं। अमेरिकन व्यवसायी प्रायः ऐसा ही कर रहे हैं। इसीसे आप बाजारमें अमेरिकन माल प्रायः अन्य देशोंकी अपेक्षा सस्ते भावमें खरीद सकते हैं।

सन् १८६२ ई०में चरित्रनायक जिस समय स्काटलैण्डकी

सैर करने गये थे, उसी समय कारनेगी-कम्पनीके इतिहासमें पहली और अन्तिमवार एक भीषण हड़ताल हुई। श्रीकारनेगी यदि अमेरिकामें मौजूद रहते तो यह दुर्घटना होने ही नहीं पाती। इनका तो आदर्श मजूरोंको सन्तुष्ट रखना था। जभी मजूर कुछ अधिक वेतनकी मांग पेश करते थे, श्रीकारनेगी बिना किसी आपत्तिके मजूरी बढ़ा दिया करते थे। मजूरोंके सन्तुष्ट रहनेसे कभी कम्पनीको वेतन-वृद्धिके कारण हानि नहीं उठनी पड़ी। पर इनकी अनुपस्थितिके कारण इनके साझेदार इस अवसरपर चूक गये। कारनेगीकी मिलोंमें नये प्रकारकी मशीनें बैठायी गयी थीं और उसके लिये मजूरोंके कार्यक्रमका ढंग भी बदल दिया गया था। इसके अनुसार जो मजूर जितना अधिक उत्पादन कर सकता था, वह उतना ही अधिक मजूरी पानेका अधिकारी होता था। शुरूमें मजूरोंने नासमझीके कारण नवीन प्रथाका विरोध किया और मालिकोंके न माननेके कारण हड़ताल कर दी। श्रीकारनेगी उस समय स्काटलैण्डकी उच्चभूमिमें अपनी सहधर्मिणीके साथ सैर कर रहे थे। मजूरोंका इनपर कैसा विश्वास और श्रद्धा थी, वह इसीसे प्रकट होता है कि मजूरसंघके कार्य्यकर्ताओंने हड़ताल शुरू करनेके पहले निम्नलिखित तार इनके पास भेजा था—"दयालु स्वामी! कहिये, इस स्थितिमें आप हमलोगोंको क्या करने कहते हैं। हमलोग आपकी आज्ञाके अनुसार कार्य्य करनेके लिये तैयार हैं।"

दुःखकी बात यही हुई कि तार देर करके इन्हें मिला।

तबतक हड़तालने उग्ररूप धारण कर लिया था। चरित्रनायकके मित्रों और परिचितोंने इनके पास बहुसंख्यक सहानुभूतिके पत्र भेजे। इङ्गलैण्डके प्रधान सचिव मि० ग्लाडस्टनने निम्नलिखित मर्मका पत्र भेजा था—

परमप्रिय मि० कारनेगी,

मेरी स्त्री आपके कृपापत्रके लिये आपको आन्तरिक धन्यवाद देती है। मैं खूब जानता हूं कि इस समय आप व्यावसायिक चिन्तासे ग्रस्त हैं। पर मैं यह कह देना चाहता हूं कि आपकी कम्पनीके मजूरोंके हड़ताल कर देनेपर भी कोई यह कहनेका साहस नहीं कर सकता कि कारनेगी दरिद्र और असहाय मजूरोंके पीड़क हैं। धन मनुष्यके नैतिक जीवनको नष्ट कर रहा है, पर आपके सम्बन्धमें यह बात कोई नहीं कह सकता।

भवदीय विश्वस्त——

ग्लाडस्टन

श्रीकारनेगीके सम्बन्धमें लोगोंके क्या विचार थे, उसे पाठक मि० ग्लाडस्टनके पत्रसे भलीभांति जान सकते हैं। पर अमेरिकन सर्वसाधारणकी यह धारणा हो गयी थी कि श्रीकारनेगी अमेरिका हीमें हैं और वे ही जान-बूझकर मजूरोंको दबाना चाहते हैं। कुछ वर्षोंतक तो अन्धी जनताने इनको खूब बदनाम किया, पर सूर्य्य सर्वदा कुहरेसे आच्छन्न नहीं रह सकता। सच्ची बातें मालूम होनेपर लोगोंकी श्रद्धाभक्ति इनपर

और भी बढ़ गयी। अन्तमें मजूरोंको हारकर हड़ताल भंग करनी पड़ी, पर श्रीकारनेगोके प्रभावसे उनपर किसी प्रकारकी कड़ाई नहीं की गयी। इसके बाद ही नेशनल सिविल फेडरेशन नामकी मजूर और व्यवसायियोंकी एक संस्थाके अध्यक्षका पद रिक्त हुआ। लोगोंने श्रीकारनेगीको ही अध्यक्ष बनाना चाहा। फेडरेशनके वार्षिक अधिवेशनके समय अब इनका नाम सभापतिके पदके लिये प्रस्तावित किया गया और मजूर-नेताओंने सहर्ष प्रस्तावका समर्थन और अनुमोदन किया। तब तो चरित्रनायकके आश्चर्यका कोई ठिकाना नहीं रहा। श्रीकारनेगीने इस सम्मानको अस्वीकार करते हुए कहा—"आप लोगोंको शायद मालूम है कि एक बार लू लग जानेके कारण मैं धूप बर्दास्त नहीं कर सकता। इस फेडरेशनका अध्यक्ष ऐसे मनुष्यको बनाना चाहिये जो धूप और वर्षा, सर्दी और गर्मीसे न घबराकर सर्वदा किसी भी कठिन स्थितिका सामना करनेके लिये प्रस्तुत रहे। आप लोगोंने मुझे जो सम्मान प्रदान करना चाहा था, उसके लिये मैं आप लोगोंको अनेक धन्यवाद देता हूं। मैं फेडरेशनकी कार्य्यकारिणी कमिटीका सदस्य बननेके लिये तैयार हूं और उस दशामें मैं आप लोगोंकी यथाशक्ति सेवाकर अपनेको कृतार्थ समझूंगा।" अन्तमें चरित्रनायककी इच्छाके अनुसार ही कार्य्य हुआ। इस अवसरपर इन्हें पता लग गया कि मजूर लोग हड़ताल होनेपर भी इन्हें कितनी श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते थे।

शीघ्र ही पिट्सवर्गके पुस्तकालयके हालमें कारनेगी-कम्पनीके

मजूर और उनकी स्त्रियोंकी एक सभा चरित्रनायकका स्वागत करनेके लिये हुई। श्रीकारनेगीने अपने भाषणमें मजूरोंको धन्यवाद देते हुए कहा—"व्यवसायी, मजूर और पूंजीपति, तीनों एक तिपाईके तीनों पावोंकी तरह हैं। व्यवसायके संचालनके लिये तीनोंकी एक समान आवश्यकता है।" मजूरोंने खूब करतलध्वनि की। चरित्रनायकने सबसे हाथ मिलाया। सब प्रकारका मनोमालिन्य दूर हो गया। चरित्रनायकके हृदयसे एक भारी बोझ हटा। इसके बाद भी अनेक अवसरोंपर चरित्रनायकको अपने मजूरोंके साथ विवादमें भाग लेना पड़ा था, पर सभी अवसरोंपर इन्होंने न्यायका पक्ष लिया। निम्नलिखित घटनासे श्रीकारनेगीकी दृढ़ता और न्याय-प्रियताका पता चलता है।

एकबार पिट्सवर्गके मजूरोंने पहलेकी शर्तके अनुसार समय पूरा होनेके पहले ही मजूरी बढ़ानेके लिये जिद की और कम्पनीको नोटिस दे दिया कि यदि आज चार बजेके पहले इसका उत्तर नहीं मिलेगा तो हमलोग काम बन्द कर देंगे। श्रीकारनेगीने सोचा कि यदि मजूर एकबार शर्त तोड़ डालेंगे तो फिर उनके साथ शर्त करनेकी आवश्यकता ही क्या रहेगी? एकबार सफल होनेसे ही वे बार बार ऐसा करनेके लिये उत्साहित होते रहेंगे। चरित्रनायक मजूरोंसे मिलनेके लिये न्यूयार्कसे पिट्सवर्ग आये। कारखानेके सभी मजूरोंको बुलाया गया। कारखानेके तीन विभागमेंसे केवल एक विभागके मजूरोंने हड़ताल करनेकी

धमकी दी थी। सभी मजूर इकट्ठे हुए। चरित्रनायक सबसे बड़े प्रेमसे मिले। श्रीकारनेगी अपने मजूरोंकी बराबर इज्जत किया करते थे। धनकुबेर होनेपर भी सामान्य मजूरसे हाथ मिलानेमें इन्हें कभी आपत्ति नहीं होती थी। अस्तु। तीनों विभागोंके मजूरोंकी कमिटी अर्द्ध चन्द्राकार रूपमें बैठी। चरित्र-नायक बीचमें बैठे। सबके चेहरेपर गंभीरता छा रही थी। पहले चरित्रनायकने उन दो विभागोंके मजूरोंकी कमिटीके सभापतिसे प्रश्न किया, जिन्होंने हड़ताल करनेकी धमकी नहीं दी थी। मि० मैके और मि० जानसन क्रमशः उन कमिटियोंके सभापति थे। चरित्रनायकने मि० मैकेसे प्रश्न किया—

"मि० मैके, आप लोगों और मेरी कम्पनीके बीचमें जो इकरारनामा हुआ था, उसके खतम होनेमें कुछ मास बाकी हैं या नहीं?"

मैके खरा आदमी था। चश्मा उतारकर उसने कहा—"हां श्रीमन्, हम इसे भलीभांति जानते हैं। आप धनकुबेर होनेपर भी हमलोगोंको इकरारनामा तोड़नेके लिये बाध्य नहीं कर सकते।"

श्रीकारनेगीने कहा—"मुझे तुम्हारा गर्व है? सच्चा अमेरिकन मजूर अवश्य ही यही उत्तर देगा।"

मि०जानसनसे भी चरित्रनायकने वही प्रश्न पूछा। जानसनने सोचकर उत्तर दिया—

"जब कोई इकरारनामा हस्ताक्षरके लिये मेरे सामने आता

है तो मैं उसे ध्यानपूर्वक पढ़ लेता हूं। यदि मुझे वह पसन्द नहीं आता तो मैं उसपर हस्ताक्षर ही नहीं करता। पसन्द आनेपर मैं हस्ताक्षर करता हूं और हस्ताक्षर करनेपर अवश्य ही उसका पालन करता हूं।"

"एक आत्मसम्मानी अमेरिकन ऐसा ही उत्तर देगा।" श्रीकारनेगीने कहा।

अब हड़तालीदलके नेताको सम्बोधनकर चरित्रनायकने वही प्रश्न पूछा। उसका नाम केली था।

केलीने उत्तर दिया—"मैं इसको ठीक ठीक नहीं कह सकता कि क्या इकरारनामा हुआ था। एक कागज हस्ताक्षरके लिये मेरे पास आया था, पर मैंने ध्यानपूर्वक पढ़े बिना ही उसपर हस्ताक्षर कर दिया था। मुझे मालूम नहीं, उसमें क्या लिखा था।"

उसी समय कारनेगी-कम्पनीके सुपरिन्टेन्डेन्ट केप्टन जोन्सने चिल्लाकर कहा—

"मि० केली, आपको याद होगा कि मैंने आपको दो बार वह इकरारनामा पढ़कर सुनाया था और इसपर आपके साथ घंटों बहस भी हुई थी।"

श्रीकारनेगीने केप्टनको रोकते कहा—"आप चुप रहिये। मि०केली अपना उत्तर स्वयं देंगे। मैं भी बहुतसे ऐसे कागजोंको बिना पढ़े उनपर हस्ताक्षर कर दिया करता हूं, जो मेरे वकील या साझेदार मेरे पास भेजते हैं। मि० केली कहते हैं कि उन्होंने बिना समझे-बूझे ही इकरारनामेपर हस्ताक्षर कर दिया था।

मैं उन्हींकी बातको ठीक मान लेता हूं। अब मि० केली, मेरे विचारसे तो सबसे अच्छा यही है कि आपने जिस इकरारनामे-पर हस्ताक्षर कर दिया है, उसकी शर्तोंको कुछ महीनेतक और पालन करावें और फिर जब नये इकरारनामेपर हस्ताक्षर करने-का अवसर आवे तब आप उसे खूब समझकर हस्ताक्षर करें।"

केली निरुत्तर था। श्रीकारनेगीने खड़े होकर हड़तालियों-को सम्बोधन करते हुए कहा—

"सज्जनो, आप लोगोंने कम्पनीको धमकी दी है कि आप लोगोंकी शर्त न मानी जानेसे आप लोग आज ४ बजेसे काम छोड़ देंगे। अबतक तीन भी नहीं बजे हैं। आपके लिये मेरा उत्तर तैयार है। आपकी शर्त ना मंजूर है। आप मजेमें काम छोड़ सकते हैं। कारखानेमें घास उग आवे, वह मुझे मंजूर है, पर मैं आपकी धमकियोंसे डर नहीं सकता। जिस दिन मजूर लोग स्वयं अपने इकरारनामेको तोड़कर हड़ताल करेंगे, वह दिन मजूरोंके लिये भयंकर होगा। आपकी धमकीका मेरा यही उत्तर है।" सब चुपचाप बाहर गये। केलीने मजूरोंको काम करनेका आदेश दिया। हड़ताल नहीं होने पायी।

श्रीकारनेगीने इसी प्रकार बुद्धिमत्तापूर्ण आचरणसे अनेक बार हड़तालोंको रोका था और मजूरोंकी गलती दिखाकर उन्हें कार्य करनेके लिये वाध्य किया था। इन्होंने अपने "कार-खानेमें जैसा काम वैसा दाम" वाली नीतिका अवलम्बनकर हड़ताल असम्भव कर दी थी। जो मजूर जितना काम करता

था, उसको अपने परिश्रमके अनुरूप ही मजूरी मिलती थी। बिना किसी गुरुतर अपराधके किसी मजूरको कामसे निकाला नहीं जाता था। व्यवसायकी शिथिलताके समय जब उत्पादन कुछ कम कर दिया जाता था, उस समय भी मजूरोंको इतनी मजूरी अवश्य दी जाती थी, जिससे वे अपना आवश्यक खर्च भलीभांति चला सकें। पूंजीपति यदि चाहें तो मजूरोंके जीवनको अत्यन्त सुखमय बना सकते हैं।

एकबार इन्होंने मजूर-नेताओंसे पूछा—"कहिये, आप लोगोंके लाभके लिये मैं क्या कर सकता हूं?"

मजूरोंके प्रधान नेताने कहा—"मजूरोंको मासके अन्तमें वेतन मिलनेसे बड़ी असुविधा और हानि उठानी पड़ती है। उन्हें सभी चीजें बनियोंसे उधार लेकर काम चलाना पड़ता है। इसमें उन्हें दाम भी अधिक देना पड़ता है और हाथ खाली रहनेके कारण तंग भी रहना पड़ता है। यदि आप प्रति पक्षमें मजूरी दे देनेका प्रबन्ध कर दें तो मजूर लोग सभी चीजें इकट्ठी खरीदकर अपने व्यवहारके लिये रख दे सकते हैं, इस प्रकार वे दश प्रति सैकड़ातक बचा सकेंगे। उन्हें कोयलेके लिये भी बहुत अधिक दाम देना पड़ता है, इसके लिये भी आप कुछ प्रबन्ध कर दें।"

चरित्रनायकने प्रति पक्षमें मजूरी देना शुरू कर दिया। मजूरोंके सुभीतेके लिये अपने कारखानेसे ही लागतके दामपर उनके घरतक कोयला पहुंचा देनेका प्रबन्ध कर दिया। पीछे तो मजूरोंके लाभके लिये एक सहयोग-समिति खोल दी गयी, जहां

उनकी आवश्यकताके अनुकूल सभी चीजें सस्ते भावमें बेचनेका प्रवन्ध था। मज़ूरोंको इससे बड़ा लाभ पहुंचा। वे अब कुछ कुछ बचाने लगे। अब उस बचतको वे कहां जमा करें। उन दिनों अमेरिकामें 'सेविंगबैंक'का प्रवन्ध नहीं था। चरित्रनायक ने मजूरोंके लिये एक सेविंगबैंक खोल दिया, जिसमें उनको ६ सैकड़े सूद मिलता था। इस प्रकारके प्रवन्धसे मजूर अत्यन्त सन्तुष्ट होकर काम करने लगे। फिर कभी किसी तरहकी हड़ताल वगैरह नहीं हुई।

मजूर और मालिकोंमें जितने झगड़े होते हैं, सब किसी न किसी पक्षकी नासमझी और अदूरदर्शितासे ही उत्पन्न होते हैं। व्यवसायी मज़ूरोंको कम वेतन देकर अधिक काम लेना चाहते हैं और मज़ूर अधिकाधिक वेतन लेकर कमसे कम काम करना चाहते हैं। इसीसे हड़तालकी सृष्टि होती है। यदि सभी व्यवसायी श्रीकारनेगीके आदर्शपर मज़ूरोंको सब प्रकारका आराम पहुंचानेका प्रवन्धकर उनके परिश्रमके अनुरूप ही उन्हें मज़ूरी देनेकी व्यवस्था कर दें तो फिर हड़तालका नाम भी सुननेके लिये नहीं मिले। मजूर असहाय होते हैं—बिना काम किये उनका काम नहीं चल सकता। व्यवसायी काम बन्दकर कुछ दिन ठहर भी सकता है—अतएव व्यवसायियोंके अत्याचारसे ही अधिकांश हड़तालोंकी सृष्टि होती है। यदि व्यवसायी अपनी भलाई चाहते हों तो उन्हें कारनेगीके आदर्शपर काम करना चाहिये। इसीमें सबका कल्याण है।

सप्तदश परिच्छेद

"परोपकाराय सतां विभूतयः"

सन् १६०० ई० में चरित्रनायकने 'Gospel of wealth' नामक पुस्तक प्रकाशित की। सन् १८८६ ई० से लेकर उस समयतक चरित्रनायकने भिन्न भिन्न मासिक पत्रोंमें धनियोंके कर्त्तव्यके सम्बन्धमें जो विचार प्रकट किये थे, उन्हींका संग्रह इस ग्रन्थमें था। इसको पुस्तकके रूपमें प्रकाशित करनेके बाद धनकुबेर कारनेगीने अपना अक्षयकोष संसारके लाभके लिये दे देनेका निश्चय किया। धन कमाना बन्दकर धन दान करनेका दृढ़ संकल्प इन्होंने किया। उस समय इनकी वार्षिक आय ४ करोड़ डालर की थी। जिस कम्पनीके हाथ इन्होंने अपना कारवार बेच डाला था, उसने तो आगे चलकर वार्षिक ६ करोड़ डालरतकका लाभ उठाया। यदि श्रीकारनेगी-की अध्यक्षतामें कार्य होता तो लाभ और भी अधिक होता, इसमें सन्देह नहीं है।

अब चरित्रनायकने परोपकारके लिये अपनी थैली खोल दी। मिलके मजूरोंकी आकस्मिक विपत्तिके समय, उनकी सहा-यताके लिये ४० लाख डालरका दान किया। १० लाख डालर

मजूरोंके व्यवहारार्थ पुस्तकालय खोलनेके लिये दिये। इसपर मजूरोंने इन्हें निम्नलिखित अभिनन्दनपत्र दिया था—

श्रीमान् एण्ड्रू कारनेगीकी सेवामें,

प्रिय महोदय !

"आपने हमारे लाभके लिये जो दान दिया है, उसके लिये हमलोग आन्तरिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं। आप हमारे प्रति जो प्रेमभाव सर्वदा प्रकाशित किया करते हैं, उसे हमलोग कभी नहीं भूल सकते।"

इसके बाद चरित्रनायकने यूरोपकी यात्रा की। इनके हिस्सेदार बड़े प्रेमसे इन्हें जहाजतक पहुंचाने आये। इनके वियोगसे सभी दुखित थे।

यूरोपकी सैरसे लौटकर श्रीकारनेगीने धन-दान करनेमें मन लगाया। न्यूयार्कमें एक केन्द्रस्थ पुस्तकालय और उसकी ६८ शाखाओंको भिन्न भिन्न महल्लोंमें स्थापित करनेके लिये इन्होंने ६२॥ लाख डालर दिये। ब्रूकलिन नामक नगरमें भी एक केन्द्रस्थ और २० शाखा पुस्तकालय प्रतिष्ठित किये गये। डनफरलिनके पुस्तकालयको स्थापित करनेका उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। अमेरिकाके प्रथम निवासस्थान अलगेनी नगरमें भी इन्होंने एक विशाल पुस्तकालय खोल दिया। अमेरिकन प्रजातन्त्रके प्रेसिडेण्ट मि० हैरिसनने इसके उद्घाटनका कार्य सम्पन्न

किया था। शीघ्र ही पिट्सवर्गवालोंने भी एक पुस्तकालयकी मांग पेश की। उनकी भी प्रार्थना स्वीकृत हुई। पिट्सवर्गमें एक जादूघर, चित्रागार, औद्योगिक विद्यालय और बालिकाओंके लिये 'मारगेरेट मारिसन स्कूल' स्थापित किया गया। पिट्सवर्गमें ही इनके ऊपर लक्ष्मीजी सुप्रसन्न हुई थीं अतएव उन्होंने २ करोड़ ४० लाख डालरका दान देकर अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

२८ वीं जनवरी सन् १६०२ ई०में वाशिङ्गटन नगरमें कारनेगीइन्स्टीट्यूशन स्थापित किया गया। २ करोड़ ५० लाख डालर इसके लिये दान दिये गये। प्रेसिडेण्ट रुजवेल्ट इस सम्बन्धमें प्रधान सलाहकार और राष्ट्रसचिव जान हे उसके सभापति थे।

२८ वीं अप्रेल सन् १६०४ ई०में प्रेसिडेण्ट रुजवेल्टके विशेष परिश्रमसे वहांकी व्यवस्थापिका सभाने एक कानूनके द्वारा इस संस्थाकी स्थितिको अचल बना दिया। इसके अध्यक्ष अमेरिकाके प्रसिद्ध विद्वान् होते आते हैं। साहित्य, विज्ञान, कला-कौशल तथा अन्य विभागोंमें अन्वेषण और आविष्कारकी गतिको बढ़ानेके साथ साथ यह संस्था अन्य रूपमें भी संसारकी सेवा कर रही है। 'कारनेगी' नामका एक जहाज इस संस्थाकी ओरसे संसारभरके समुद्रोंमें भ्रमणकर पुराने मानचित्रोंको संशोधित करनेका महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। इसके भगीरथ प्रयत्नसे अनेक भ्रम दूर किये जा सके हैं और

इससे समुद्रमें जहाजोंकी यात्रा बहुत कुछ निरापद हो गयी है। अमेरिकाने यूरोपवासियोंके द्वारा आविष्कृत ज्ञानसे बहुत लाभ उठाया था। कारनेगी इन्स्टीट्यूशन उसके बदलेमें उसे और संसारको लाभ पहुंचा रहा है।

इसी संस्थाकी ओरसे कालिफोर्नियाके विलसन पर्वतके ऊपर ५८८६ फीटकी ऊंचाईपर एक विशालकाय वेधशाला स्थापित की गयी है। इसके भी अध्यक्ष प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्गण होते आये हैं। एकबार इसके वर्तमान अध्यक्ष मि० हेलने रोम नगरमें होनेवाली ज्योतिर्विद्या-विशारदोंकी एक सभामें इस वेधशालाकी सहायतासे किये गये अपने आविष्कारोंको प्रकटकर सबको चकित कर दिया था। इस वेधशालाकी सहायतासे बहुसंख्यक ऐसे ताराओंका पता लगाया गया है जो सूर्यसे भी २० गुणे बड़े हैं और जिनकी रोशनी पृथ्वीतक आनेमें ८ वर्ष लग जाते हैं। वेधशालाकी ओरसे एक ऐसा यन्त्र बनाया जा रहा है, जिससे चन्द्रमामें रहनेवाले जीवधारी स्पष्ट रूपसे देखे जा सकेंगे। अमेरिकन ज्योतिर्विद्या-विशारदोंका तो यही कहना है। इसका फलाफल अभी भविष्यके गर्भमें है। कल्पना असम्भव प्रतीत होती है सही, पर हमारे सामने बहुतसी ऐसी बातें मौजूद हैं, जिन्हें लोग ख्याली पुलाव मानते थे।

चरित्रनायकको 'वीर सहायक कोष' स्थापितकर यत्परोनास्ति आनन्द प्राप्त हुआ था। इसके स्थापनकी कथा अत्यन्त ही

करुणापूर्ण है। पिट्सवर्गकी एक कोयलेकी खानमें कुछ दुर्घटना हो गयी थी और पिट्सवर्ग कारखानेके अध्यक्ष मि० टेलर दुर्घटनाका समाचार सुन तत्क्षण ही घटनास्थलपर पहुंचकर पीड़ितोंको सहायता पहुचानेकी व्यवस्था कर रहे थे। स्वयं-सेवकोंके साथ मि० टेलर भी खानके भीतर मजूरोंको सहायता पहुंचाने गये, पर फिर निकल नहीं सके। खान ही उनका भी समाधिस्थल बन गयी। इस संवादको सुनकर श्रीकारनेगीका हृदय करुणासे भर आया। उन्होंने दुर्घटनाके दूसरे ही दिन एक 'वीर सहायक कोष' की प्रतिष्ठा की और उसके खर्चके लिये ५० लाख डालर दिये। इस कोषसे उन वीरोंको पुरस्कार दिया जाता है, जो अपने जीवनको सङ्कटमें डाल विपत्तिमें पड़े हुए लोगोंका उद्धार करते हैं, या किसी दुर्घटनासे आहत व्यक्तिके परिवारको सहायता की जाती है। इसकी शाखायें इङ्गलैंड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, बेल्जियम, हालैंड, नारवे, स्वीडन, स्विटजरलैंड और डेनमार्कमें खोल दी गयी हैं। जर्मनीके कैसर और इङ्गलैंडके राजा एडवर्डने स्वयं लिखकर श्रीकारनेगीको धन्यवादपत्र भेजे थे। इसकी प्रतिष्ठासे चरित्रनायकने मानव-समाजका जैसा उपकार किया है, उसको शब्दोंमें लिखकर प्रकट करना कठिन है। आज सहस्त्रों परिवार इस कोषसे नियमित सहायता पाकर इसके संस्थापकको हृदयसे आशीर्वाद दे रहे हैं। वीरतापूर्ण कार्य करते हुए स्वामी या पुत्रके मारे जानेपर अब अनाथ विधवा या वृद्धा माताको अन्नके लिये भूखों नहीं

मरना पड़ता। श्रीकारनेगी अनाथोंके सहायक और वृद्धाओंके पुत्रके रूपमें उनकी सहायताके लिये उपस्थित हैं। धन्य हैं श्रीकारनेगी! धनका सदुपयोग इसीको कहते हैं।

चरित्रनायकने इसके बाद अपने मित्र और 'वीर सहायक कोष' के अध्यक्ष मि० चार्ली टेलरके नामसे अमेरिकाके लेहिग विश्वविद्यालयमें एक 'टेलर हाल' बनवा दिया। मि० टेलरने पहले तो बड़ी आपत्ति की, पर जब श्रीकारनेगीने कहा कि यदि आप उस हालके साथ अपने नामका जोड़ाजाना नहीं चाहते तो हम भी विश्वविद्यालयका हाल बनवाना नहीं चाहते। मि० टेलर ही लेहिग विश्वविद्यालयके स्नातक थे। उन्हें बाध्य होकर श्रीकारनेगीकी बात माननी पड़ी।

विश्वविद्यालयके जो अध्यापक जीवनपर्यन्त पवित्र शिक्षाके कार्यमें लगे रहते हैं, उन्हें प्रायः इतना कम वेतन मिलता है कि उनके लिये कुछ बचाकर रखना कठिन हो जाता है। ऐसी अवस्थामें जब वे वृद्धावस्थामें असमर्थ हो जानेपर शिक्षादानसे अवकाश ग्रहण करते हैं तो उन्हें बड़ी कठिनतासे अपने जीवनके दिन काटने पड़ते हैं। श्रीकारनेगी भला इस दृश्यको चुपचाप कब देख सकते थे। उन्होंने १ करोड़ ५० लाख डालर देकर Carnegee Endowment for the Advancement of Learning. नामक एक फण्ड स्थापित किया, जिसका उद्देश्य अवकाश ग्रहण किये हुए वृद्ध अध्यापकोंको पेंशन देना था। अमेरिकाके विश्वविद्यालयोंके प्रसिद्ध प्रसिद्ध विद्वान् इस कोषके

सञ्चालक बनाये गये। इससे शिक्षादानके मार्गकी एक भारी कठिनता दूर हुई। अब विद्वानोंको अपनी वृद्धावस्थाके लिये चिन्ता करनेकी आवश्यकता नहीं रही। भगवन्, क्या भारत-वर्षमें भी कोई ऐसा माईका लाल पैदा होगा, जो यहांके शिक्षकोंकी दुर्दशाग्रस्त अवस्थासे दयाद्रवित हो उन्हें किसी प्रकारकी सहायता देनेकी व्यवस्थाकर अपना जीवन सफल करेगा ?

स्काटलैंडके दरिद्र विद्यार्थी कालेज और विश्वविद्यालयोंकी फीस न दे सकनेके कारण बहुत कम संख्यामें शिक्षा लाभ किया करते थे। श्रीकारनेगीके एक मित्र लार्ड शावने एक मासिकपत्रमें एक प्रबन्ध लिखकर इस ओर चरित्रनायकका ध्यान आकृष्ट किया। चरित्रनायकने शीघ्र ही १ करोड़ डालर इसके लिये दान करके अपने जन्मस्थानके दरिद्र विद्यार्थियोंकी शिक्षा-प्राप्तिका मार्ग सरल कर दिया। बहुसंख्यक विद्यार्थी प्रति वर्ष चरित्रनायककी कृपालुतासे लाभ उठाकर सरस्वतीके मन्दिरमें प्रवेशकर अपनी सर्वाङ्गीन उन्नति करनेमें समर्थ हो रहे हैं। भारतमें क्या कभी ऐसा दिन देखनेमें आवेगा ?

सन् १९०२ ई०में श्रीकारनेगी 'सेंट एंड्रूज विश्वविद्यालय'के लार्ड रेक्टर निर्वाचित किये गये। अवश्य ही यह घटना इनके जीवनके लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। जिसने कभी किसी हाईस्कूलतकमें शिक्षा प्राप्त नहीं की थी, वही दरिद्र जुलाहेका लड़का आज अपनी प्रतिभा और अध्यवसायके बलसे एक विश्वविद्यालयका लार्ड रेक्टर बनाया गया। श्रीकारनेगीने

विश्वविद्यालके कार्यक्षेत्रमें प्रवेशकर अपने जीवनको धन्य समझा। इन्होंने अपने कार्यकालमें लार्ड रेक्टरकी हैसियतसे जो भाषण दिये थे, वे अत्यन्त पाण्डित्यपूर्ण थे। सबने उनकी भूरि भूरि प्रशंसा की थी।

एकबार स्काटलैंडमें रहते समय श्रीकारनेगीने स्कार्च-विश्वविद्यालयके अध्यक्षोंको सस्त्रीक स्किबोभवनमें एक सप्ताह आमोद-प्रमोदमें बितानेके लिये आमन्त्रित किया था। बड़े आनन्दसे यह कार्य सम्पन्न हुआ। फिर तो प्रतिवर्ष विद्वानोंका जमघट स्किबोभवनमें होने लगा। यह क्रम श्रीकारनेगीके शेष जीवनमें बराबर जारी रहा। चरित्रनायक विद्वानोंका समुचित आदर किया करते थे और उन्हें सब प्रकारका आराम पहुचानेमें कुछ उठा नहीं रखते थे। विद्वद्वृन्द भी उदार गृहपतिके सत्कारसे सन्तुष्ट हो अपने अपने घर लौटते थे। विश्वविद्यालयके अध्यक्षोंके परस्पर सम्मिलनसे स्काच-शिक्षाकी बहुतसी समस्यायें अनायास ही हल हो जाया करती थीं। यथार्थमें श्रीकारनेगीकी प्रतिभा विलक्षण थी। आमोद-प्रमोद, सभी कार्योंमें इनकी व्यवस्थासे कुछ न कुछ स्थायी कार्य अवश्य सम्पादन होता था।

इसके सिवाय श्रीकारनेगीने अमेरिकाके अनेक कालेजोंमें अपने मित्रोंके नामसे भिन्न भिन्न विषयोंके विशेष शिक्षा-दानकी व्यवस्था की। इस प्रकार श्रीकारनेगीके साथ साथ उनके मित्र भी अमर हो गये। यथार्थमें सज्जनोंकी संगतिसे सामान्य पुरुष भी श्रेष्ठगतिको प्राप्त होता है।

अमेरिकाके नीग्रो लोगोंके उद्धारक बुकर० टी० वाशिङ्गटनको भी श्रोकारनेगी नहीं भूले। वे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सिद्धान्तके अनुयायी थे। उनके लिये काले और गोरे सभी एक समान थे। वे योग्यताकी कदर करते थे, गोरे चमड़ेकी नहीं। चरित्रनायकने श्रीबुकर० टी० वाशिङ्गटनके टस्कजी विद्यालयको ६० लाख डालर प्रदानकर उसकी स्थितिको अचल कर दिया। श्रीकारनेगी वाशिङ्गटनको बड़ी श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते थे।

श्रीकारनेगीके संगीत-प्रेमका उल्लेख पूर्वके परिच्छेदमें किया जा चुका है। इन्होंने अमेरिकाके गिरजाघरोंको ७६८९ वाद्ययन्त्र प्रदान किये, जिनका दाम ६० लाख डालर है। इनका विश्वास था कि संगीतसे लोगोंका मन शान्त और प्रसन्न होता है और ईश्वरकी ओर उनका ध्यान स्थिर होता है। हमारे यहां भी सामवेद अभीतक गाया जाता है। अमेरिकन लोगोंने पहले तो इसका बड़ा विरोध किया और 'बाइबिल' से वाक्य उद्धृतकर इसको दूषणीय ठहराया। उसके बादसे श्रीकारनेगी केवल उन्हीं गिरजोंको वाद्ययन्त्र भेंट करते थे जो आधा दाम स्वयं देते थे और आधेके लिये चरित्र-नायकको सहायता चाहते थे। यदि गिरजोंको वाद्ययन्त्र भेंट करना पाप है तो श्रोकारनेगोने गिरजोंको भी इस पापका भागी बनाना चाहा!

संसारमें बहुतसे ऐसे मनुष्य हैं जो सच्चरित्रतापूर्वक अपना

जीवन व्यतीत करते हुए भी यथेष्ट द्रव्य उपार्जन नहीं कर सकते या अन्य किसी कारणसे उनकी आर्थिक अवस्था हीन हो जानेके कारण वृद्धावस्थामें उन्हें अर्थाभावके कारण कष्ट-पूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ता है। ऐसे लोगोंको सहायतासे भला श्रीकारनेगी कब बाज आ सकते थे। इन्होंने एक कोष प्रतिष्ठित किया, जिससे ऐसे सज्जनोंको चुपचाप सहायता दी जाती है। सम्प्रति इस कोषका वार्षिक व्यय ७॥ लाख डालर है। अनेक लोगोंने हृदय-विदारक और मर्मस्पर्शी पत्र लिखकर श्रीकारनेगीको हृदयसे धन्यवाद दिया था। इन पत्रोंको श्रीकारनेगी बड़ी श्रद्धा और प्रेमकी दृष्टिसे देखा करते थे और जब कभी उनका मन उदास होता था, तब वे उन्हें पढ़कर मनको आश्वस्त करते थे।

जिस रेलवे विभागमें श्रीकारनेगीने पहलेपहल नौकरी-कर अपनी उन्नतिका पथ प्रशस्त किया था, उसके कर्मचारियों-को भी आप नहीं भूल सके। पिट्सबर्ग डिविजनके कर्म-चारियोंको विपद्में सहायता देनेके लिये चरित्रनायकने 'Rail road Pension Fund' कायम किया। अब तो यह फन्ड पेन्सिल्वेनिया रेलवे कम्पनीके कर्मचारियोंको भी सहायता दिया करता है।

श्रीकारनेगी शान्तिप्रेमी थे। इनके जीवनके परिचयसे ही पाठकोंको पता लग गया होगा कि ये लड़ाई-झगड़ेसे कितने दूर रहते थे। व्यवसायसे अवसर ग्रहण करनेपर चरित्रनायकका

ध्यान विश्वशान्तिकी ओर आकृष्ट हुआ। इनका विचार था कि कमसे कम अङ्गरेजी बोलनेवाले देशोंमें परस्पर कभी युद्ध न हो। श्रीकारनेगी इङ्गलैण्ड और अमेरिकाको मिलाकर एक Re-united states या British American union स्थापित करनेके पक्षमें थे। इङ्गलैण्डमें घूमते समय चरित्रनायक इङ्गलेण्डकी शान्तिसभा (The Peace society of Great Britain) के अधिवेशनोंमें बराबर भाग लिया करते थे। मजूर मेम्बरोंके तत्कालीन नेता और 'नोबल पुरस्कार' के पानेवाले मि० क्रेमरने विश्वशान्तिकी चेष्टा करनेके लिये एक पार्लमेंटरी संघ स्थापित किया था। चरित्रनायक उसमें भी भाग लेते थे। मि० क्रेमर भी एक अद्भुत स्वार्थत्यागी पुरुष थे। १ लाख २० हजार रुपयेका 'नोबल पुरस्कार' पाकर उन्होंने अपने खर्चके लिये केवल १५ हजार रुपया रखा और बाकी रुपया 'शान्ति-संस्थापक समिति' को दान कर दिया। ऐसे स्वार्थत्यागी पुत्रोंको पाकर माता वसुन्धरा अपनेको अवश्य ही धन्य समझती होगी, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

उसी समय हेगमें संसारभरके मुख्य मुख्य राष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंकी एक कान्फरेन्स फौजी खर्च घटानेके प्रश्नपर विचार करनेके लिये हुई थी। उस कान्फरेन्सने अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ोंका निपटारा करनेके लिये एक पञ्चायतको स्थापित किया। इस सफलतासे प्रसन्न होकर चरित्रनायकने हेगमें एक 'शान्ति-मन्दिर' स्थापित करनेका विचार प्रकट किया। डच सरकारने

भी श्रीकारनेगीसे इस सम्बन्धमें लिखा-पढ़ी की और अन्तमें चरित्रनायक ने १५ लाख डालर उपरोक्त मन्दिरकी प्रतिष्ठाके लिये दिये। श्रीकारनेगीके हृदयमें इस 'शान्ति-मन्दिर' का महत्व गिरजाघरोंसे कहीं अधिक था।

श्रीकारनेगीने सन् १९०८ ई० में न्यूयार्ककी शान्ति-सभाके अध्यक्षका पद अलंकृत किया था। सन् १९१० ई० में चरित्र-नायकने अन्तर्राष्ट्रीय शान्तिका उद्योग करनेके लिये १००००००० डालरका दानकर Carnegee Endowment for International Peace की प्रतिष्ठा की।

अब तो श्रीकारनेगीपर संसारके सभी प्रसिद्ध राष्ट्रोंने अपनी सम्मानसूचक उपाधियोंकी वर्षाकर उनको सम्मानित किया। फ्रेंच सरकारने इन्हें Knight commander of the Legion of Honor को उपाधि दी। इङ्गलैण्ड और डेनमार्कने भी अपने राष्ट्रकी सर्वश्रेष्ठ उपाधियोंसे इन्हें सम्मानितकर स्वयं अपनी सम्मान-रक्षा की। २१ अमेरिकन राष्ट्रोंने श्रीकारनेगीको स्वर्णपदक प्रदान किये। असंख्य यूनिवर्सिटियों और कालेजोंने इन्हें डाक्टरकी डिग्री देकर अपनेको कृतार्थ समझा। श्रीकारनेगी १९० सभा-समितियोंके मान्य सदस्य थे।

सबसे पवित्र दान—जिसने इन्हें स्वर्गोपम सुख प्रदान किया था—डनफरलिन नगरको 'पिटेनक्रिफ ग्लेन' नामक उपत्यकामें रम्य उद्यान बनवा देना था। इसकी कथा अत्यन्त मर्मस्पर्शी है। डनफरलिन नगर अनेक दिनोंसे वहांके प्रसिद्ध गिरजा और

राज्यप्रासादको अपने अधिकारमें लानेकी चेष्टा करता था, पर उस स्थानका जमींदार इस कार्यमें बाधक था। चरित्रनायकके नाना मारिसनने इसके लिये जोरोंका आन्दोलन शुरू किया था। इनके चचा लौडर और मामा मारिसन भी इस आन्दोलनको बढ़ाते गये। जमींदारने इनके मामाके ऊपर विद्रोह फैलानेकी नालिश ठोंक दी। मुकद्दमा बहुत दिनोंतक चला, अन्तमें हाईकोर्टसे मारिसनकी ही जीत हुई। अन्तमें चिढ़कर जमींदारने आज्ञा दे दी कि मारिसन-खानदानका कोई भी व्यक्ति इसके भीतर घुसने न पावे। उपत्यकाकी प्राकृतिक शोभा परम रमणीय थी। डनफरलिन-निवासी उसमें प्रायः सैर करने जाया करते थे। अपने मामा और मारिसन-वंशके सभी लोगोंके इस प्रकार प्रकृतिकी गोदमें विहार करनेके सुखसे वंचित कर दिये जानेका चरित्रनायकको बड़ा दुःख हुआ। इन्होंने उस उपत्यकाको ही किसी प्रकार खरीद लेनेका दृढ़ संकल्प किया और अन्तमें अवसर आ ही गया। जमींदार ऋण-ग्रस्त हो रहा था। बिना अपनी जमींदारीको बेचे ऋण-भारसे मुक्त होना उसके लिये असंभव था। श्रीकारनेगीने उसे पूरा दाम देकर उस उपत्यकाको खरीद लिया और उसमें अत्यन्त रमणीक उद्यान बनवाकर उसे डनफरलिन नगर-निवासियोंको भेंट कर दिया। जिस मारिसनके वंशधरके लिये उस उपत्यकामें प्रवेश करनेकी भी मनाही थी, उसीके वंशमें उत्पन्न चरित्रनायकने उसको खरीदकर अपनी जन्मभूमिके लोगोंके सैर करने

और दिल बहलावके लिये उसे दान कर दिया। श्रीकारनेगीको इस दानसे जितना संतोष मिला, उतना किसी कार्यसे नहीं मिला था। इनके कानमें स्वर्गदूत यह कहता हुआ मालूम हुआ कि "कारनेगी! तुम्हारा जीवन व्यर्थ नहीं गया है।" श्रीकारनेगी इस घटनाको अपने जीवनमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण समझते थे।

श्रीकारनेगीके मित्रों और प्रशंसकोंने बहुसंख्यक संस्थाओंको प्रतिष्ठाकर इनके जीवनको अमर कर दिया है। श्रीकारनेगीको कोई पुत्र नहीं हुआ—केवल एक कन्या हुई—पर जबतक सूर्य्य-चन्द्र प्रतिष्ठित रहेंगे, तबतक इनकी कीर्ति इस वसुन्धरापर विराजमान रहेगी।

श्रीकारनेगीने अपने अन्तिम जीवनमें संसारके सभी प्रसिद्ध पुरुषोंके सत्संगसे लाभ उठाया। प्रसिद्ध कवि और लेखक माथ्यू आर्नल्डपर श्रीकारनेगीकी बड़ी श्रद्धा थी। आर्नल्ड भी विलक्षण पुरुष थे। धर्मके सम्बन्धमें अपने स्वतन्त्र विचारके कारण वे आक्सफोर्ड विश्वविद्यालयके सर्वोच्च पदपर प्रतिष्ठित नहीं हो सके, पर विचार-स्वातन्त्र्यके लिये अपने सर्वस्वकी आहुति करना ही उनकी विशेषता थी। इस कार्यसे उनके धर्म-पिता विशप केबल और मि० ग्लाडस्टन भी सर्वदा अप्रसन्न रहा करते थे, पर इन्होंने अपनी दृढ़ताको कभी नहीं छोड़ा।

मि० ग्लाडस्टनसे भी चरित्रनायककी बड़ी घनिष्ठता थी।

पूर्वपरिच्छेद्के पाठसे पाठकोंको पता लगा होगा कि मि० ग्लाड-स्टन इनको किस दृष्टिसे देखते थे। लार्ड रोजवरी भी इनके विश्वस्त मित्रोंमेंसे थे। लार्ड एलगिनसे भी इनकी मैत्री थी। वे ब्रूसके वंशमें उत्पन्न हुए थे, उनकी नसोंमें स्काच-रक्त प्रवाहित होता था—अतएव श्रीकारनेगीके साथ उनकी प्रगाढ़ मैत्रीका होना स्वाभाविक था। एलगिन चरित्रवान और कर्मठ पुरुष थे। भूतपूर्व भारतसचिव स्वर्गीय मि० मार्ले भी चरित्रनायकके अन्य-तम मित्रोंमेंसे थे। उनके सत्संगमें चरित्रनायकका बहुत समय व्यतीत हुआ करता था। प्रसिद्ध दार्शनिक हर्बर्टस्पेन्सरको चरित्रनायक अत्यन्त श्रद्धा और आदरके भावसे देखा करते थे। श्रीकारनेगी उन्हें अपना दार्शनिक गुरु समझते थे। सन १८८२ ई०में मि०स्पेन्सरके साथ इन्होंने लिवरपुलसे न्यूयार्कतक-की यात्रा की थी। लार्ड मार्लेने चरित्रनायकका परिचय मि० स्पेन्सरसे करा दिया था। फिर तो चरित्रनायकने अपनी नम्रता और बुद्धिमत्तासे दार्शनिक स्पेन्सरको अपना चिरमित्र बना लिया।

अमेरिकाके जितने अध्यक्ष श्रीकारनेगीके ऐश्वर्य्यमय दिनोंमें हुए थे, सबके साथ इनकी घनिष्ठता थी। प्रेसिडेन्ट हेरिसन, प्रसिद्ध राष्ट्रसचिव जान हे, प्रेसिडेन्ट लिङ्कन, सभी कारनेगीको सम्मानकी दृष्टिसे देखा करते थे।

यूरोपके भिन्न भिन्न राष्ट्रोंके सम्राटोंसे भी चरित्रनायककी घनिष्ठता थी। सम्राट एडवर्ड और जर्मन-सम्राट कैसर इनसे

मिलकर बहुत प्रसन्न होते थे। 'वीर सहायक कोष' स्थापित करनेके उपलक्ष्यमें उपरोक्त दोनों सम्राटोंने चरित्रनायकको बधाईके पत्र भेजे थे।

कैसरके सम्बन्धमें चरित्रनायकने अपना जो विचार स्थिर किया था, आज मित्रराष्ट्र उसके विरुद्ध मत स्थिर कर रहे हैं। श्रीकारनेगीसे भेंट होनेपर कैसरने इनको राष्ट्रोंमें शान्ति स्थापित करनेके लिये उद्योग करनेके कारण बहुत धन्यवाद दिया था। उसने अपने सम्बन्धमें भी कहा था कि मैं भी संसारकी शान्तिका परमप्रेमी हूं। मुझे यह जानकर अत्यन्त संतोष हो रहा है कि मेरे २५ वर्षके राज्यकार्य्यमें एक भी निर्दोष मनुष्यका रक्त नहीं बहाया गया।

वही कैसर गत महायुद्धका प्रधान नेता था। श्रीकारनेगीका दृढ़ विश्वास था कि कैसर एक महान् उद्देश्यको लेकर संसारमें आया है और वह अवश्य ही कोई ऐसा कार्य्य करेगा, जिससे उसकी कीर्ति अजर और अमर हो जायगी। मनुष्यके जीवनमें कैसा उलटफेर होता रहता है, कैसर इसका प्रत्यक्ष निदर्शन है। जो एक दिन अपने तर्जन-गर्जनसे यूरोपके राष्ट्रोंको कंपा देता था, वही कैसर आज हालैण्डमें वानप्रस्थ-जीवन व्यतीत कर रहा है। जिस कैसरको श्रीकारनेगी शान्तिका एक दृढ़ स्तम्भ मानते थे, उसी कैसरको, संसारके इतिहासमें, भीषणतम महायुद्धमें भाग लेना पड़ा और अन्तमें विफल मनोरथ हो एक छोटे राष्ट्रकी शरणमें जीवनके बाकी दिनोंको व्यतीत

करनेके लिये बाध्य होना पड़ा। महायुद्धकी खबर पाकर श्री-कारनेगी अत्यन्त दुःखित हुए थे। उन्होंने अपने आत्मचरितके अन्तिम पृष्ठपर लिखा है—

"आज मैं यह क्या परिवर्तन देख रहा हूं। संसार युद्धके नशेसे उथल-पुथल हो रहा है। मनुष्य जानवरोंकी तरह एक दूसरेका वध कर रहे हैं, पर मैं निराश नहीं हो सकता। मुझे दिखायी देता है कि कोई एक ऐसा शासक संसारके रंगमंचपर अवतीर्ण होगा, जो संसारमें शांति स्थापितकर अपना नाम अमर कर जायगा। जिस महापुरुषने पनामा कैनेलके झगड़ेमें अपने राष्ट्रका मुख उज्ज्वल किया था, वही विलसन आज अमेरिकाके राष्ट्रपतिका स्थान सुशोभित कर रहा है। प्रतिभाशालियोंके लिये कुछ भी असम्भव नहीं है। प्रेसिडेन्ट विलसनके कार्यको ध्यानसे देखते रहिये। उनकी नसोंमें भी स्काच-रक्त प्रवाहित हो रहा है।"

श्रीकारनेगीके अन्तिम उद्गार यही थे। राष्ट्रपति विलसनके सम्बन्धमें उन्होंने जो आशा की थी, वह पूरी नहीं हुई। विलसनने तो अपने जानते कुछ उठा नहीं रखा, पर इंगलैण्ड, फ्रान्स और इटलीके फन्देमें फंस जानेके कारण वे भी कुछ नहीं कर सके। उनके १४ सिद्धान्त केवल कागजपर ही लिखे रह गये। कुछ दिनोंके लिये संसारके छोटे छोटे राष्ट्रोंमें कुछ हलचल इससे अवश्य मची, पर फिर यह मामला ठंढा पड़ गया। भारतवर्ष भी विलसनके सिद्धान्तोंको बड़ी उत्सुकतासे देखता था, पर

लायड जार्जकी शैतानी चालने सब गुड़ गोबर कर दिया। भारतको 'रिफार्म' के लड्डू मिले हैं—जिनके खानेवाले और न खानेवाले दोनों पछता रहे हैं।

श्रीकारनेगीने सन् १६१६ ई० में परमधामकी यात्रा की। आज श्रीकारनेगी जीवित नहीं हैं, पर उनका नाम विश्वविख्यात हो रहा है। सत्य है—कीर्तिर्यस्य सजीवतिः।

अष्टादश परिच्छेद
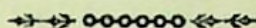
चरित्र-समीक्षा

Lives of great men all remind us,
We can make our lives sublime.

'महाजनो येन गतः सपन्थाः'

समाज और शासन-व्यवस्थाके अन्यायपूर्ण विधानके कारण आज संसारमें मनुष्योंकी स्थितिमें विकराल विभिन्नता दिखायी पड़ती है। कोई तो पैदा होते ही सोनेके झूलोंमें झूलता है और किसीको भूमिष्ट होनेके बाद बदन ढकनेके लिये एक चिथड़ा भी नसीब नहीं होता। उपयुक्त पुष्टिकर खाद्य और स्वास्थ्यकर रहन-सहनके अभावसे आज संसारके भिन्न भिन्न देशोंमें विशेषकर भारतवर्षमें जो दरिद्र नारायणके बिलखते लालोंको रोते-कलपते अकाल हीमें कालके विकराल गालमें जाना पड़ता है। इसको देखकर किस सहृदयका हृदय विदीर्ण नहीं हो जाता। निर्धन मनुष्योंके बालकोंको इस प्रतिद्वन्दितापूर्ण संसारमें विजय प्राप्त करनेके लिये योग्य-बननेके मार्गमें कितनी कठिनाइयोंको झेलना पड़ता है। इसका ज्वलन्त उदाहरण हमारे चरित्रनायकका ही अनुकरणीय चरित्र है। पर एक बात विचित्र अवश्य है। ईश्वरकी कृपासे

अथवा समाजकी वर्त्तमान अवस्थाके कारण जो लोग सब प्रकारके सुख साधनोंसे घिरे रहते हैं—शारीरिक मानसिक और आर्थिक उन्नति करनेके लिये जिनके मार्गमें किसी तरहका रोड़ा नहीं रहता, ऐसे भाग्यवान लोगोंको भी दरिद्र कुलोत्पन्न नरवीर जीवन-युद्धमें नीचा दिखा देते हैं। संसारमें प्रायः जितने महापुरुष हुए हैं, उनमें अधिकांशने अपने जन्मसे झोपड़ोंको ही पवित्र किया था। लक्ष्मीपात्र श्रीमानोंने भी संसारके रङ्गमञ्चपर अपनी श्रेष्ठता प्रतिपादित की है। हमारे प्रताप और बुद्धदेव राजवंशमें ही उत्पन्न हुए थे, पर शायद वे भगवान कृष्णके शब्दोंमें पूर्वजन्ममें योगभ्रष्ट होनेके कारण ही धनियोंके घरमें उत्पन्न हुए थे। अतएव पूर्व-संस्कारकी प्रबलताके कारण ऐश्वर्य्यने उनके जीवनकी सफलताके मार्गमें बाधा न पहुंचाकर सहायता ही पहुंचायी। अस्तु।

श्रीकारनेगीके चरित्रकी विशेषता उनके दरिद्र, पर धार्मिक माता-पिताके घरमें उत्पन्न होनेमें है। एक दरिद्र जुलाहेके लड़के होकर और किसी प्रकारकी स्कूली शिक्षा नहीं पाकर भी उन्होंने केवल दृढ़ अध्यवसाय और चरित्र-बलके कारण जैसी सफलता प्राप्त की, उसको जानकर किस चरित्रवान और उद्योगी बालकका हृदय आनन्द और उत्साहसे पूर्ण नहीं हो जायगा? चरित्रनायकका जीवन अध्यवसायी और परिश्रमशील नवयुवकोंको पुकार पुकारकर कह रहा है—"नवयुवको! इस जीवन-युद्धमें तुम आकस्मिक आपदाओं और कठिनाइयोंसे मत घब-

राओ। ईश्वर और आत्मामें पूर्ण विश्वास रखकर सब प्रकारकी विपत्तियोंको उपेक्षाकी दृष्टिसे देखते हुए पूर्ण उत्साहके साथ अपने कर्त्तव्य-पालनमें लग जाओ। परिश्रमसे मत डरो। किसी भी परिश्रमके कामको नीच दृष्टिसे मत देखो। जो लोग ईमानदारीके साथ अपना उदर-पोषण करते हैं, वे उन अभागोंसे सब प्रकार श्रेष्ठ हैं; जिनको अपने पापी पेटकी क्षुधा ज्वाला शान्त करनेके लिये और अपनी विषयवासनाओंकी तृप्तिके लिये निरीह प्राणियोंको सताना पड़ता है—दूसरोंको धोखा देना और ठगना पड़ता है। अपना आदर्श उच्चसे उच्च रखो और दिनरात उसीके साधनमें लग जाओ। संसारमें कोई भी कार्य असंभव नहीं है। जो काम औरोंने कर दिखाया है, वह तुम भी कर सकते हो। तुममें उसी परमपिताके तेजका निवास है, जिसके अपूर्व सृष्टि-कौशलसे संसारके सभी कार्य्य सुचारु रूपसे सम्पन्न हो रहे हैं। तुम अपनेको नीच समझकर हताश मत हो जाओ। दृढ़ अध्यवसायपूर्वक अपने कर्त्तव्य-पालनमें लग जाओ। कुछ परवाह नहीं, यदि तुम इस समय अवनतिके गहरे खन्दकमें पड़े हो। कमर कस लो और एक छलांग मारकर ऊपर उठ आओ। फिर तो तुम्हारे लिये रास्ता साफ है।"

गुलामीकी कालिमापूर्ण टीकासे कलंकित भारतवासियोंके लिये श्रीकारनेगीका चरित्र सभी दृष्टियोंसे अध्ययन करनेके योग्य है। अङ्गरेज़ी शिक्षाके पीछे अपना स्वास्थ्य और धन स्वाहा करनेवाले नवयुवक मध्य श्रेणीके निराशपूर्ण गृहस्थ,

असफल व्यवसायी, गुरुपनका अभिमान करनेवाले धर्म्मध्वजी साधु और पुजारी, प्लाटफार्मपर चिल्लानेवाले राजनीतिक नेता और धनमदसे मतवाले बड़ी बड़ी तोंदोंवाले भारतीय धनी, सभी करनेगीके जीवनसे यथेष्ट शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। कारनेगीने अपना जीवन एक जुलाहेके कारखानेमें नली भरनेके कार्य्यसे आरम्भ किया था। भारतमें लाखों जुलाहेके बच्चे कारनेगीके समान कच्ची उमरमें ही अपने पेटके लिये कमाने लग जाते हैं, पर उनमेंसे कितने कारनेगी बन सके हैं? भारतके तारघरोंमें लाखों नवयुवक दिनरात बाइसिकलपर चक्कर लगाया करते हैं, पर कितनोंने कारनेगीके समान उन्नतिके अवसरको अपनाया है। आज कितने तारबाबू क्रमशः उन्नति करते करते लखपती भी बन सके हैं? यह अवश्य है कि राजनीतिक पराधीनताके कारण भारतवासियोंकी दृष्टि उतनी ऊपर नहीं उठती, जितनी स्वाधीन देशोंके निवासियोंकी होती है। यहांके नवयुवक पढ़-लिखकर यातो डिप्टीगिरीके लिये लालायित रहते हैं या वकील बनकर अपने भाइयोंसे रुपये ऐंठनेमें ही अपनी उन्नतिकी पराकाष्ठा समझते हैं। यहांके व्यवसायी विदेशी वस्तुओंको अपने देश-भाइयोंके घर घर पहुंचा केवल दलालीका जूठन चाटनेमें अपने उद्योगकी इतिश्री समझते हैं अथवा जिनको भगवानने भी दो पैसा दिया है, वे शेयरमारकेटमें फाटकेबाजीकर दिनरात लखपती बननेका स्वप्न देखा करते हैं। यहांके अधिकांश धनी तो बस कुबेरके भण्डारीमात्र हैं। उनका धन

अपने देशवासियोंके कामके लिये नहीं है—वह केवल गौरांग महा प्रभुओंकी पूजा-अर्चनाके लिये, 'रायबहादुर' और 'सर' बननेके हेतु खर्च करनेके लिये तथा आत्म-नाशक द्रव्योंका क्रय करनेके लिये है। भारतमें धनिकोंकी कमी नहीं है—बहुतसे करोड़पति जैसे खाली हाथ आये थे, वैसे ही खाली हाथ लौट जाते हैं, पर अपने दरिद्र और असहाय भारतवासियोंके नामपर उनसे एक पैसा भी कम नहीं किया जाता। आज यदि भारतके खूंखार रुपयेवाले गरीबोंपर अत्याचार करनेके बदले अपनी थैली उनके कष्ट और अभावको दूर करनेमें लगाते तो रोना किस बातका था ? आज यदि लक्ष्मीपुत्र अपने खजानों-को मुक्तहस्तसे भारतीय राष्ट्रके लाभके लिये समर्पित कर दें तो राष्ट्रीय उन्नतिका प्रश्न अविलम्ब हल हो सकता है। श्रीकार-नेगीने अपने जीवनमें प्रत्यक्ष दिखला दिया है कि मनुष्य अपने परिश्रमद्वारा हीनावस्थासे किस प्रकार उन्नतिके शिखरपर आरूढ़ हो सकता है, किस प्रकार वह देश और संसारके उपयोगी व्यापारोंके द्वारा धनोपार्जन करता हुआ अरबपति बन सकता है और फिर किस प्रकार अपने संचित धनको स्वदेश, स्वधर्म और संसारके उपकारके लिये मुक्तहस्त हो दान दे सकता है।

केवल धन कमाना ही मनुष्य-जीवनका लक्ष्य नहीं है। धनोपार्जन अवश्य करना चाहिये, पर इसके लिये अपनी आत्माका बलिदान करनेकी आवश्यकता नहीं है। धन तो जीवन-यात्रा सुखमय बनानेका एक उपयोगी साधनमात्र

है। श्रीकारनेगीने इस लक्ष्यको सर्वदा ध्यानमें रखा था। एक दरिद्र-परिवारमें जन्म ग्रहण करनेके कारण श्रीकारनेगीके लिये द्रव्योपार्जन करना अत्यन्त आवश्यक कर्त्तव्य हो गया था, पर वे उतना ही उपार्जन करना अपना कर्त्तव्य समझते थे, जितनेसे उनकी जीवन-यात्रा भलीभांति संपादित हो सके। किसी समय मासिक २५ डालर उपार्जन करना ही वे अपने परिवारके व्यय-निर्वाहके लिये यथेष्ट समझते थे। इसके बाद भाग्य-लक्ष्मीके सुप्रसन्न होनेपर जब चरित्रनायकने करोड़ोंकी सम्पत्ति लाभ कर ली थी और उनकी वार्षिक आय १॥ लाख रुपयेसे ऊपर हो चुकी थी; उस समय उन्होंने जो स्मरणीय विचार लिख छोड़े थे, वे प्रत्येक आत्मोन्नतिके अभिलाषी मनुष्यके अध्ययनके योग्य हैं।

श्रीकारनेगीने लिखा था—"अभी मैं तैंतीस ही वर्षका हूं, पर मेरी आय ५० हजार डालर वार्षिककी हो गयी है। अब मैं दो वर्षतक केवल यही कार्य्य करूंगा, जिससे मेरी इतनी आय निश्चित हो जाय। इसके बाद मैं अधिक धन कमानेका नाम भी नहीं लूंगा। अपने खर्चके बाद मैं शेष आय अच्छे कार्य्योंमें व्यय किया करूंगा। दूसरोंको व्यवसायक्षेत्रमें सफलता प्रदान किया करूंगा। आक्सफोर्डमें जाकर पूर्ण शिक्षा प्राप्त करूंगा।

शिक्षाकी उन्नति और दरिद्रोंकी अवस्था सुधारनेकी ओर मेरा विशेष ध्यान रहेगा।...केवल धनोपार्जन करना मनुष्य-जीवनका सबसे निकृष्ट आदर्श है। इसमें मनुष्य-जीवनकी

शक्तियोंका जैसा अपव्यय होता है, वैसा किसीमें नहीं होता। मुझे ऐसे आदर्शोंको ध्यानमें रखना होगा, जिससे मेरा चरित्र उन्नत हो। यदि मैं बहुत अधिक दिनोंतक धनोपार्जनके लिये विह्वल बना रहूंगा तो मेरा सुधार असम्भव हो जायगा।"

कैसे दिव्य विचार हैं। एक महान् आत्माके हृदयके सच्चे उद्गार हैं। इन वाक्योंको चरित्रनायकने केवल अपने मार्ग-प्रदर्शनके लिये लिख छोड़ा था—लोगोंकी वाहवाही लूटनेके लिये नहीं। इसीसे श्रीकारनेगीके हृदयकी महानताका परिचय प्राप्त होता है। यद्यपि ३५ वर्षकी अवस्थामें चरित्रनायकने धनोपार्जन से हाथ नहीं खींच लिया और यदि उन्होंने ३२ वर्षतक अपनी पूरी शक्ति धन-सञ्चय करनेकी ओर ही लगायी, पर उनके दानोंकी विस्तृत तालिका देखनेसे किसी सहृदयको पता लग सकता है कि उन्होंने जो कुछ किया मानव-जगतके लाभके लिये ही किया। १ लाखकी वार्षिक आयवाले श्रीकारनेगी अपने धन-दानसे जनताका उतना हितसाधन नहीं कर सकते, जितना अरबपति कारनेगीने कर दिखाया। पर इतना तो अवश्य कहा जायगा कि अपने आवश्यक खर्चोंके बाद जो कुछ भी सम्पत्ति उन्होंने अपने अध्यवसायके कारण उपार्जित की, सब संसारके हितके लिये अर्पित कर दी। मन, वचन और कर्मकी एकता इसीको कहते हैं। यदि "मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्' सच्चे महात्माओंका लक्षण है तो श्रीकारनेगी, यथार्थमें महात्मा थे।

शिक्षाकी उन्नति और दरिद्र तथा असहायोंकी सहायताके लिये श्रीकारनेगीने जो कुछ किया, उसका पूर्ण उल्लेख गत परिच्छेदमें विस्तारपूर्वक किया जा चुका है। भारतके श्रीमानों-को चरित्रनायकसे यह शिक्षा अवश्य ग्रहण करनी चाहिये। पूर्व जन्मके सुकर्मसे हो अथवा समाज और राष्ट्रके अन्यायपूर्ण विधानोंके कारण हो या अपने परिश्रमके कारण हो—जो लक्ष्मीके पात्र हैं—जिनपर चञ्चला रमाने अपनी कृपा-दृष्टि फेर रखी है, उन्हें अब आंखें खोलकर अपने अभागे भाइयोंके लिये भी कुछ कर जाना चाहिये। आज भारतवर्षमें धनके अभावसे सैकड़ों लोक-हितकर कार्य रुके पड़े हैं। क्या अनाथ स्त्रियों और बच्चोंकी खबर लेनेवाला यहां कोई है? कलकत्तेकी सड़कोंपर घूमते हुए सैकड़ों अनाथ बालकोंकी दुर्दशाग्रस्त अवस्थाका हृदयद्रावक दृश्य देखकर किसका कलेजा मुंहमें नहीं आ जाता? अपने दुधमुंहे बच्चोंको गोदमें लेकर अभा-गिनी माताओंका विलख विलखकर "कोई एक रोटी दे दे बाबा"की आवाज सुनकर किसका पत्थरका कलेजा नहीं पसीज उठता—पर यहां कितने लखपतियोंने अपनी थैली इन अनाथों-की रक्षाके लिये खोल दी है। यह अवश्य है कि ये अनाथ बिल-कुल भूखे नहीं रह जाते, पर ईश्वरीय सृष्टिके निवासी इन अभागे जीवोंका केवल पेटकी ज्वाला शान्त करनेके लिये दिनभर विलखते रहना कैसा भयङ्कर दृश्य है? क्या किसी भारतीय धनकुबेरके कानोंतक हमारी यह आवाज पहुंच सकेगी?

और भी अनेक लोकहितकर कार्योंकी ओर लक्ष्मीपात्रोंका ध्यान आकृष्ट किया जा सकता है। भारतके प्रायः सभी बड़े बड़े नगरोंमें विशेषकर कलकत्तेकी सड़कोंपर सर्वत्र गलित कुष्ठसे पीड़ित असहाय आबाल-वृद्ध-वनिताको देखकर लोग नाक भौं सिकोड़ते हैं। कोई कोई सहृदय उनकी दुर्दशापर दयाद्रवित हो उन्हें अधेला पैसा दे भी दिया करते हैं, पर क्या इसीसे उन अभागे जीवोंका जीवन सुखमय हो जाता है? अपने पूर्वजन्मके दोषसे अथवा कुष्टपीड़ित माता-पिताके अनाचारसे ईश्वरीय सृष्टिके इन असहाय जीवोंको जो भयङ्कर यातना झेलनी पड़ती है—क्या उससे उनका उद्धार करनेका कोई उपाय नहीं है? आज ही एक भारतव्यापी सङ्गठन कुष्ठपीड़ितोंकी चिकित्सा तथा उनके भरण-पोषणकी यथेष्ट व्यवस्थाके लिये हो सकता है, पर इसके लिये पर्याप्त धन चाहिये। क्या भारतका कोई कारनेगी इस महान् पुण्यकार्यके लिये अपनी थैली खोलनेके लिये तैयार है? ऐसे कार्यके करनेसे बढ़कर धनका सदुपयोग दूसरा नहीं हो सकता है। इससे उन अभागे जीवोंका भी कल्याण होगा और उनकी छूतसे दूसरे मनुष्योंकी भी रक्षा हो सकेगी। समाजमें गलित कुष्ठके प्रचारको रोकनेका भी यही एक साधन है। हमें पूर्ण आशा है कि लोग इसपर ध्यान देंगे।

श्रीकारनेगीके आदर्शपर भारतमें भी 'वीर-सहायक कोष' 'शिक्षक-सहायक कोष' 'दरिद्र विद्यार्थी-कोष' 'अनाथ विधवा-सहायक कोष' आदिकी प्रतिष्ठा की जा सकती है। इससे

असंख्य दुर्दशाग्रस्त भारतवासियोंका जीवन सुखमय हो सकेगा। एक ऐसे कोषकी भी आवश्यकता है, जो मध्यवित्त गृहस्थोंको दुर्दशाके समय सहायता प्रदान कर सके। क्या हमारी पुकार भारतीय धनियोंके हृदयको दयाद्रवित करनेमें समर्थ हो सकेगी?

श्रीकारनेगी "वसुधैव कुटुम्बकम्" के आदर्शको माननेवाले थे। इन्होंने लोकहितकर जो कुछ भी कार्य किये, उन्हें किसी देश विशेषकी सीमाके भीतर परिमित नहीं रखा। चरित्रनायक संसारको सुखी देखना चाहते थे और इसके लिये विश्वव्यापी शान्तिको आवश्यक समझते थे। अन्तर्राष्ट्रीय शान्तिके उद्योगके लिये १ करोड़ डालरका दान ही इस बातका ज्वलन्त प्रमाण है। 'हेग शान्ति-मन्दिर' की प्रतिष्ठा भी इनके शान्तिप्रेमको चिर दिनोंतक संसारके राष्ट्रोंके सामने घोषित करती रहेगी। भूतपूर्व केसरसे चरित्रनायकको बड़ी आशा थी, पर गत यूरोपीय महायुद्धने उनकी अशालतापर हिमपात कर दिया। केसरके बाद विलसनकी ओर इनकी दृष्टि आकृष्ट हुई थी, पर यूरोपके कूट राजनीतिज्ञोंने किस प्रकार विलसनके प्रस्तावोंको रद्दीकी टोकरीमें डाल दिया, यह किसीसे छिपा नहीं है। चरित्रनायकका विश्वास था कि शीघ्र ही संसारके रङ्गमञ्चपर एक ऐसे महान् पुरुषका आविर्भाव होगा जो संसारमें शान्ति स्थापितकर अपना नाम अमर कर जायगा। इस सम्बन्धमें इस लेखकका आन्तरिक विश्वास है कि जगद्गुरु भारतवर्ष ही